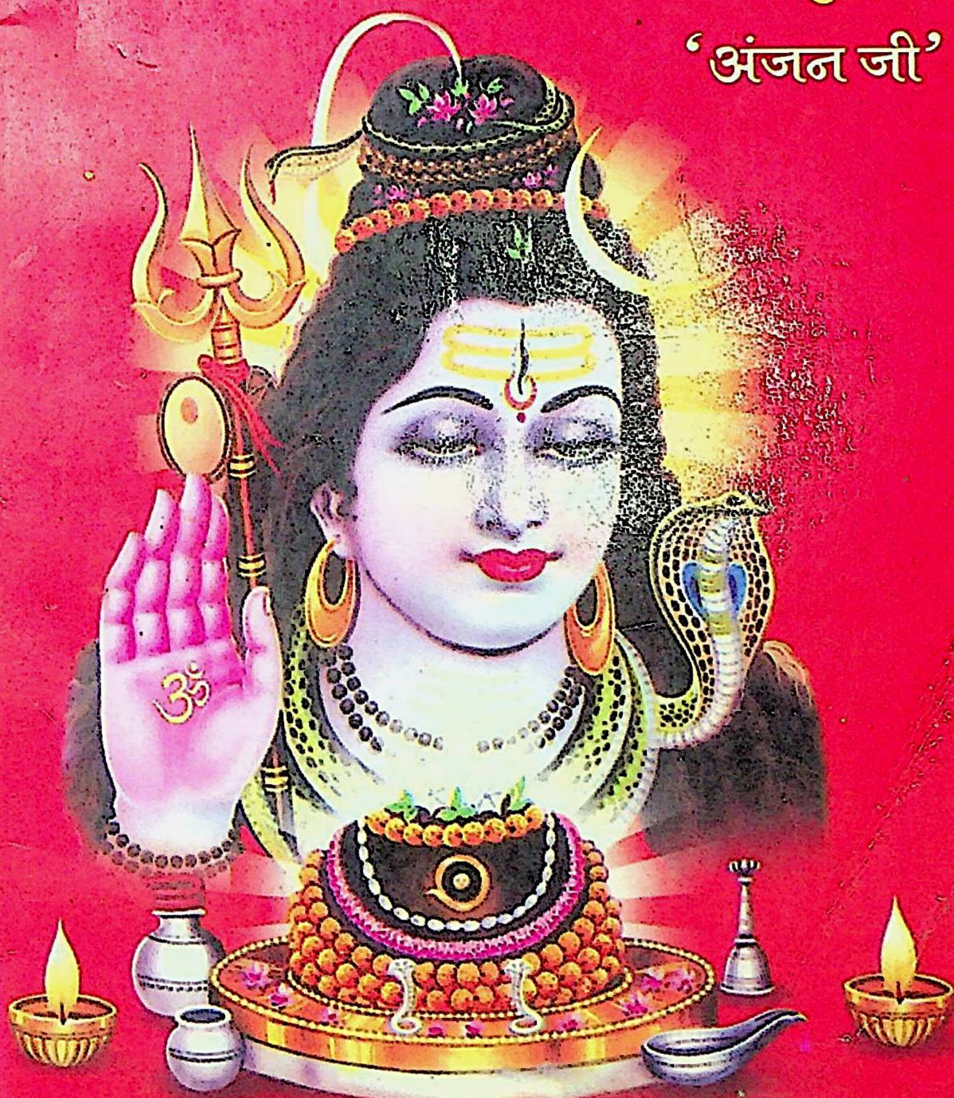
छब्बीसवाँ प्रकाशन

शिवोऽहम्

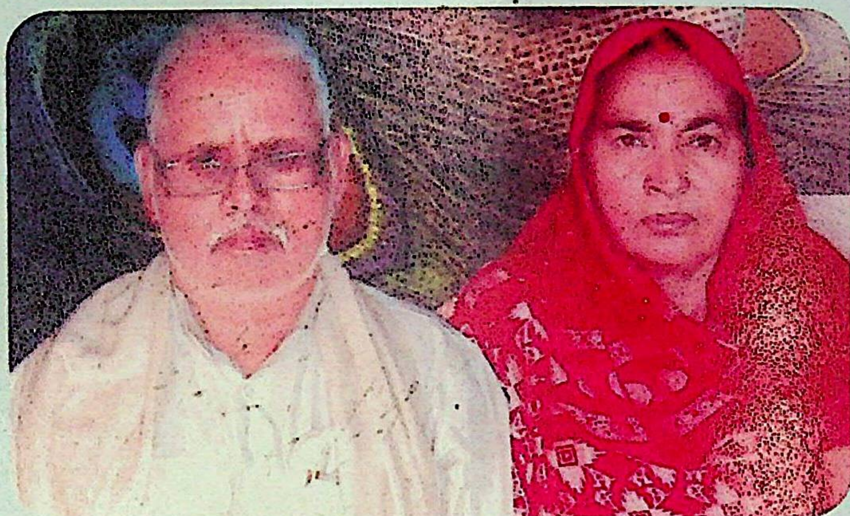
(शिवतत्त्व का काव्यात्मक संक्षिप्त भावानुवाद)

'अंजन जी'



प्रकाशक

तिवारी-दम्पति



माननीय मुखिया
पं० रमाशंकर तिवारी
ग्राम-बैकुण्ठपुर, कटेया, गोपालगंज, बिहार)

श्रीमती शान्ती देवी

कवि के उद्‌गार

चिरंजीव भातृज रमाशंकर,

तुमने जो बार-बार वचन दिया उसे सच कर दिखाया। मैं प्रसन्न हूँ - मेरा आशीर्वाद तुम्हारे परिवार के साथ हमेशा रहेगा। इस भ्रष्ट वर्तमान में जहाँ झूठ का महाजाल फैला है, उसमें भक्ति-काव्य शिवोऽहम् का प्रकाशन असंभव लग रहा था। तुमने इस अभिशप्त संग्रह को प्राणवन्त बनाया जिससे सच्चे शिव-भक्तों, गायकों और आचार्यों को किंचित लाभ भी होगा - तो कृतार्थ रहूँगा।

अन्त में तिवारी समुदाय ग्राम-बैकुण्ठपुर की धरती एवं सभी वर्गों की मंगल कामना करता हूँ - जो शिव तत्त्व में विश्वास रखते हैं -

"मंगलम् भवतु सर्वदा"

श्रावण - 2010

- अंजन जी

ॐ

सादर-समर्पित,

आचार्य देव,

पं० हरिदेव बाबा,

(भतसवां)

के लिए —

[illegible]

16/08/13

साभार-आधार

सहायक-ग्रन्थ

1. श्री शिव महापुराण-भाषा
लेखक - पं० बसन्तलाल व्यास
प्रकाशक - श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार
257-ए/2 कक्कड़ नगर, (दरियाबाद),
इलाहाबाद, सन् 1983
मूल्य : 60/- मात्र

2. श्री शिवपुराण (भाग 1+2)
सम्पादक : पं० श्रीराम शर्मा आचार्य
प्रकाशक : डॉ० चमन लाल गौतम
संस्कृति संस्थान
ख्वाजा कुतुब (वेदनगर) बरेली (उ.प्र.) 19८7
मूल्य : 16 रुपये प्रत्येक

3. शिव-पुराण (विशिष्ट संस्करण)
गीता प्रेस गोरखपुर (उ.प्र.) 273005
सम्वत् 2062
सम्पादक : हनुमान प्रसाद पोद्दार

4. शिवाङ्क (पाँचवा संस्करण)
सम्पादक - हनुमान प्रसाद पोद्दार
संयुक्त सम्पादक
चम्मन लाल गोस्वामी (एम.ए. शास्त्री)
गीता प्रेस, गोरखपुर (सम्वत् 2059)
मूल्य : 100/-

5. महान धर्म ग्रन्थों के सार-तत्त्व और सांसारिक गतिविधियों से प्राप्त अनुभव जन्य ज्ञान ।



ॐ नमः शिवाय !   ॐ नमः शिवाय !!   ॐ नमः शिवाय !!!



शिवोऽहम्

(शिवतत्व का काव्यात्मक संक्षिप्त भावानुवाद)





अंजन जी

शिवोऽहम्

(काव्य कृति - शिव तत्व विषयक)

(हिन्दी)

कवि :

अंजन जी

ग्राम- अमही बाँके (आस्था केन्द्रम्)

पो0- सोहनरिया, भाया- कटेया, जिला- गोपालगंज (बिहार)

प्रकाशक :

अंजन परिवार

तिवारी

कम्पोजिंग डिजाइन एवं प्रिंटिंग

तिवारी प्रिंटिंग प्रेस

कौशलेश नगर (एक्स.), सुन्दरपुर, वाराणसी

मो0 : 9415360393, 9451439690

प्रथम संस्करण :

श्रावण मास 2010

पुस्तक मिलने का पता :

1. मुखिया परिवार (तिवारी जी)
   ग्राम- बैकुण्ठपुर, कटेया, गोपालगंज (बिहार) 841437
2. आचार्य बजरंग कुमार चतुर्वेदी
   उपाध्याय परिवार, सभापति भवन
   नरिया (बी.एच.यू.) वाराणसी-221005

प्रकाशक व्यय : 175.00 रुपये मात्र

ॐ नमः शिवाय

न मे द्वेष रागो, न मे लोभ मोहो,
मदो नैव में, नैव मात्सर्य भावः।
न धर्मो, न चार्यो, न कामो, न मोक्षः,
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं, शिवोऽहम्॥



न पुण्यं न पापं, न सौख्यं न दुःखम्,
न मन्त्रो न तीर्थः, न वेदा न यज्ञाः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं, न भोक्ता,
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं, शिवोऽहम्॥



न मृत्युर्नशंका, न मे जाति भेदः,
पिता नैव मे नैव माता च जन्म।
न बन्धुर्नमित्रं, गुरुर्नैव शिष्यः,
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं, शिवोऽहम्॥

(श्री शंकराचार्य जी के "आत्मषटक" से)



कृतज्ञता ज्ञापन के साथ मंगल कामना

श्रद्धेय एवं प्रणम्य

महंथ बाबा प्रो0 वीरभद्र मिश्र जी संकट मोचन हनुमान मन्दिर, वाराणसी महंथ बाबा गौरी शंकर दास जी, साधु बेला (उदासीन आश्रय) भदैनी, महंथ बाबा पं0 शिवभूषण त्रिपाठी जी दशाश्वमेध विश्वनाथ मन्दिर, महंथ बाबा आचार्य डॉ0 विश्वनाथ पाण्डेय जी, काशी विश्वनाथ मन्दिर (बी.एच.यू.)

आत्मीय परिवेश से सम्बद्ध

स्वामी अखिलानन्द शास्त्री, आचार्य डॉ0 पंकज शुक्ला, आचार्य डॉ0 धनञ्जय त्रिपाठी (आप इस संग्रह के प्रकाशन में परोक्ष रूप से सक्रिय भी रहे हैं)। आचार्य डॉ0 अनिल चौबे, आचार्य पुरन्दर जी।

परम प्रिय पौत्रतुल्य डॉ0 भानु प्रताप मिश्र जी एवं परम प्रिय वेद मूर्ति आचार्य व्यास पाण्डेय जी।

श्री रविकान्त उपाध्याय एवं 'मौसी' शव्द से अलंकृत श्रीमती कमलावती उपाध्याय, सभापति भवन, नरिया (बी.एच.यू.) जिनके साथ पारिवारिक आत्मीयता है - मंगलकामना।

अक्षर छज्जा एवं कम खर्च में कम समय में आकर्षक रूप देने वाले तिवारी प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री हरि सहाय तिवारी एवं प्रेस के कार्मिकों के प्रति मंगलकामना।

विशेष आभार

मेरा समस्त जीवन शिक्षा से जुड़ा रहा है - शिक्षण शाखा और निरीक्षी-शाखा में विभिन्न पदों पर कार्यरत रहते हुए ईमानदारी, सजगता एवं तत्परता से कार्य सम्पादन किया है - इसलिये इस भक्ति-काव्य संग्रह शिवोऽहम् के माध्यम से आप सबों की मंगलकामना की जाती है।

माननीय जिला शिक्षा पदाधिकारी, गोपालगंज, समस्त पदाधिकारियों, कार्यालय सहायकों, शिक्षकों, शिक्षिकाओं, छात्रों-छात्राओं के साथ ही विशेष रूप से माननीय जिला शिक्षा अधीक्षक डॉ0 राकेश कुमार चौधरी जी की श्री मुनीबाबू, जो मेरे कार्यालय के प्रधान-सहायक के साथ-साथ मेरे सच्चे मित्र भी रहे हैं कि मंगलकामना की जाती है।

अन्त में

श्री श्रीकांत पाठक सोहनरिया, पं0 योगेन्द्र मिश्र जी, अघैला, श्री विनोद पाण्डेय जी जिगना एवं पं0 विनोद पाण्डेय जी मथौली के लिए आशीर्वाद जो मेरे वर्तमान में कवि के प्रति श्रद्धा एवं समर्पण का भाव रखते हैं।

'मंगलम् भवतु सर्वदा'

श्रावण 2010

अंजन जी

ॐ नमः शिवाय

आत्म विश्वास

आत्मकथ्य

भोलेनाथ ! आप तो वैद्यनाथ भी कहे जाते हैं । यानी वैद्यों के भी वैद्य । आप बिना नब्ज पकड़े, बिना आला लगाये तन-मन के रोगों को पहचान लेते हैं, और मात्र एक फूँक मार कर रोग-मुक्त कर देते हैं । इस बात का खुलासा काशी-प्रवास में ही हुआ, जब मैं जीवन से निराश होकर आपकी काशी की शरण में गया । मेरे जैसा रोगी आप जैसा वैद्य - गजब का संयोग था । काशी नगरी-रहस्यों की पोटली है जहाँ शरीरी और अशरीरी आत्माओं का अपना-अपना आयाम है । आप किस रूप में, कब, कहाँ रहेंगे । यह आपके सिवा कोई नहीं जानता । जान भी कैसे सकता है, जब ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्रादि देवता भी लाखों प्रयत्नों के बाद भी सम्पूर्ण रूप में आपको नहीं जान सके तो मेरे जैसे तुच्छ, कामी, छली, लोभी, मोहग्रस्त, रोग-ग्रस्त व्यक्ति की तो बात ही मत पूछिए ।

आप विश्वेश्वर, महेश्वर, आदि देव महादेव, विश्वनाथ, कैलाशपति, महाकालेश्वर, महाकाल, सच्चिदानन्द, त्रिभुवनपति, सदाशिव, प्रलयंकर, अभयंकर, त्रिपुरारी, भवभयहारी, दीनबन्धु, जगदीश आदि अनेक रूपों, नामों, गुणों से विख्यात हैं । कल्प पर कल्प आते-जाते रहते हैं । क्या मजाल कि कालचक्र आपको विस्थापित कर दे ? काल तो आपका सेवक है । जन्म-जरा-मृत्यु से आप परे हैं । आप की इच्छा होती है सृष्टि होती है, आप की इच्छा हुई महाप्रलय उपस्थित हो गया और सारा का सारा दृश्य लोक शून्य में विलीन हो गया ।

शक्ति (पार्वती) आप की अर्द्धांगिनी हैं । आप ही शिव हैं, आप ही शक्ति हैं । अर्द्धनारीश्वरम् आप ही हैं । जब तक रूप गर्विता पार्वती अपने अहं भाव में स्थित है, तब तक आप भूलकर भी दृष्टिपात तक नहीं करते । आप-अखण्ड समाधि में लीन हैं । आप के पास न तो आसक्ति है; न मन में कोई आकर्षण है; न कोई लोभ-मोह है । काम तो आपके तीसरे नेत्र के खुलते ही नष्ट हो जाता है, जल जाता है । वे सती जो पुनर्जन्म लेकर पार्वती रूप में हिमालय के घर में आई हैं - जया, विजया सखियों के साथ आप की निरन्तर सेवा



में लगी हुई हैं - मगर वाह रे मेरे भोले नाथ ! आप आँख उठाकर देखते तक नहीं, आखिर आप हैं तो परम विरागी। इस संसार के भौतिक सुखों से क्या लेना-देना। गंगा तो आप को शीतलता देती ही रहती है। हिमालय की दाँत हिला देने वाली ठंडक भी आप को बिचलित नहीं कर सकती। हे मसानवासी, भस्म लेपी शिव ! आपको तो अच्छे भोजन-वस्त्र की भी इच्छा नहीं होती। सवारी के नाम पर एक बूढ़ा बैल है। बहुत हुआ तो हाथी की छाल या बाघ का चर्म पहन लिये। आप तो सिर्फ देना जानते हैं, किसी से कुछ चाहते ही नहीं। देते समय आप सत्पात्र-कुपात्र का भी ख्याल नहीं करते, जिसका बुरा परिणाम आप ही को भुगतना पड़ता है।

शक्ति जब तक अहं भाव में हैं तब तक आप निर्विकार मुद्रा में रहते हैं। धन्य हैं आप, और आदिशक्ति जगदम्बा माता भी धन्य हैं जो आप के सिवा और किसी को वर रूप में वरण नहीं कर सकती। आपको वर रूप में वरण करने के लिए उन्हें अहं का त्यागकर कठोर तपस्या करनी पड़ती है। देवों को जब तारकासुर का दमन चक्र सत्ताच्युत कर देता है और उनके हव्य-गव्य पर भी संकट आ जाता है तो आप की शरण में जाकर स्तुति करनी पड़ती है। आप तो आशुतोष, औढरदानी स्वरूप भी हैं। वर बनकर शक्ति (पार्वती) का पाणिग्रहण करते हैं और आत्मांश कार्तिकेय (स्कन्द) के रूप में आसुरी शक्ति का संहार करते हैं। ऐसी स्थिति कल्प-कल्प में आती रहती है। जब-जब पाप का राज्य होता है, तब-तब आपको सद्धर्म की रक्षा करने के लिए निराकार से साकार रूप धारण करना पड़ता है।

हमारा वर्तमान भी पाप, कदाचार, भ्रष्टाचार, हिंसा, अपहरण, लूट, खून-खराबा, शोषण, सत्ता लोलुपता और धर्म-क्षय की ओर तेजी से बढ़ता जा रहा है। अमेरिका, ब्रिटेन, सोवियत रूस, चीन, जापान, फ्रांस, जर्मनी जैसे अनेक देशों में शक्ति (धन) है, मगर शिव तत्त्व समाधिस्थ है। शक्ति (धन, बल) के प्राबल्य ने तरह-तरह के लोक संहारक अस्त्र-शस्त्रों को पैदा कर दिया है। जहाँ-जहाँ शक्ति है, वहाँ-वहाँ अशान्ति, हिंसा, शोध-प्रतिशोध, घात-प्रतिघात, स्पर्धा और भय-आशंका की दानवी लीला ताण्डव कर रही है। शिव-शक्ति का मिलन नहीं हो पा रहा है। शक्ति के पास अहं है तो शिव वरण नहीं करेंगे, नतीजा होगा महाप्रलय। लग रहा है जिस तीव्र गति से सारा



विश्व महाविनाश की ओर बढ़ रहा है - परिणाम होगा महाप्रलय। इसका संकेत आए दिन होने वाली मृत्यु की दृश्यावली से मिल रहा है। वही इतिहास दुहराया जा रहा है। आज का आदमी, नितान्त धन के इर्द-गिर्द केन्द्रित हो गया है। धन तो हमेशा गलत रास्ते से ही एकत्र होता है। अनैतिकता का राज्य है। आदमी ऊपरी दिखावे से भले ही रुचिकर लगे, मगर उसका अन्तर मन अधम भाव से लिप्त है।

हे औढरदानी बाबा भूतनाथ ! मैं तो कोई सिद्ध साधक, संत या तपस्वी नहीं कि प्रकृति के रहस्यों को पहचान सकूँ। मैं तो नश्वर-शरीर में हूँ। अनेक तरह के भौतिक-विकारों से ग्रसित हूँ। सुना है आप सहज दया दिखाते हैं और बिना मांगे भी मन चाहा दे देते हैं। इसलिए आपको मानता हूँ और आप में ही मन रमाये रहता हूँ।

कुछ समय पूर्व मैंने देवी-महाभागवत का हिन्दी पद्यमय संक्षिप्त भावानुवाद किया - तभी से मन में एक छटपटाहट सी पैदा हो गई कि अपने भोले बाबा के तत्त्व के सम्बन्ध में कुछ लिखूँ। कारण था कि शक्ति बिना शिव के आधी अधूरी रह जाती। जिस तरह शिव बिना शक्ति के शव हो जाते हैं, उसी प्रकार शक्ति बिना शिव के संहारिका हो जाती है। विश्व में सुख और शान्ति तभी आती है जब शक्ति-शिव दोनों का सामञ्जस्य हो।

हे आशुतोष सर्वव्यापी शिव ! आपके गूढ़ अगम रहस्यों के बारे में कुछ लिखने की धृष्टता मैंने की। यह सोचकर कि मेरी अपात्रता जानकर भी आप अपने स्वभाव वश कृपा जरूर करेंगे। चूँकि मेरा सारा परिवार आप ही के अंश से विस्तारित है, आप ही विभिन्न रूपों में इस परिवार में हैं। शक्ति और शिव ही विभिन्न रूपों में परिलक्षित हो रहे हैं। क्षमायाचना सहित यह प्रार्थना है कि अपनी अहैतुकी कृपा प्रदान करें। यह लगे कि मैंने कोई गलत काम नहीं किया है तो अन्धकार में मेरे भटकते हुए मन को दिव्य-प्रकाश से आलोकित करने की कृपा करें। अन्त में आपके दोनों रूपों - "भवं भवानी सहितं नमामि" को बार-बार प्रणाम है।

ॐ नमः शिवाय

अंजन जी

आस्था केन्द्रम
अमही बाँके, कटेया, गोपालगंज (बिहार)

विषय-सूची





ॐ नमः शिवाय

समर्पण



हे देवाधिदेव महादेव शिव जी -

"तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर।

यादृशोऽसि महादेव, तादृशाय नमो नमः॥"

प्रभो ! हमारा कल्याण किसमें है और अकल्याण किसमें है - हम इसका निर्णय करने में असमर्थ हैं। इस तत्त्व को समझने की सामर्थ्य हममे नहीं है। आप क्या हैं ? कैसे हैं ? यह भी हमें मालूम नहीं, उसे भी हम नहीं जानते ! आप जो कुछ भी हों, जैसे भी हो आप को प्रणाम है, आप भक्ति मार्ग पर चलने वालों को अपनी प्रीति दिखाते हैं। मुझे तो भक्ति का ढंग भी नहीं है। इतना विश्वास है कि आप सहज दयालु और औढर दानी हैं - तो मेरी अपात्रता और धृष्टता को क्षमा करके अपनी कृपा दिखायेंगे। यह संग्रह कैसा बन पड़ा है - वह तो पाठकों और शिवभक्तों के ऊपर सौंप रहा हूँ - मगर यह प्रार्थना बार-बार जरूर करना चाहता हूँ कि इसके प्रकाशन, प्रचार और प्रयोग मे जो भी महान् लोग सहयोग करे, उनपर दया कीजिए। अगर ऐसा लगे कि मैंने श्रद्धा-निष्ठा, आस्था और भक्ति पूर्वक बोधगम्य हिन्दी गीतों के माध्यम से यथाज्ञान आपकी महिमा का गुणगान किया है तो मेरे जैसे अधम, कुटिल, अज्ञानी को अपनी शरण दीजिए। "थोड़ा लिखना ज्यादे समझना।"

आपका चरण सेवक

अंजन जी



सूक्ति-सुधा

(1)

यस्य यस्य पदार्थस्य या या शक्तिरूदीरिताः ।
सा सा सर्वेश्वरी देवी, स स सर्वो महेश्वरः ।।

(2)

अधमा धनमिच्छन्ति, धनं मानं च मध्यमा ।
उत्तमा मानमिच्छन्ति, मान एव सतां धनः ।।

(3)

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च
नमः शंकराय च मयस्कारय च
नमः शिवाय च शिवतराय च
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धिमहि
तन्नो रुद्र प्रचोदयात् ।

(4)

असारे खलु संसारे, सारमेतच्चचष्टयम् ।
काश्यांवासः सतां संगो गङ्गाम्भः शिवपूजनम् ।।

(5)

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका ।
पुरी, द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिका ।।

(6)

सागरो यदि शुष्येत् क्षीयेत् हिमवानपि ।
मेरू मन्दर शैलाश्च श्रीशैलो विन्ध्य एवं च ।
चलन्त्येते कदाचिद्वै निश्चलं हि शिवव्रतम् ।।

(स्कन्द पुराण)



(7)

कीटो भ्रमर योगेन, भ्रमरो भवति ध्रुवम् ।
मानवः शिव योगेन शिवो भवति निश्चितम् ।।

(8)

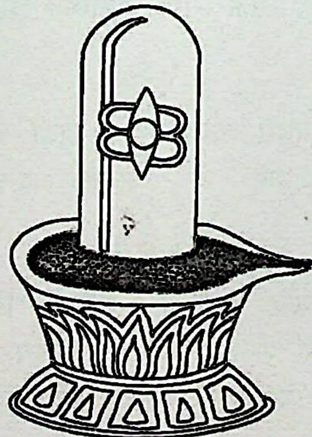
आवाहनं न जानामि, नैव जानामि पूजनम् ।
विसर्जनं न जानामि, क्षम्यतां परमेश्वर ।।

(9)

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः ।
बान्धवा शिव भक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ।।

ॐ नमः शिवाय







ॐ नमः शिवाय

वन्दना प्रकरण

चलते रहिए, जपते रहिए, शिव-शिव आठो याम,
शिव की कृपा से बन जाते हैं - सारे बिगड़े काम,
ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय ।

दया सिन्धु है, दीन बन्धु है, बाबा औढर दानी,
निश्छल मन से नाम लीजिए, भोले संग भवानी,
ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय ।

आदि देव हैं, महादेव हैं, आशुतोष कहलाते,
हर-हर गंगे, हर-हर गंगे, कहकर लोग नहाते,
ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय ।

कृपा करो देवाधिदेव, मैं शरण में तेरी आया,
पाप-ताप से जला जा रहा, कर दो अपनी छाया,
ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय ।







ॐ नमः शिवाय

प्रेम से बोलो नमः शिवाय ।
बोलो, बोलो नमः शिवाय ।।

जय शिव शंकर गंगाधर, जय-जय हे अविनाशी,
जगन्नाथ जय, वैद्यनाथ जय, विश्वनाथ जय काशी,
जयति चन्द्रधर, नागकंठ जय, जय कैलास निवासी,
औढरदानी आशुतोष जय, जय-जय घट-घट वासी,
गंगाजल से मन को धो लो, नमः शिवाय ।
प्रेम से बोलो नमः शिवाय ।। बोलो-बोलो.......

गौरी शंकर, जय महेश जय, जय-जय हे त्रिपुरारी,
जय त्रिनेत्र जय, जय त्रिशूलधर, जय हे जय असुरारी,
जय उमेश जय, जय प्रलयंकर, जय हे अलख विहारी,
कालजयी जय, विष पायी जय, जय-जय भव-भय हारी,
नयन तीसरा अब भी खोलो, नमः शिवाय ।
प्रेम से बोलो नमः शिवाय ।। बोलो-बोलो.......

पर दुख हर्त्ता, पालन कर्त्ता, जय हे परम विरागी,
भस्मीभूतम् जग-सुख सम्पत्ति लोभ, मोह, छल त्यागी,
आत्म तुष्ट शिव सहज दयामय, परहित सुख अनुरागी,
दुष्ट निकंदन, जय दुःख भंजन, योगी शिव वैरागी,
भक्ति बीज को मन में बो लो, नमः शिवाय ।
प्रेम से बोलो नमः शिवाय ।। बोलो-बोलो.......

कलि कुल मर्दन, अभय चिरन्तन, जय त्रिकाल बिजेता,
जय सर्वात्म-प्रेम के पोषक तप, दम, नियम प्रणेता,
डमरूधर जय, नटवर नागर, लीलाधर अभिनेता,
बिना लिये सब कुछ दे देता, शिव हैं सच्चे नेता,
शिव-स्वरूप पहले तुम हो लो, नमः शिवाय ।
प्रेम से बोलो नमः शिवाय ।। बोलो-बोलो.......





ॐ नमः शिवाय

नमन

भोले शंकर को कर लूँ नमन ।
शक्ति रूपा को अर्पित है मन ।।

औढरदानी हैं भोले भवानी जहाँ,
दोनों आँखें हैं, काँवरि भर पानी यहाँ,

अक्षरों के चढ़ाऊँ सुमन ।
भोले शंकर को कर लूँ नमन ।। शक्ति रूपा को.....

भस्म लेपे, अडिग ध्यान करते हैं शिव,
खालीपन में भी वरदान भरते हैं शिव,

दूर करते हैं मन की तपन ।
भोले शंकर को कर लूँ नमन ।। शक्ति रूपा को.....

नाम अन गिन गुणों के शिव आगार हैं,
सारे जग को लुटाते, अतुल प्यार हैं,

आते जो भी हैं, शिव की शरण ।
भोले शंकर को कर लूँ नमन ।। शक्ति रूपा को.....

मैं व्यथाओं के बीहड़ में हूँ आ गया,
मेरे भोले करो, दीन पर कुछ दया,

अंजन रच दो हैं प्यासे नयन ।
भोले शंकर को कर लूँ नमन ।। शक्ति रूपा को.....





ॐ नमः शिवाय

जो भी शिव की शरण में आया, उसका बेड़ा पार हुआ ।
शिव का जिस दिन कोप हो गया, दुष्टों का संहार हुआ ।।

एक बार भी सच्चे मन से,
जिसने शिव को नमन किया,
शिव शिव, नमः शिवाय
हृदय से जिसने शिव का भजन किया

आशुतोष की कृपा हो गई, विघ्नों से उद्धार हो गया ।।

नहीं चाहते भोले बाबा-
सुख, सम्पत्ति अनमोल रतन,
उन्हें चाहिए पावन मन का-
चिन्तन पावन और मनन ।

कल्प-कल्प के आदिदेव हैं, जब-जब यह संहार हुआ ।।

गाल बजाने वालों पर भी
खुश होते औढर दानी;
मनोकामना पूरी करते,
ऐसे हैं उदार दानी,

नीच-ऊँच के भेद न करते, सब पर निश्छल प्यार हुआ ।।

नाग कंठ में; चन्द्रभाल पर-
जटा मध्य गंगा धारा ।
जीव मात्र जो इस धरती पर,
उनको प्राणों से प्यारा ।

तीन नयन में, अंजन मन से बार-बार श्रृंगार हुआ ।।





ॐ नमः शिवाय

पाप बढ़ने लगा,
ताप चढ़ने लगा,
शिव जी, इस दीन पर कुछ कृपा कीजिये ।
अपनी गंगा की धारा, बहा दीजिये ।।

मैं हूँ असहाय, कोई सहारा नहीं,
पड़ता मुझको दिखाई किनारा नहीं,
आ गया हूँ शरण,
शक्ति हो गई क्षरण,
आप अपना समझकर, उठा लीजिए ।। अपनी गंगा......

उठ गया इस धरा पर से विश्वास है,
आग है लग गई, जलता आकाश है,
उठ रहा है धुँआ,
अब मैं जाऊँ कहाँ,
जो जलन है, तपन है, बुझा दीजिए । अपनी गंगा......

आप सुनते हैं भक्तों की दारुण व्यथा,
लोग कहते, सुनते हैं, शिव की कथा,
औढरदानी है शिव,
स्वाभिमानी है शिव,
आँसुओं की है गंगा, नहा लीजिए । अपनी गंगा......

चाहते हैं नहीं आप सुबरन-रतन,
सिर्फ तन है समर्पित, है अर्पित सुमन,
आप के सब भुवन,
अर्पित अंजन नयन,
देर होने लगी, अब रचा दीजिए । अपनी गंगा......





ॐ नमः शिवाय

जय शिव शंकर जय महेश शिव
आपकी अद्भुत माया,
अब तो कृपा करो अभयंकर,
शरण आपकी आया ।

जय त्रिलोकपति, जय भुवनेश्वर,
जय-जय हे अबिनाशी,
आशुतोष, जय औढरदानी,
जय कैलास-निवासी,

त्रिविध ताप हर, महादेव हर,
कर दो अपनी छाया ।।

भक्ति भाव का ढंग नहीं है
पता न पूजा अर्चन,
भजन-मनन कुछ ज्ञात नहीं है-
ज्ञान नहीं है कीर्त्तन

हवन-हव्य कुछ साथ न मेरे,
रिक्त हस्त मैं आया ।

भेद न करते साधु चोर का
सब पर प्यार लुटाते,
जो भी आते शरण आपके
मन चाहा पा जाते ।

जिन आँखों में आप हैं बसते
अंजन सुखद रचाय ।





ॐ नमः शिवाय

शिवोऽहम (मैं शिव हूँ)

मैं शिव हूँ, सारा वसुधा का कल्याण किया करता हूँ,
जो भी आता है शरण, अभय वरदान दिया करता हूँ,

कोई भी अपना और पराया नहीं यहाँ,
जो भी याचक बन आ जाता है द्वार मेरे,
मैं नहीं भेद करता सत्पात्र-कुपात्र कभी,
कुछ रंग-वर्ण के नहीं कभी आधार मेरे,
औरों के हित के लिये सदा विषपान किया करता हूँ ।।1।।

जब भी अधर्म की आँधी चलने लगती है,
पुण्यों की धरती धू धू जलने लगती है,
जब कदाचार की हद हो जाती धरती पर,
कैलास पुरी की बर्फ पिघलने लगती है,
जब धैर्य डोलता मैं अनुमान किया करता हूँ ।।2।।

शंकर से प्रलयंकर बनकर हुंकार भरूँ,
ताण्डव करता हूँ, दुष्टों का संहार करूँ,
तब धरा डोलती, आसमान थर्राता है,
ऐसा अवसर जब कल्प-कल्प में आता है,
तब-तब जगदम्बा का फिर से आह्वान किया करता हूँ ।।3।।

मैं एक अयाची हूँ, कोई भी चाह नहीं,
मुझको रोके धरती पर कोई राह नहीं,
पर्वत-सागर में भी कोई सामर्थ्य नहीं,
कोई अनमोल सुधा मेरा है अर्घ्य नहीं,
अपनी गंगा की धारा में स्नान किया करता हूँ ।।4।।

मैं चिता भस्म का प्रेमी अपने आप मगन,
देता कोई जब भाँग धतूरा का भोजन,

मैं रमता योगी, अपना है मेरा चिन्तन,
होकर समाधि में स्थित करता सदा मनन,
मैं स्थिर-चित्त हो, ध्यान किया करता हूँ ।।5।।

मैं कालजयी हूँ, समाधिस्थ मतबाला हूँ,
मैं कालकूट हूँ, महाकाल हूँ, काला हूँ,
कोई भी स्वार्थ या लोभ नहीं अन्तर मन में,
मैं अनुपमेय हूँ, आदि देव हूँ, त्रिभुवन में,
मैं हूँ त्रिशूल असमय शर का संधान किया करता हूँ ।।6।।

कुछ अधम कोटि के भक्तों से है कष्ट हुआ,
जब आशुतोष का है स्वरूप यूँ नष्ट हुआ,
कोई रावण, कोई भस्मासुर जब मिला कभी,
मैं काँप गया, मेरा अन्तर मन हिला तभी,
फिर भी स्वभाव है, जीवन-दान दिया करता हूँ ।।7।।

जो गाल बजाता है, वह भी पा जाता है,
जाता है खाली नहीं, द्वार जो आता है,
देना है अपना काम, मैं धर्म निभाता हूँ,
मैं बेल के पत्ते ही दिनरात चबाता हूँ,
मैं ही संसार बनाता फिर अवसान किया करता हूँ ।।8।।

कलियुग है, कामी, कुटिल, छली आसक्त यहाँ,
बदनाम किया करते हैं मेरे ही भक्त यहाँ,
औढरदानी हूँ, भक्तों पर ढल जाता हूँ,
करता हूँ सबका भला, बुरा फल पाता हूँ,
अंजन रचता हूँ, आँखों का सम्मान किया करता हूँ ।।9।।





ॐ नमः शिवाय

जब भी हो फुर्सत, ये काम कीजिए,
शिव-शिव-शिव शंकर का नाम लीजिए,
कुछ नहीं चाहिए उनको धरती का धन,
भोला है; चाहिए उनको भोला-सा मन,
शिव नहीं चाहते कोई सुवरन वसन,
रमता योगी है; जाने ये तीनो भुवन,
मन से शिव का भजन सुबह-शाम कीजिये ।।
शक्तिरूपा भवानी सदा संगिनी,
भैरवी है सुनाती सदा रागिनी,
भूत-प्रेतों की टोली जहाँ नाँचती,
श्रृंगी-भृंगी है सेवक दिवा यामिनी,
सच्चे मन से नित शिव को प्रणाम कीजिये ।।
दीन-दुखियों पर करते हैं शिव जी दया,
खाली लौटा नहीं जो शरण में गया,
गाल जो भी बजा देता पा जाता है,
टूटे जीवन को कर देते क्षण में नया,
नेक नीयत रहे, मत खाम कीजिये ।।
पूत गणनायक करते हैं सबका भला,
पूत कार्तिक हटाते हैं जग की बला,
पूरा परिवार परहित में तत्पर रहे,
क्यों न अब भी रे पगले तू शिव-शिव कहे,
जीवन दुर्लभ न भूले बदनाम कीजिये ।।
हर महादेव, हर गंगे कहता है जो,
भक्ति धारा में सच्चे मन बहता है जो,
रीझ जाते हैं शिव गंगाजल जब चढ़े,
दिव्य नयनों से किरणों का रथ जब बढ़े,
रच के अंजन भजन आठोयाम कीजये ।।





ॐ नमः शिवाय

बात मान लो

बात मान लो रावण तुम तो सब शास्त्रों के ज्ञाता हो,
प्रकृति तेरी दासी है, तुम अहं चूर मद माता हो,
पीकर मदिरा, ज्ञान शून्य हो, जो अभक्ष्य तुम खाते हो,
पथ अनीति का पकड़, बहक कर कहाँ-कहाँ तुम जाते हो,

मुनि पुलस्य की कीर्ति पताका का है तुमने नाश किया,
काम, क्रोध, छल, कपट लोभ का तुमने है अभ्यास किया,

बात मान लो, पतन शीघ्र ही लंका का हो जाएगा,
अपने कुत्जिल कार्मे का फल, देर न होगी, पाएगा,

अभी सोच लो शिव हूँ जब प्रलयंकर मैं बन जाऊँगा,
महाकाल बन ताण्डव करके मिट्टी तुम्हें मिलाऊँगा,
आदि शक्ति जगदम्बा जिस दिन लंका छोड़ के जायेंगी,
तेरी सारी शक्ति मंडली छिन्न-भिन्न हो जायेगी,

तामस बल का कहाँ भरोसा जिसका है अभिमान किया,
क्या होगा परिणाम अन्त में नहीं कभी अनुमान किया,

कुल-मर्यादा, वंश-वृक्ष जब पत्तों-सा उड़ जाएगा,
हाथ पसारे जाते-जाते धरती से पछताएगा ।।

ऐ भस्मासुर, भक्ति देखकर मन चाहा वरदान दिया,
गलंत भावना से तुमने जो मेरा है अपमान किया,
यह मेरा भोलापन ही था जो तुमपर विश्वास किया,
सहज स्नेह वश एक सुखद धरती स्वर्णिम आकाश दिया,

मुझे भस्म करने जो दौड़ा, अपना डेग उठाया है,
सोच ले भस्मा अन्त निकट है, महाकाल की माया है,

प्रभु की लीला नहीं ज्ञात है, मन्दबुद्धि जल जाएगा,
जब भी पैदा होगा, तब-तब यूँ ही मारा जायेगा ।।



कल्प-कल्प में रावण होता, भस्मासुर हो जाता है,
युगों-युगों से शिव शंकर कावर तप करके पाता है,
वही रास्ता वही पथिक बन वही चाल अपनाता है,
यही नियम है, कर्मों का फल जीव मात्र पा जाता है,

मैं शिव हूँ, कल्याण कार्य ही मेरा नियम रहा हरदम,
किन्तु विवेक शून्यता के चलते जीवों में हो आता भ्रम,

जीवन एक अतिथिशाला है, जो आएगा-जाएगा,
यहाँ की सम्पत्ति यहीं रहेगी, साथ नहीं कुछ जायेगा ।।

मैं शिव हूँ निःस्वार्थ भाव से करता रहता सदा भला,
लेकिन जो भी मायावी मन गलत राह पर कभी चला,
कभी रौद्र रूपा बनकर मैं खप्पर स्वयं उठाता हूँ,
महिषासुर दानवी रूप का खून स्वयं पी जाता हूँ,

प्रलयंकर बन ताण्डव कर के भू-नभ का करता मर्दन,
तीनों लोक काँप जाते हैं, जीव-जगत् करता क्रन्दन,

नहीं शरण पायेगा जग में, कितने महल बनायेगा,
महाकाल हूँ, कठिन कोप से, कभी नहीं बच पायेगा,

यह रहस्यमय माया-नगरी, सपनों में है पड़ा हुआ,
पैरों के नीचे विनाश है, जहाँ है तनकर खड़ा हुआ,

आज नहीं तो कल है जाना, यह सराय का डेरा है,
सपनों का संसार है पगले, क्या मेरा क्या तेरा है,
याद करो तुम शिव शंकर को भोले औढर दानी को,
आदि रूपिणी जगदम्बा को, अम्बा सती भवानी को,

जीवन तो स्वर्णिम अवर है, नाहक इसे गँवाएगा,
भटक जाएगा नीच योनि में, बहुत-बहुत दुःख पाएगा।





ॐ नमः शिवाय

कौन है जग में और देवता, जो शिव से आगे बढ़कर ।
जप रे मनवाँ आठ पहर तूँ शिव शंकर जय शिव शंकर ।।
जो पीकर के हालाहल,
औरों को सुधा पिलाये,
भूखे रहकर सपरिवार जो,
जग को सदा खिलाये,
पाप-ताप से मुक्त करे जग, बनकर के प्रलयंकर ।।
आदि-अन्त से परे हैं शिव जी,
हरदम अलख जगाते,
भस्म लेपकर जा मसान में,
निर्विकार हो जाते,
गंगा उनकी प्रियतमा है, जल चढ़ना है सावन भर ।।
भाँग-धतूरा बेलपत्र,
अक्षत का भोग लगाते,
नहीं माँगते कभी किसी से,
नहीं है हाथ बढ़ाते,
कल्प कल्प से देते आते धरती को अंजलि भर-भर ।।
बाँझ को देते पूत, रंक को
राजा वही बनाते,
वन-निर्जन रमतें योगी रमता,
जीवन स्वयं बिताते,
स्वयं भिखारी हैं त्रिपुरारी करें और को रत्नाकर ।।
कृपा कीजिए औढरदानी,
आशुतोष बम भोले,
आँखें नम है, दूर करो दुःख,
मूक व्यथा क्या बोले,
सपनों को साकार करो शिव, आँखों में अंजन रचकर ।।





ॐ नमः शिवाय

मैं हूँ अनाथ असहाय दीन-हीन नाथ,
आप तो हैं विश्वनाथ जग के उपकारी।
करते हैं सहज दया आशुतोष औढरदानी,
दूर करें नाथ जो है छाई अँधियारी।
पड़ा हूँ मैं संकट में, घिरा हूँ अभावों में,
कृपा करें जगन्नाथ जय शिव त्रिपुरारी।
जय हो गंगाधर, नागकंठ, जय हे अविनाशी,
जय हे त्रिनेत्र चन्द्रधर त्रिशूल धारी।
सारा संसार माया नगरी के वासी सभी,
पर धन के लोभी, अधर्म किया करते।
कैसे गिनाऊँ, क्या कहकर सुनाऊँ नाथ,
परधन हित कितने कुकर्म किया करते।
ऊपर से और, और भीतर से और लगे,
होके दिन रात हैं बेशर्म जिया करते।
छली और कपटी मायावी जालसाज लोग,
करके कुकर्म भी न शर्म किया करते।
आप तो हैं भोले नाथ तुरत रीझ जाते हैं,
देते हैं मन चाहा शरण में जो आता।
देता गंगाजल, भाँग अक्षत धतूरा जो,
बदले में क्या से क्या क्षण में पा जाता।
चाहते नहीं हैं कुछ, देते बहुत कुछ हैं,
वह भी पा जाते जो गाल है बजाता।
भेद नहीं करते हैं, निश्छल स्वभाव जो हैं,
सिर्फ जानते हैं भक्तिभाव भरा नाता।
माता जगदम्बा चिर संगिनी हैं, आप के शिव,
गंगा जल सदा संग आपके विराजें।



भस्म लेपे रहते समाधि में रमाये मन,
हैं मसान वासी जहाँ भूत-प्रेत नाचे।
शृंगी-भृंगी के साथ भैरवी आलाप करें,
डमरू रणभेरी जहाँ आठ पहर बाजे।
डाइनि, पिशाच, प्रेत डाकिनी के झुण्ड जहाँ,
वहीं शंख फूँकते हैं, साधक मंत्र साधे।
कहीं मंकेश्वर नाथ, कहीं बैजनाथ बाबा,
कहीं कैलासनाथ आप हैं कहाते।
कहीं महाकाल, कहीं बाबा भैरवनाथ,
कहीं काशी विश्वनाथ आप हैं पुजाते।
चारो तरफ आदिदेव हर-हर महादेव आप,
काँवरि भर गंगाजल बम है चढ़ाते।
बेलपत्र, चन्दन जो लोग हैं चढ़ाते रोज,
हर-हर गंगे कहकर गंगा में नहाते।
हे नाथ! मैं तो अनाथ कोई ढंग नहीं,
पूजा और अर्चन का ज्ञान नहीं मुझको।
मंत्र-तंत्र साधना, आराधना का ज्ञान नहीं,
ढंग नहीं विधिवत् विधान नहीं मुझको।
ऐसे में कैसे कुछ माँगू हे भोलेनाथ,
कोई तरीका आसान नहीं मुझको।
हे शिव दुखमंजन रचा दे अंजन थोड़ा,
और कोई चाहिए वरदान नहीं मुझको।
शक्तिहीन, अर्थहीन, भेट क्या चढ़ाऊँ नाथ,
केवल इस तन में जो मन है समर्पित।
कृपा करे भोले नाथ, डूब रहा अगम सिन्धु,
धोर है अथाह और समय बड़ा गर्हित।
आप का भरोसा है, प्रार्थना सुनेंगे आप,
हो गया हूँ भौतिक संसार से मैं वर्जित।



जितने तपस्वी, सिद्ध साधक सन्यासी मिले,
आपकी गरिमा गाथा सबसे समर्पित।
ऐसा विश्वास है, निराशा नहीं होने देंगे,
सुना है अधर्म को भी देते वरदान हैं।
ऊँच-नीच सुर-दानव सब को अपना लेते,
बिना भेद-भाव किये, करते कल्याण हैं।
और देवता तो सभी सुविधा-सुख भोगी हैं,
आप हैं अयाची, आप सचमुच महान हैं।
अंजन रचा दे नाथ! आँखें उदास आज,
रक्षा करें संकट में पड़े हुए प्राण हैं।







ॐ

सच्चे-गृहस्थ

मैं हूँ एक गृहस्थ शान्त, अपना परिवार चलाता हूँ।
विषम परिस्थिति में रहकर भी तनिक नहीं घबड़ाता हूँ।।

सिंह वाहिनी, रौद्ररूपिणी,
है संगिनी भवानी,
गंगा वन है जहाँ बीच में,
देती रहती पानी।

कालकूट की तपन मिटाता आठो पहर नहाता हूँ।

वह त्रिशूल जो देख रहे हैं,
तीनों शूल हरण करना,
डमरू का वह नाद अहर्निश,
शान्ति गगन हर क्षण भरना।

जब जब पीड़ित होता जग से, ताण्डव तभी दिखाता हूँ।

मूस सवारी है गणेश की,
वे गज बदन निराले हैं,
कार्तिकेय का मोर है वाहन,
महावीर मतवाले हैं।

बेटों की परहित-कृतियों को देख-देख हरसाता हूँ।

नाग देवता कंठ में लिपटे,
भाल चन्द्र का आसन है,
भस्म लेप रहता समाधि में,
नित मसान सिंहासन है।

निर्विकार निःस्वार्थ भाव से, अपना धर्म निभाता हूँ।

सिंह, बैल और मोर सर्प सब,
एक-दूसरे के भक्षक,

किन्तु हमारे घर में रहकर,
सभी परस्पर हैं रक्षक।
ढल जाता मैं आशुतोष हो, प्रीति सही जब पाता हूँ।
सावन मेरा प्रिय मौसम है,
गंगा जल जब मिलता है,
बेल पत्र अक्षत चन्दन से,
मेरा तन-मन खिलता है।
जो भी गाल बजा देता है, तुरत रीझ मैं जाता हूँ।
यह तो सच है गलत भक्त को,
जब-जब मैं वरदान दिया,
घोर कष्ट झेलना पड़ा है,
फिर भी है कल्याण किया।
सहज स्नेह वश चोट लगी है, दुःख कोई जब पाता हूँ।
अपना अडिग स्वभाव है ये,
विश्वास तुरत कर लेता हूँ,
कोख और झोली याचक की,
हो उदार भर देता हूँ।
खाली हाथ न जाय कोई, खुलकर दान लुटाता हूँ।
निराहार रहकर भी हरदम,
भूखों को भोजन देता,
नंगे रहकर भिक्षुक जग को,
देता राज, वसन देता।
मैं हूँ अलख विहारी, योगी रमता अलख जगाता हूँ।
धन के लोभी जो सुख भोगी,
या योगी सन्यासी है,
मन चाहा सब पा जाते हैं,
जो भी काशी वासी हैं।
खोल तीसरा नयन ज्ञान का अंजन सदा रचाता हूँ।





ॐ नमः शिवाय

जय जय महादेव शिवशंकर
हर हर गंगाधर अभयंकर
भोलेनाथ, चन्द्रधर दीन भक्त पर ध्यान दीजिए।
मैं हूँ याचक, आप अर्चाची शिव जी मान लीजिए।
जगत्पते कुमारि सदाशिव,
जप श्री कंठ निराला,
नन्दी वाहन, नाग कंठ में,
आसन है मृगछाला,
जय वागीश्वर, जय शितिकंधर,
जयति जयति जय-जय प्रलयंकर,
पिनाकधारी त्रिपुरारी वरदान दीजिए ।।1।।
गिरिजा पति, शरणागत वत्सल,
जगदीश्वर है स्वामी,
महा महेश्वर जय त्रिशूलधर,
जय शिव अन्तर्यामी,
परमोदारम् शक्ति अपराम्,
संसार सारं, करुणावतारम्,
मैं हूँ निश्छल मानस शंकर जी पहचान लीजिए ।।2।।
पंचवक्त्र, डमरूधर शंकर,
हालाहल पायी पर दुख हर,
हर-हर महादेव शिव हर-हर,
सहज दयामय, आशुतोष हर,
आगे खड़ी गहन अँधियारी,
रक्षा करो हरो त्रिपुरारी,
अंजन रच कर इन आँखों में कुछ मुस्कान दीजिए ।।3।।





ॐ नमः शिवाय

प्राण नाथ विभु विश्वनाथ जय जगन्नाथ शिव जय हो,
भूतनाथ भूतेश्वर शिव शंकर की जय हो, जय हो,

गले में रुण्ड माला सर्पजाल तन में हैं,
काल से महाकाल रूप में बदन में है,
है जटाजूट भंग की तरंग जहाँ,
महामण्डल है भस्म अंग अंग जहाँ,

महा अट्टहासं महा पापनाशं की जय हो, विजय हो ।

जय गिरीश जय-जय महेश स्वर लहरी है,
भैरव-भैरवी की टोली जहाँ प्रहरी है,
देव देवों से जिनके पूज्य चरण वन्दित हैं,
मसान वासी अपने आप में आनन्दित हैं,

काशी-विश्वनाथ भोले की जय हो, जय हो, जय हो ।

कपाली है, त्रिशूलधारी है, देवाधिदेव,
जिनका अन्त नहीं है, देवों के महादेव,
जो हे निर्विकार काम का दहन करते,
रमाते भस्मजा समाधि में रमण करते,

जय हो भोलेनाथ दयानिधि आशुतोष की जय हो ।

जो भी जाप करे मन से शंकर का,
ध्यान करे भजन करे शंकर का,
सुबह-शाम नाम-जप किया करता,
बड़े संकट में, दुख में नाम है लिया करता,

हे परम ब्रह्म पूजित शिव जी सदा जय हो ।





ॐ नमः शिवाय

द्वादश ज्योतिर्लिंग

सोमनाथ सौराष्ट्र राज्य में जन कल्याण किया करते,
श्री पर्वत पर मल्लिकार्जुन है वरदान दिया करते,
महाकाल ईश्वर उज्जेन में हरदम अलख जगाते हैं,
पर्यलया में वैद्यनाथ सावन भर पूजे जाते हैं,

वही भीम शंकर डाकिन्या में नित ज्योति बिछाते हें,
सेतु बन्ध रामेश्वर में, रामेश सदा कहलाते हैं,
दारुक वन नागेश रूप में जन-जन को देते दर्शन,
काशी में विश्वेश रूप का होता रहता है पूजन,

वही गौतमी तट पर लेकर नाम त्र्यम्बक् का रहते,
घृष्णेशंकेदार हिमालय में भक्तों का दुःख हरते,
देश विदेशी में जितने भी शिव के बने शिवालय हैं;
गाँव-गाँव में, ढाँव-ढाँव में, जितने जहाँ देवालय हैं,

सभी जगह है व्याप्त शिवम् की फैली अनुपम छाया है,
औढ़रदानी परोपकारी व्याप्त अहर्निश माया है,
सोते-जागते, चलते-फिरते, शिव का जो भी याद करे,
सबकी सुनते सच्चे मन से, जो भी जब फरियाद करे,

नहीं देर करते बाबा, सबको देते मन चाहा फल,
बेल-पत्र, अक्षत चन्दन जब पा जाते हैं गंगाजल।





ॐ नमः शिवाय

विश्वनाथाष्टकम्

द्वादश लिंग प्रधान महादेव सादर आज नमन है,
महिमा शिव की है अपार अर्पित तन अन्तर्मन है ।

नमन आज कैलास निवासी आदि शंभु शिव बाबा,
मणि छवि चन्द्र भाल पर शोभे ज्रटाजूटधर बाबा,
मुण्डमाल शोभित तन तेरे गरल कंठ में धारे,
भव भय मोचन संकट मोचन नन्दी शोभे द्वारे,

कर त्रिशूल डमरू स्वर गूँजे, व्याध चर्म आसन है ।

नाद-बिन्दु संयोजक शिव ने काम दहन कर डाला,
जटा निवासिनि गंगा माता, अथ मोचन मतवाला,
सुर गण पूजित भाल चन्द्रधर, जय लोचन त्रिलोचन,
काशी भैरवनाथ जहाँ दुख हरते संकट मोचन,

जय फणीन्द्र मणिधर माला मालती मोहती मन है ।

जहाँ करण कुंडल मण्डित मंदिर का ध्वज फहराता,
मुकुट क्रीट मुक्ताकर शिव का जो भी भजन सुनाता,
विश्वनाथ प्रभु जहाँ गंध मादन पर अलख जगाते,
भक्तों को मुँह माँगा देते, जब भी खुश हो जाते,

चरणों में है शीश झुकाता, विदित कथा त्रिभुवन है ।

बुद्धि-ज्ञान विवेक से हूँ हीन पथ दिखलाइए,
मैं हूँ अशरण हे दायनिधि कृपा कर अपनाइए,
पथ विकट है, आप का गुणगान करने हूँ चला,
घोर संकट आ गया है, कीजिए मेरा भला,

अंजन रच दे महादेव, द्वारे पर दीन नयन है ।





ॐ नमः शिवाय

अध्याय-1

शौनक जी ने कहा - सूत जी कहिए वही कहानी,
कैसे खुश हो जाते शिव जी बनकर औढरदानी,
आया है कलिकाल अधम-पथ लोग पकड़ कर जीते,
दिशाहीन सारा समाज है मद्य सुधी जन पीते,

लोभ-मोह ने ब्राह्मण तक को पथ से भटकाया है,
श्रद्धा-भक्ति विहीन लोग हैं, ऐसी कुछ माया है,
भूल गए हैं विद्वत् जन भी अपनी अमर निशानी ।।1।।

ऐसा दें कुछ ज्ञान शुद्ध हो जाये अन्तःकरण यहाँ,
खुले आम भ्रष्टाचारी जन करते हैं अपहरण जहाँ,
नहीं रहा विश्वास कहीं पर, कदाचार की हद है,
गलत काम के शब्द कोश हैं, गलत चले व्यारण जहाँ,

उपदेशक हैं धन के लोभी, काम युक्त हैं प्राणी ।।2।।

ढ़ोंगी, पाखण्डी, लोभी कपटी है जाल बिछाते,
राजनीति वेश्या-कुलटा है, व्यसनी हैं अपनाते,
जाति-जाति खण्डित होकर के गीत कोई गाती है,
धर्म और मजहब के चक्कर में फँसती जाती हैं,

रीति, नीति और परम्परा की हो गई बात पुरानी ।।3।।

वेद शास्त्र के वाचक श्रोता परधन के हैं कामी,
नेता, प्रहरी सभी हो गए, कुटिल कर्म के स्वामी,
ऐसा ही यदि हाल रहा तो कभी प्रलय हो जाये,
कोई राह बतायें मुनिवर, गलत सही हो जाये,
तर जायें इस महापंक से इस धरती के प्राणी ।।4।।



पिघल गया मन जब मुनिवर का, मधुर वचन से बोले,
शिव की महिमा की गठरी, वे धीरे-धीरे खोले,
कथा वही जो शिव ने अपने स्वर में कभी सुनाई,
ऋषिवर सनत्कुमार के मन में जयोति शिखा लहराई,
फिर से सनत्कुमार ने इसको व्यास को कमी सुनाया,
और व्यास ने यह रहस्य जन-मानस में पहुँचाया,
सुनने के पहले श्रोता मन गंगा जल से धो ले ।।5।।

जो भी सुनते मनोयोग से श्रद्धा से भर जाते,
तर जाते हें नरक के पूर्वज वे भी है तर जाते,
कल्प वृक्ष हे शिव की गाथा मन चाहा फल देती,
अमृत से जीवन के घट को क्षण भर में भर देती,
भक्ति चाहिए वही जो शिव का अपना प्रेमी हो ले ।।6।।

सात संहिताएँ हैं इसकी महिमा भी न्यारी है,
सहस्त्र चौवीसों श्लोकों में भी ज्ञान भक्ति भारी है,
विधेश्वर संहिता, रूप संहिता हरे अँधियारी,
शत रूद्री का अक्षर-अक्षर में है शिव त्रिपुरारी,
जहाँ कोटि रूद्री जप होता नेत्र तीसरा खोले ।।7।।

उमा संहिता शक्ति रूपिणी के दर्शन करवाती,
वहीं अमर कैलास संहिता शिव के मन है भाती,
वायु संहिता से होता है, धरती का कल्याण,
इच्छुक साधक पढ़कर पाता मन चाहा वरदान्,
कितना पावन मन है किसका पहले भक्त टटोले ।।8।।

हो कोई भी तीर्थ और ब्रत कठिन साधना तप हो,
और देवता के नामो से चाहे जितने जप हो,
शिव की कथा जहाँ होती है, पाप भाग जाता है,
हुई कृपा यदि शिव की तो संताप भाग जाता है,
आशुतोष औढरदानी हैं कृपा सिन्धु बम भोले ।।9।।





ॐ नमः शिवाय

अध्याय-2

देवराज-विप्र की कथा

देवराज था नाम विप्र का, था कामी कुविचारी,
केवल धन की चाह उसे थी, लोभी था वह भारी,
धर्म-कर्म से विमुख, सिर्फ पैसे का था अभिलाषी,
करता सदा अधर्म, दुराचारी था मिथ्या भाषी,

गलत रास्ते से धन आता, उसी राह पर चलता,
कहाँ से आ जाएगा पैसा, सोच के यही निकलता,
धन अनर्थ की जड़ होता है, पापों का है कारण,
सत्कार्में में नहीं गया तो पाप से कहाँ निवारण,

लाखों की पूँजी जब उसके पास भी पड़ी दिखाई,
हो मदान्ध कामान्ध विप्र ने गलत राह अपनाई,
शोभावती नाम की वेश्या पर आसक्त हुआ था,
भूल गया माँ-बाप की सेवा, अध अनुरक्त हुआ था,

पत्नी ने भी भला चाहकर बार-बार समझाया,
पिता और माता दोनों ने दुष्परिणाम बताया,
कामी था, था आँख पर पर्दा, मन में पाप भरा था,
गिरता गया निरन्तर नीचे जो एक बार गिरा था,

हुआ काम वश अन्धा वेश्या ने पथ भ्रष्ट किया,
कुल मर्यादा, परम्परा को उसने नष्ट किया था,
पत्नी माता-पिता सभी को जान से उसने मारा,
सारा धन वेश्या को देकर फिरता मारा-मारा,

यदा-कदा ही करता था स्नान विप्र अधकामी,
होकर के भी विप्र दुर्गुणों का था केवल स्वामी,
कहाँ शरण थी उस पापी को, कौन बनाता अपना,
चूर हो गया था ब्राह्मण का जो था देखा सपना,



एक शिवालय जहाँ सन्त जन शिव की कथा सुनाते,
जहाँ रोज ही भक्त सदाशिव के थे आते-जाते,
वहीं रूका, बीमार पड़ गया, कथा सुना करता था,
अपनी करनी पर पछताता, आह भरा करता था,
मरना था मर गया, उसे यमदूत पाश में बाँधे,
दौड़ पड़े भैरव जब उसे छुड़ाने हर-शर साधे,
दिए परम पद शिव निवास में, फल था कथा श्रवण का,
ऐसी महिमा है उस शिव की, था परिणाम शरण का,
एक से बढ़कर एक है पापी, अन्त में जो तर जाते,
शिव की कथा जहाँ भी होती, वहाँ हैं शिव जी आते ।







ॐ नमः शिवाय

अध्याय-3

यह प्रसंग सुन शौनक जी हो गए प्रफुल्लित और मगन,
हे मुनिवर कुछ और सुनाएँ, सफल हो सके यह जीवन,
सुनें ! एक पावन प्रसंग जो है रहस्य से भरा हुआ,
जिससे सूखा निर्जन मन उपवन था एक दिन हरा हुआ,

सागर के तट पर वाष्कल था एक ग्राम धनशाली,
किन्तु वहाँ पर पाप कर्म में रहत थे वैभवशाली,
वैदिक धर्म त्याग कर दुर्व्यसनों में थे अध-कामी,
भूल चुके थे धर्म आचरण सभी कुमारगामी,

स्वेच्छाचार नारियों का भी था वह शरण स्थल,
चिन्दुक नामक अधमं विप्र का भी निवास था वाष्कल,
पत्नी थी सुलक्षणा जिसका उसने त्याग किया था,
नवयुवती चंचुला ने, पर जन से अनुराग किया था,

दोनों पति-पत्नी परगामी स्वेच्छाचार निभाते,
बीत गए कुछ दिन दोनों के अन्त किसी दिन आते,
पति मर के नरक-भोग के एक दिन ब्रह्म पिशाच हुआ,
विन्ध्यापर्वत उसके जीवन का एक निवास हुआ,

पत्नी की जब ढली उम्र तो पुण्य भाव कुछ आया,
आ पहुँची गोकर्ण क्षेत्र में भाग्य खींचकर लाया।
होती थी शिव कथा वहीं पर - यमपुर में क्या होता ?
बता रहे थे, पंडित जी, जो धर्मज्ञ पुरोधा,

ज्ञान हुआ खुल गई आँख, भय विह्वल नारी बोली,
वह अतीत की कथा क्रमेण परत-दर-परत खोली,
पंडित जी को दया आ गई शरणागत थी नारी,
होगा मोक्ष पाप कार्मों से ज्ञान की बात विचारी,





ॐ नमः शिवाय

अध्याय-4

अगर हुआ वैराग्य तो समझो परम मोक्ष मिल जाएगा ।
जो भी पाप हुआ जीवन में, पुण्यों से धुल जाएगा ।।

हुए ध्यान में मग्न, प्रेम से शिव की कथा सुनाते,
महाक्षेत्र के पावन प्रांगण में अमृत बरसाते,
धन्य हो गई वह पतिता इस तरह भक्ति में लीन हुई,
जीवन बहला, तन-मन बदला, बदली परम कुलीन हुई,

कोई भी वर्ण रंग का मन सरसिज खिल जाएगा ।।1।।

नित प्रति करती ध्यान तीर्थ जल में स्नान किया करती,
सच्चे मन से गुरु-चरण जल का वह पान किया करती,
पूजन अर्चन, भजन में जीवन शेष बिताती थीं,
आठ पहर शिव-शिव में रमकर जीवन सुफल बनाती थी,

अन्तिम दिन के अन्तिम क्षण में शिव-विमान जब आएगा ।।2।।

नन्दीश्वर गणेश शृंगी और वीर भद्र थे भक्त जहाँ,
महादेव त्रिलोचन शिव के चरणों में अनुरक्त जहाँ-
वामभाग में गौरी पर्वती के होते थे दर्शन,
भैरवगण भैरवी सहित करते थे शिव का अभिवादन,

जो भी शिव की कथा सुनेगा, अन्त शिवपुरी पाएगा ।।3।।

कितना भी पापी कुविचारी कुटिल और कामी होगा,
भौतिक विकृतियों का कोई भी छलिया-स्वामी होगा,
कोई क्षण ऐसा आ जाए, परिवर्तन आ जाएगा,
होगी कृपा अगर शिव की तो पापी मन तर जाएगा,

पंच तत्त्व तो निश्चित है कि मिट्टी में मिल जाएगा ।।4।।





ॐ नमः शिवाय

अध्याय-5

बनी चंचुला सखी पार्वती के निवास में जगह मिली,
सेवा टहल बजाती, पूजन करती रहती भली-भली ।
गौरी बोली वर माँगो - मैं हूँ प्रसन्न "जो इच्छा हो"
नहीं चाहती और भी आगे तेते कठिन परीक्षा हो ।

दीन वत्सले ! महादेवि ! गर इच्छ हो तो दीजे वर,
मेरे पति को पुनः मिला दे, पति भी होता परमेश्वर ।
ब्राह्मण होकर भी हमने जो अधम कोटि का कर्म किया,
काम के वश में चेत न आया नष्ट-भ्रष्ट जो धर्म किया ।

भटक गए हम जीवन-पथ से गलत राह पर चले गए,
मन की भूख मिटाने के हित लोभ-मोह वश छले गए ।
हुई आप की कृपा और शिव का जो आशीर्वाद मिला,
मुझको शिवपुर शरण मिली है और मधुर सम्वाद मिला ।

कहाँ गया है विन्दुक मेरा, जनम-जनम का साथी था,
वह सर्वस्व समर्पित मेरा, जीवन भर का साक्षी था ।
पति-पत्नी का नाता तो जीवन भर साथ निभाना है,
अग्निदेव को दिया वचन अन्तिम क्षण तक अपनाना है ।

सुनी चंचुले वह था वेश्यागामी, आज नरक में है,
विन्ध्याचल पर वह पिशाच वन दुख के उपजे कष्ट सहे ।
भेज रही गन्धर्व तुम्बरू, वह शिव कथा सुनाएगा,
तब पिशाच वह कथा-श्रवण से बन्ध मुक्त हो जाएगा ।

गई साथ गंधर्व चंचुला वहाँ शिव-कथा श्रवण हुआ,
मुक्त हुआ वह जो पिशाच था, पावन अन्तःकरण हुआ ।
यह अमोध ब्रह्मास्त्र शिव कथा त्रिविधताप हरने वाली,
आशुतोष शंकर का आशीर्वाद सुफल करने वाली ।





ॐ नमः शिवाय

भजन

मेरे शिव जी को कोई न धन चाहिए,
गंगाजल में नहाया बदन चाहिए।

रंग कोई हो, हो जाति कोई कहीं,
वर्ण हो कोई हो जमाति कोई कहीं।

भाव के भूखे शिव, सच्चा मन चाहिए।

धन के लोभी हैं, जो अपने संसार में,
मोह माया वश लिपटे हैं परिवार में,

शिव नहीं चाहिए, उनको धन चाहिए।

त्यागी तपसी विरागी का शिवनाम है,
परहित रागी अनुरागी का शिव नाम है,

शिव को कोई न सुवरन वसन चाहिए।

उनको दुनिया की दौलत से क्या वास्ता,
अपनी दुनिया का उनका अलग रास्ता,

भक्ति कीर्तन मय पावन भजन चाहिए।

वे लुटाते हैं, पाना नहीं जानते,
अपना है या बेगाना नहीं जानते,

रमता योगी है पावन भुवन चाहिए।

शिव दया कीजिए, शिव कृपा कीजिए,
अपने चरणों में मुझको जगह दीजिए,

रचते अंजन हैं; पावन नयन चाहिए।





ॐ नमः शिवाय

अध्याय-6

शुभ मुहूर्त में कथा शुरू हो, वक्ता श्रोता पावन हो ।
और बात हो कोई न मन में, शुद्ध हृदय मन भावन हो ।।
सात्त्विक मन हो, सात्त्विक तन हो, तन्मय हो प्रवचन में,
मनोयोग हो केन्द्रित मन हो, सद्विचार हो मन में,
ऊँचा आसन हो वक्ता का, दिव्य शक्ति कुछ झलके,
अन्तःकरण विकारहीन हो, प्रेरक हो दो पलके,
श्रोता भौतिक सुख विरक्त हो, चंचल नहीं नयन हो,
देश काल मौसम से आगे शिव में रमा बदन हो,
तन होवे यदि सभा मध्य तो मन भी वहाँ रमा हो,
हो एकाग्र समूह भीड़ जो सुनने हेतु जमा हो,
लोभ-मोह, कामादि दोष को मन से स्वयं हटा कर,
जब भी जायें कथा श्रवण हित जायें स्वार्थ मिटाकर,
आकर्षण यदि और कहीं हो, भूल के कभी न जायें,
अहंग्रस्त हो नव तो जाकर व्यर्थ न समय गँवायें,
उनको ही सच्चा फल मिलता जो सच्चे मन जाता,
सिर्फ दिखावे के हित जाता, नहीं सुफल वह पाता,
भक्ति भावना, शुद्ध हृदय से निकली हुई सुधा है,
नियति चक्र में फँसी हुई सारी प्रकृति वसुधा है,
पंचाक्षर का मंत्र जपे, तन-मन पावन हो जाये,
शिव की सहज कृपा मिलते ही मन भावन हो जाये,
यह रहस्यमय माया नगरी वर्तमान नश्वर है,
रोम-रोम में राम सदा शिव आदि शक्ति ईश्वर है,
धन के पीछे दौड़ रहा जो महा मूर्ख अज्ञानी,
नहीं जानता स्वप्न लोक है, माया है अनजानी,
आया है तो कभी जाएगा अभी जाग अभिमानी,
भज रे पगले सच्चे मन से, भोला और भवानी ।





ॐ नमः शिवाय

अध्याय-7

श्रोताओं को मनन करने योग्य बातें

भोजन हो सात्त्विक और पावन हो अन्तःकरण,
भक्ति भाव श्रद्धा समन्वित हो जीवन,
भौतिक आकर्षण न लेश मात्र मन में हो,
कथा-श्रवण में समर्पित हो तन-मन;
दान उपदान कुछ जरूर वहाँ अर्पण करें,
मन में न गाँठ हो, न मन में हो बन्धन,
मुक्त होगा तन-मन तो बात कुछ अँटेगी वहाँ,
सार्थक परिणाम तभी देगा वह प्रवचन।

ईश्वर अदृश्य और दृश्य मान कण-कण में,
निर्विकार भाव से करेंगे यदि दर्शन,
वह तो सर्वव्यापी है, घट-घट के वासी हैं,
बाँध नहीं सकता उसे कोई भवबन्धन,
शिव शक्ति एक ही है; कोई भी भेद नहीं,
भौतिक परिवेश में है व्याप्त जो आकर्षण,
एकदिन भी सोचो, जरा गौर करो जीवन पर,
नश्वर है तन यह और नश्वर है जीवन।





ॐ नमः शिवाय

विद्येश्वर संहिता

अध्याय-1

सृष्टि-विश्व के आदि अन्त में जो है मंगलकारी,
जरा-मृत्यु से परे सदाशिव स्व-प्रकाश हितकारी,
पाँच मुखों से पंच-प्रपंचों को जो हैं हरने वाले,
भक्तों के दुख त्वरित क्षणों में दूर हैं करने वाले,
पार्वती पति उस शिव का मैं आज ध्यान करता हूँ,
कथा सुरसरि अमृत का मैं, आज पान करता हूँ,
पथ प्रशस्त ही जीवन का मैं आह्वान करता हूँ,
शक्ति मिले, शिवत्व प्राप्त हो आज गान करता हूँ,
सत्यव्रती, ज्ञानी पराक्रमी, ऋषियों ने जब दान लिया,
संगम पर पावन प्रयाग में जो था अनुष्ठान किया,
दिशा-दिशा से ऋषि-मुनि आए, सूत जी वहाँ पधारे,
धन्य भाग्य उस तपस्थली का मन में सभी उचारे,
आप त्रिकाल जानते हैं, कुछ भी तो छिपा नहीं,
समय चक्र चलता रहता है, कभी भी रूका नहीं,
आया है कलि-काल घोर परधन हर्त्ता ये जन हैं,
धन के पीछे पौड़ रहे दुर्जन, आतुर सज्जन हैं,
बढ़ा पाप का ताप धरा पर धर्म पड़ा संकट में,
मोह वासना भरी जा रही जीवन में घट-घट में,
संस्कार का लोप हो रहा सिमट रही मर्यादा,
नारे भाषण मात्र दिखावे, झूठी कसमे वादा,
नहीं रहा विश्वास कहीं पर लोभी उपदेशक हैं,
ढोंगी पाखण्डी हैं वक्ता पर धन के शोषक हैं,
श्रवण कुमार नहीं मिलता अब स्वार्थवाद है मन में,
घोर पाप हो रहा है मुनिवर देखें इस त्रिभुवन में,



काम वासना की ज्वाला में; जलने लगी धरा है,
कलि का यह विकराल रूप इस धरती पर उतरा है,
माता-पिता कमाऊ सुत से, ठुकराए जाते हैं,
गायक रचनाकार राग दरबारी ही गाते हैं,

जहाँ भरा विद्वेष परस्पर ब्राह्मण कपटी कामी,
उपदेशक, प्रवचनकर्ता हें, कुटिल लोभ के स्वामी,
धर्म और मजहब की चलती जहाँ है ठेकेदारी,
कहाँ जा रहे हम मुनिवर, जाती दुनिया सारी ?

वर्ण संकरी संस्कृति की आँधी जो फैल रही है,
आने वाली पीढ़ी मुनिवर आगे निकल रही है,
"परेपकारं सतां विभूषम" कब का लुप्त हुआ है,
आदर्शों का पथ है मुनिवर पर अब अभिसप्त हुआ है,

सुनकर युग की व्यथा, सूत ने शिवशंकर का ध्यान किया,
कितना पतन हुआ भारत का, मन-ही-मन अनुमान किया,
सभी पाप भय कर्म तभी तक अपना जोर लगाते हैं,
जब तक शिव पुराण के दर्शन हमें नहीं हो पाते हैं ।

यह पुराण है सूर्य, निबिड़तम, उदित हुए मिट जाता है,
इस पुराण से पापों का यह अवबन्ध कट जाता है,
यह पुराण सुनाते ही सारे पाप-ताप मिट जाते हैं,
शिव पुराण की महिमा सारे ऋषि आचार्य बताते हैं,

सभी संहिताओं की महिमा अपरम्पार कही जाती,
बिना सुने और पढ़े बिना भवताप की आग नहीं जाती,

चतुर्दशी को बेल के नीचे पाठ करे या करे श्रवण,
रूद्र संहिता भैरवत्प्रतिमा के समझ जब हो वाचन,
ब्रह्मरूपिणी प्रणव शक्ति का होता है प्राकट्य वहाँ,
शिवजी पूर्ण जानते होंगे अर्द्ध जानत, तथ्य जहाँ,



उपनिषदों का कर के मंथन शिव ने इसे निकाला है,
तीनों लोकों के हितार्थ, इस भारत को दे डाला है ।
सात संहिताओं में अद्भुत है रहस्य लीला का जल,
जीवन का उद्धार करें, जैसे करता है गंगाजल,

सनत्कुमार व्यास जी से लेकर सूत जी करते हैं वाचन,
पावन निर्विकार ऋषि भी जब जन के हित देते प्रवचन,
इस पापी संसार सिन्धु का शिव पुराण पतवार बना,
जीव-जगत् कल्याण हेतु है मूल मंत्र आधार बना,

बार-बार ऋषियों, मुनियों को अपनाशीश झुकाता हूँ,
शिव-शिव नमः शिवाय अभी भी बार-बार दुहराता हूँ,
कृपा करें हे आशुतोष, मैं हूँ विमूढ़ अज्ञानी,
दर्शन देकर के कृतार्थ कर दें शिव-संग भवानी ।







ॐ नमः शिवाय

साध्य-साधन

करता शिव को नमन, वेद का कर मनन,
सूत जी बोले, मन से श्रवण कीजिए।
भक्ति-वैराग्य के दर्शन हो जायेंगे,
सार संग्रह है चिन्तन भजन कीजिए।
श्वेत वाराह का कल्प जब आ गया,
ब्रह्म के ज्ञान का प्रश्न टकरा गया,
तर्क पर तर्क होने लगा हर जगह,
सत्य पर कुछ अँधेरा था यूँ छा गया,
प्रश्न ब्रह्म के सम्मुख जब लाया गया,
बोले ब्रह्मा - "रहस्यों पर मन दीजिए।
मन पुरुष, प्रकृति, वाणी निरस्तर जहाँ,
मौन हो जाते शब्दों के हैं स्वर जहाँ,
होते शिव हैं प्रकट काल से जो परे,
भक्ति से ही दिखाई हैं देते वहाँ,
वे ही शिव अधिपति हैं सारे ब्रह्माण्ड के,
फिर नमन कीजिए, फिर नमन कीजिए।
देवता सारे उनके परम भक्त हैं,
भक्तिभावों में हर दिन जो अनुरक्त हैं,
वे नहीं जानते जो सुखों के लिए,
भौतिक संसार में जितने आसक्त हैं,
उनकी इच्छा से ही भक्ति में मन लगे,
भक्ति से मोक्ष होता वरण कीजिए।
प्राप्त हो भक्ति शिव की यही साध्य है,
सेवा उनकी ही साधन कहा जाएगा,
जो भी शिव में रमा, वह सफल हो गया,
गंगाधर में प्रेमी नहा पाएगा,
देखिए, सुनिए, शिव की कथा बाँचिए,
फिर से कीर्तन भजन सच्चे मन कीजिए।





ॐ नमः शिवाय

शिवरात्रि व्रत का महात्म्य

महा शिव रात्रि पावन पर्व है, महिमा निराली है,
ये शिव के लिंग पूजन की प्रथा अमृत की प्याली है,
इसी दिन विष्णु ने, किया पूजन, किया अर्चन,
दिया शिव ने उन्हें खुश होके अमृत से भरा प्रवचन,

जो भी जीव जग का इस दिवस को हैं नमन करता,
होके मुदित मन मैं रिक्तियों में हूँ रतन भरता,
ये दिन हैं - रात में जब कोई मेरा है भजन करता,
उसे देता हूँ मन चाहा जो पावन आचरण करता ।

प्रीति की रीति है, जब भक्ति की गंगा निकलती है,
मेरी करुणा, दया, ममता सहज ही तब पिघलती है,
उसे देता हूँ शिव पर चारो फल वह सहज पा जाता,
भक्ति जब भक्ति के पथ से है मेरे पास आ जाता,

नहीं हो खोट कोई मन में निश्छल भाव जो आए,
करे पूजन भजन कीर्तन, मेरा सामीप्य पा जाए,
उसे सालोक्य मिल जाए, उसे सारूप्य मिल जाये,
सार्ष्टि सायुज्य मिल जाये, हृदय का बाग खिल जाये,

लिंग में ज्योति पावन है, उसी में मुझको पहचानो,
कोई श.ङ्का नहीं करना उसे शिव रूप ही मानो,
ये कलियुग है, छली, कपटी बहुत से व्यर्थ करते हैं,
कुटिल स्वार्थी और ढोंगी जिन्दगी को व्यर्थ करते हैं,

है जिसकी भावना जैसी, उसी का फल उसे मिलता,
बिना मर्जी के मेरे एक भी पत्ता नहीं हिलता,
हूँ देता राज सुख तो किसी दिन संहार करता हूँ,
ये सच है अपने भक्तों से मैं बेहद प्यार करता हूँ,

प्रीति ही साध्य हो जिसका और साधन भक्ति हो जाये,
समझ लो उस अधम की पाप से भी मुक्ति हो जाये ।





ॐ नमः शिवाय

ब्रह्मा, विष्णु को पंचकृत्य तथा ॐकार का उपदेश

सृष्टि, स्थिति, संहार, अनुग्रह तिरोभाष के भाव-प्रबल,
पंच कृत्य हैं सत्य जगत् के जीव मात्र के हैं सम्बल,
आदि सर्ग, वृद्धिस्थिति और नाश संहार यहाँ,
उत्क्रत भाव कहा जाता है, जीवों का उद्धार जहाँ,
और मोक्ष हो जाय अनुग्रह की संज्ञा बन जाती है,
सृष्टि कर्म सर्गादि कृत्य हैं, मुझमें लय-गति आती है,
पृथिवी-सृष्टि जल में स्थिति, संहार अग्नि का लवण है,
तिरोभाव है वायु और आकाश अनुग्रह का क्षण है,

इन्हीं पंचकृत्यों को मेरे पंचमुखी सब कहते हैं,
चारो मुख हैं चार दिशाएूं मध्य पाँचवाँ कहते हैं,
अगर चाहते हो शिवतत्व तो नितस्वरूप का ध्यान करो,
जपो मंत्र ओंकार ओर मन का मत तूँ अभिमान करो,
है अकार उत्तर दिशि पश्चिम मुख उकार कहलाता है,
दक्षिण दिशिम कार से शोभित पूर्व, बिन्दु का ज्ञाता है,
नाद हुआ उत्पन्न मध्य से ओंकार उत्पन्न हुआ,
एकाक्षर ही सृष्टि रहस्यों से समझो सम्पन्न हुआ,

आकारादि क्रम से नकार, उकार-मकार से "शिङ्" बनता,
विन्दु सेवा और नाद से, य, आ-क्रम सजाता,
कहोगे जब तुम नमः शिवाय हो जायेगा ज्ञान अटल,
गायत्री जिससे उपजी है शक्तिरूपिणी सतत अटल,
पंचाक्षर का जाप करे जो चारो फल पा जाता है,
पंचाक्षर ही गूढ़ रहस्यों के दर्शन करवाता है,
सृष्टि और पालन-लय इस ॐकार में नर्तन करते हैं,
नाश न होता महा प्रलय में युग-परिवर्तन करते हैं।





ॐ नमः शिवाय

सदाचार

मन पावन तन निर्मल वाणी यदि परहित में रत हो,
परोपकारी वेदाचारी, त्रिविध रूप भारत हो,
मनसा वाचा और कर्मणा लगे अगर आदर्श,
तो समझें सचमुच उसका घर होगा भारत वर्ष,

रंग-रूप हो अगर विप्र का, विप्र कर्म त्रिकाल,
अगर लोभ हो भरा कहीं तो समझें वह चाण्डाल,
पर निन्दक परधन हर्ता, मद्यप कपटी कुविचारी,
ब्राह्मण कर्मी न कहलाएगा, भले हो वेदाचारी,

और वर्ण का कोई भी सत्कर्म अगर करता है,
नहीं सोचता बुरा किसी का पर-हित-रत रहता है,
वन्दनीय है, लोकधर्म में - नीति यही कहती है,
म्लेक्ष शूद्र के मन में भी पावन गंगा बहती है,

ब्राह्मण एक ज्ञान है, उसका है कर्मों से नाता,
वह तो दिग्दर्शक उद्धारक धरती का कहलाता,
केवल जन्म कहीं लेने से भले जाति हो जाये,
अगर कर्म और धर्म ज्ञान से यदि वंचित हो जाये,

मिलती उसे अधोगति होता घोर नरक का वासी,
नीच योनि में जाता गिरता परधन का अभिलाषी,
शुभ कर्मों से सभी जीव नितउत्तम होते जाते,
पुनर्जन्म होते रहते हैं, ऋषि मुनि यही बताते,

राजा हो यदि कुविचारी, सेवक हो स्वामीहन्ता,
शिक्षक हो शिष्यों का भक्षक, नीतिच्यूत अभियन्ता,
सबसे बड़ा आचरण होता, मन दर्पण कहलाता,
कर्मों का प्रतिबिम्ब सहज ही उसमें देखा जाता,



शिव तो हैं आदर्श हमारे जीवन-दर्शन कर लो,
कहकर नमः शिवाय भजन पूजन अभिनन्दन कर लो,
सदाचार ही कर्म जगत् का मूल मंत्र हो होता है,
शुद्ध आचरण से ही उत्तम लोकतंत्र होता है,

कल्प बदलते, युग परिवर्तन होता ही रहता है,
समय-सिन्धु अनवरत और अविराम यहाँ बहता है,
शिव से सीखो पर हित देना, लोभ न हो जीवन में;
पावनता, मन में वाणी में, हो इस नश्वर तन में।







ॐ नमः शिवाय

यज्ञादि महत्त्व

यज्ञों की महिमा अनन्त है, और होम तर्पणा की,
देवों के जो हव्य-गव्य हैं, कथा है आकर्षण की,
जो है पर्यावरण अनेकों, विष कीटों का आश्रय,
हवन धूप से होता रहता, कीट जगत् का भी क्षय,
शंख-ध्वनि से भी विषाणु जाते हैं जहाँ मिटाये,
अग्नि धूम, हवि सामग्री से बहुत रोग मिट जाये,
कहता है विज्ञान शोध कर, धर्म की बात सही है,
शिव है अतुलित वैज्ञानिक इसमें अन्यथा नहीं है,
उनके भोजन की सामग्री, जो है उनका भोजन,
स्वयं सिद्ध हैं सभी दवाएँ, रोगोधक हैं हवन,
अग्नि-यज्ञ और ब्रह्म यज्ञ, जैसे विधान अनुपम है,
रोग निरोधक तो हैं ही, आने से डरते यम हैं;
वृक्ष लगायें फल पायें, शास्त्रों ने जो बतलाया,
बाँध धर्म में शास्त्रों ने था जो विज्ञान दिखाया,
भूल गए भौतिक वादा, मन सच्ची ज्ञान पिठारी,
कामासक्त, छली कपटी हम हो गए भ्रष्टाचारी,
ज्ञानशून्य हो दिशाहीन हो भोग-स्वाद अपनाए,
इसीलिये असमय मौतों से सदा जूझते आए,
लाख करोड़ों वर्षों में जो तथ्य हुए संशोधित,
उसे धर्म में बाँधा, ऋषि मुनियों ने कर के पोषित,
अनगिनतजीवों की दुनिया है जन्म-मृत्यु का क्रम है,
सच्चा ज्ञान नहीं होने से धरती पर मतिभ्रम है,
उठो, टटोलो अपने मन को, सच्चा पथ मिल जाये,
भय हो नहीं, अकाल मृत्यु का सुखद समय हो जाये ।





ॐ नमः शिवाय

लिंग पूजन

करे जो लिंग पूजन भक्तिपूर्वक, वह अमर होता,
जपे जो मंत्र पंचाक्षर, शुरू में प्रणव-स्वर होता,
बड़ी महिमा है पूजन की पुराणों ने बताई है,
ऋषि मुनियों ने कहकर के जिसे हरदम सुनाई है,

स्वयं हो प्रकट या निर्मित हो इसका ध्यान करता है,
भला उसका भी होता, विश्व का कल्याण करता है,
एकाक्षर मंत्र ही है, मूल मंत्रों में प्रथम आता,
बड़ा कल्याणकारी है, सभी विघ्नों का है त्राता,

समय हो शुभ नदी का तट हो, कोई तीर्थ या मन्दिर,
फलद होता है लिंग पूजन ये होती बुद्धि है स्थिर,
तपोनिष्ठ, वेदाचारी या गुरु का कर के शुभ दर्शन,
सविधि होता है जो पूजन, भजन कीर्तन मनन चिन्तन,

है निश्चित मोक्ष मिल जाये, सुफल हो जाय यह जीवन,
कृपा शिव जी की मिल जाये, हो सुवरन से भरा जीवन,
कोई मूढ़ मति भी जो करे शिव शक्ति का अर्चन,
करे दर्शन देवालय में, करे अनजाने भी कीर्तन,

सहज ही शिव कृपा होती है, बिगड़े काम बन जाते,
बिना जाने भी शिव दर्शन, कहीं पथ में है हो जाते,
है ऐसे देवता, निःस्वार्थ ही कल्याण करते हैं,
सभी दुखदर्द हर लेते, सदाशिव त्राण करते हैं,





ॐ नमः शिवाय

देव यज्ञादि में, देश, काल, पात्र-वर्णन

बेल तुलसी और पीपल के निकट मन हो विमल,
ध्यान जप, पूजन करे तो शीघ्र ही मिलता है फल,
देव मन्दिर, तीर्थ-तट हो सप्त गंगा जो मिले,
या हो सागर, गिरि का तल हो शुद्ध मन उपवन खिले,

हो ग्रहण का समय तो सद्यः सुफल मिल जाएगा,
स्नान दान पवित्र मन से जब कभी हो पाएगा,
तपी योगी, और पंडित कथा वाचक सन्त के,
करें दर्शन और पूजन वेदनिष्ठ महंथ के,

दान दे सत्पात्र को, सत्कार्य में जो लीन हो,
परोपकारी आत्मा हो, पुण्य में तल्लीन हो,
ब्रह्म गायत्री के जप से जो रहे पावन विमल,
शुद्ध और प्रबुद्ध हो, मानस विमल, जीवन धवल,

यदि जुआरी और मद्यप, चोर हो कपटी-कुटिल,
वेशधारण कर सुजन का गर कभी वह जाएँ मिल,
बिना पहचाने किसी को दान देना है मना,
द्विविध रूपों में जगत् का मंत्र है ऐसे घना,

पापियों, खल कामियों का आज जो संसार है,
लोभियों, मायावियों का चल रहा व्यापार है,
रूप से पहचानना, सचमुच में मुश्किल काम है,
काम से रावण हो कोई रूप से जो राम है,

ये दुराचारी प्रवंचक अग्रणी होने लगे
बीच धारा में धरा की नाव डुबोने लगे,
यज्ञ पूजा, पाठ से उद्धार होगा जानिए,
आप क्या है स्वयं को कुछ शेष है पहचानिए।





ॐ नमः शिवाय

बन्ध-मोक्ष

जप रे मनवाँ आठ पहर तू नमः शिवाय
नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय।

बँधा हुआ है भव-बन्धन में नहीं निकल पाता है,
जोड़ लिया इस तन के चलते, सपनों से नाता है,
स्थूल, सूक्ष्म कारण तीनों तन कर्म में फँसे हुए हैं,
प्राण तुम्हारे तृप्ति-तुष्टि में ऐसे बँधे हुए हैं,
जन्म-मरण के गहन चक्र में फँसा हुआ पछताया ।। ॐ नमः
शिव शंकर आठो चक्रों से परे हैं, पड़े दिखाई,
पूर्ण और सर्वज्ञ भक्तिमय, अग-जग है अनुयायी,
जब तक उनकी कृपा न होगी, बन्धन नहीं कटेगा,
पड़ा मोह का पर्दा आँखों पर से नहीं हटेगा,
निर्विकार हो शिव को भजले, भागे सभी बलाय ।। ॐ नमः
श्वेत भस्म ललाट पर जो धारण करता है,
भक्ति-भाव से जो भी शिव उच्चारण करता है,
गुरु ही शिव है, शिव को ही गुरु कहा जाता है,
आत्मज्ञान, विद्या-विवेक तय जीवन दाता है,
भवसागर अनथाह पगले, जीव ये डूवा जाय ।। ॐ नमः
त्रिगुणों को कर क्षीण बोध जो शिव का कमी कराता,
वही गुरु है, शिष्य समर्पित तन-मन से हो जाता,
शिष्य पुत्र में नहीं है अन्तर पिता गुरु सम होते,
वे सर्वतः समर्पित नाते आजीवन हैं ढोते,
यह सराय संसार है सोचो जो आवे सो जाय ।। ॐ नमः
गुरु का तन सर्वात्म लिंग है, पूजन-चिन्तन कर ले,
पूर्वज सारे तन जायेंगे तू भी भव से तर ले,
है आसक्ति जगत् में बन्धन, मोक्ष विमुख हो जाना,
जन्म चक्र दुःख का कारण है, मोक्ष है कभी न आना,
प्रीति आँख है, भक्ति है अंजन शिव जी दिये रचाय ।। ॐ नमः





ॐ नमः शिवाय

गुरु माहात्म्य

गुरु है वह नहीं जो लोभ वश शिक्षण किया करता,
गुरु है वह नहीं जो नीति का भक्षण किया करता,
गुरु है वह नहीं जो हरण करता शिष्य के धन का,
गुरु है वह नहीं जो गलत पथ पकड़े कभी मन का,

गुरु है वह नहीं जो ज्ञान का व्यापार करता है,
गुरु वह भी नहीं जो ज्ञान का संहार करता है,
गुरु वह भी नहीं जो शिष्य को भटकाया करता है,
गुरु वह भी नहीं जो बातें सिर्फ बनाया करता है,

गुरु मद्यप नहीं होता, गलत जो आचरण करता,
किसी भी और पथ से जिन्दगी का है भरण करता,
गुरु का काम है मन के अँधेरे का हरण कर ले,
जो हो आदर्श, गौरव पुंज, वैसा आचरण कर ले,

गुरु अज्ञानता में ज्ञान का दीपक जलाता है,
गुरु के ज्ञान से ही शिष्य जीवन जगमगाता है,
गुरु के ज्ञान का प्रतिदान कोई दे नहीं सकता,
जो धन देता उसे कोई चोर-डाकू ले नहीं सकता,

हमारे देश के भूषण, गुरु के ज्ञान के फल थे,
जो चमके विश्व पट पर, गुरु के शिष्य केवल थे,
हमारे ज्ञान के आदर्श के झण्डे हैं फहराते,
ज्ञान, विज्ञान से ऊपर हमारे आज भी आते,

गुरु शिव हैं अयाची हैं, कहे जाते भुवन में हैं,
हमारे वेद और पुराण शाश्वत हैं, सनातन हैं,
पतन है हो गया, गुरु ज्ञान से हैं हीन कहलाते,
अर्थ कामी हैं, अधगामी हैं घृणा के पात्र बन जाते,

करो शिव भक्ति शिव में प्रीतिपूर्वक तुम मनन कर लो,
कृपा होगी ये निश्चित है, हृदय से तुम भजन कर लो,
कोई सच्चा गुरु इस लोक में अब रह नहीं पाया,
बिना ही वृक्ष के कैसे मिलेगी, वह मधुर छाया,





ॐ नमः शिवाय

शिव नाम की महिमा और भस्म माहात्म्य

शिव-शिव कहते हैं जो, शिव-शिव जपते हैं जो
भाग्य उनके किसी दिन बदल जाते हैं,
उनके दुख के दिन चुपके निकल जाते हैं,
चारो फल दाता शिव नाम कहलाता है,
जप का परिणाम जीवन में आ जाता है,
नाम जप में छिपी वह अमर शक्ति है,
प्रीति शिव में बसी मन में शिव भक्ति है,
यम का होता न भय, पाप हो जाते क्षय,
आए संकट के बादल भी टल जाते हैं।
नाम गंगा है, यमुना है, संगम बना,
तीर्थ नदियों का आने का है क्रम बना,
हो गले में यदि रूद्राक्ष शिव के नयन,
भक्ति गंगा में अवगाहन करता है मन,
पाप का ताप जो मन में संताप जो-
नाम सुनते ही शिव के ये जल जाते हैं।
नाम में शक्ति ऐसी जला दे धरा,
नाम से शक्ति ऐसी मिला दे धरा,
एक विश्वास हो, पावन मन की लगन,
जाग उठता पवन, जाग जाता गगन,
गुरु में सच्ची लगन मन से हो यदि भजन,
देर होती नहीं, भक्त फल पाते हैं।
भस्म का लेप संसार से तारता,
चन्दन-त्रिपुण्ड पापों को संहारता,
देवता भी इस महिमा को पहचानते,
शक्ति है कितनी, सुर, नर, मुनि हैं जानते,
जो भी आता शरण, करता शिव का भजन,
ऐसे भक्तों पर शंकर जी ढल जाते हैं।





ॐ नमः शिवाय

रूद्राक्ष-माहात्म्य

पहले-पहले भगवती देवी को यह कथा सुनाई,
शिव शंकर ने गोपनीय भावों की बात बताई,
यह रूद्राक्ष गले में मेरे हैं प्रियत्व का बोधक,
लोभ, मोह, वासना काम का है सबका अवरोधक,

नहीं चाह कोई है मेरी, अनासक्त हूँ योगी,
भौतिकता से मैं विरक्त हूँ नहीं हूँ, कौमी-भोगी,
अपना जीवन एक अयायी, अनासक्त, सन्यासी,
भस्म रमाता, अलख जगाता, मैं जंगल का वासी,

देखो यह चन्द्रमा भाल पर, जटा मध्य में गंगा,
नाग कंठ में, डमरू धर में, जीवन है बेढंगा,
भूत, प्रेत, किन्नर, पिशाचिनी और डाकिनी नाँचे,
श्मशान में रणभेरी-शृंगी जब भेरी बाजे।

छप्पन भोग कभी भी मेरे मन को नहीं डुलाता,
स्वयं में रहता लीन, बेल के पत्ते कभी चबाता,
कभी भंग का रंग उमड़कर मेरे सिर पर छाता,
शंकर से प्रलयंकर बनकर ताण्डव कभी रचाता,

आगे पीछे नहीं दौड़ता, नहीं खुशामद करता,
बादशाह हूँ अपने मन का जो मनभाये करता,
याचक खाली हाथ न जाता, लौट के मेरे घर से,
सबका भला किया है, कहते लोग देवशंकर से,

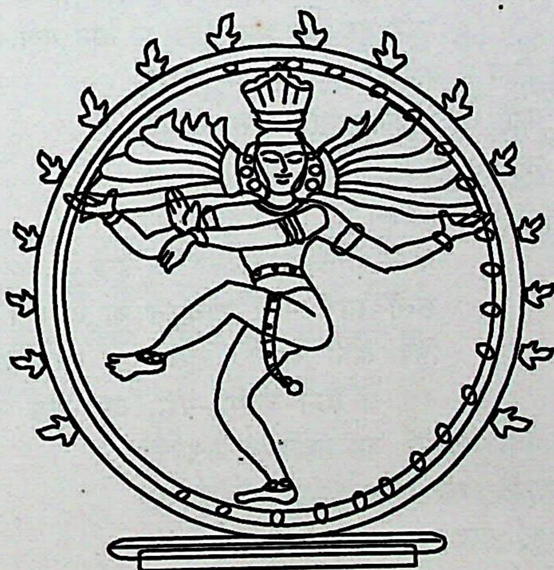
सब पापों को हरने वाला, है रूद्राक्ष निराला,
सदा रहे जो बनकर पावन प्रेम गले में माला,
त्रिविध ताप से रक्षा करता असमय मौत न आती,
परम ज्योति की दीप मालिका स्वयंमेव जल जाती,



इसका मतलब नहीं कि इसके बल पर पाप करें हम,
शान्ति चाहिए जिस समाज को दुख संताप भरे हम,
पहने हैं रूद्राक्ष तो शिव को मन से याद करें हम,
फर्ज नहीं है जान बूझकर सुख वर्षाद करें हम,

गंगातट हो, देवालय हो, मंत्र जाप चलता हो,
मन के अन्धकार में दीपक ज्ञान भरा जलता हो,
भक्त हमारे शिव आराधक जब रूद्राक्ष पहनते,
शिव मय होकर पूजनीय है, इस धरती पर बनते,







ॐ नमः शिवाय

नारद-मोह

सारा खेल तमाशा माया का है जान लीजिए,
बाबा कौन राह से जाना है, पहचान लीजिए,
मोड़-मोड़ पर भीड़ खड़ी है, चौराहों पर मेले,
कहने को तो साथ बहुत है, फिर भी सभी अकेले,
दौड़-धूप में शाम हो गई, मन है भूखा-प्यासा,
तृष्णा अब भी गई न मन से, पूरी हुई न आशा,
हम-हम का बाजार लगा है,
कर्मों का व्यापार लगा है।
बाबा क्या होगा अब आगे कुछ अनुमान कीजिए।
ब्रह्मपुत्र नारद ने तप करने का कभी विचार किया,
मन था बड़ा घुमक्कड़ उसको येन-केन तैयार किया,
उसी गुफा में गए जहाँ मुनि शार्दुल का था आसन,
अहं ब्रह्म का ज्ञान मिला या जान गया था त्रिभुवन,
उसी गुफा में शिव ने कभी अखण्ड समाधि लगाई,
कामदेव ने वहीं थी अपनी सारी शक्ति लगाई,
खुला तीसरा नयन काम जलकर के राख हुआ था,
पुनः जिलाया, पुनः नहीं आने का वचन लिया था,
नारद के तप से डरकर जब इन्द्र का मन था डोला,
छली स्वर्ग भोगी शचिपति था कामदेव से बोला,
मित्र अभी जाओ, नारद का तप जाकर तोड़ो,
नहीं तो छिन जाएगी गद्दी, अस्त्र-शस्त्र सब छोड़ो,
भूल गया था दिया वचन, वह महाजाल फैलाया,
कामोद्दीपक प्रकृति की फैला दी ऐसी माया,
शिव की कृपा हुई नारद पर, काम का काम न आया,
निर्विकार नारद के मन पर काम न आई छाया,



आत्मज्ञान से हो प्रसन्न, वे हो गए काम-विजेता,
अहं हो गया अहं किसी को चैन न रहने देता,
शिव से जाकर अहं भाव से कह गए विजय कहानी,
समझे शिवजी नारद है हो गया मूढ़ अज्ञानी,

मना किया यह बात किसी से और कहीं मत कहना,
अच्छा होगा खुशी छिपाकर मौन सदा ही रहना,

यह तो शिव की ऐसी माया,
कोई विजय न उस पर पाया,

बाबा यह रहस्य मय लोक, न कहीं बखान कीजिए,
बाबा कौन राह से जाना है...............................

सारे दृश्यों की जननी यह शिव जी की माया है,
जितने साधक आराधक कोई भेद नहीं पाया है,
शिव की कृपा बिना कोई भी पार नहीं पातां है,
माया की लीला अगम्य, संसार नहीं ज्ञाता है,

अहं हो गया था नारद को चैन नहीं था मन में,
दौड़े-दौड़े चले गए ब्रह्मा तक, पितृ भवन में,
कह गए सारी कथा ब्रह्म ने बार-बार समझाया,
और कहीं अब मुँह मत खोलो, बारं-बार चेताया,

किन्तु भूत सिर पर सवार था, विष्णु लोक में आए,
रहा नहीं जब गया विष्णु को सब वृतान्त सुनाए,
अब तो हद हो गई विष्णु ने शिव को नमन किया था,
मोह नाश कैसे होगा, मन ही मन चयन किया था,

लौटे नारद बीच राह में अनुपम नगर निराला,
स्वर्ग लोक से भी सुन्दर मन भावन था छवि वाला,
मन में आया चलो चले, इसका अवलोकन कर लें,
नृपति शीलनिधि की नगरी का रूप नयन में भर लें,



राजकुमारी श्रीमती का लगा स्वयंवर ऐसा,
हुआ नहीं था, और न होगा आज स्वयंवर जैसा,
नारद जी को देख नृपति सिंहासन पर बैठाए,
कन्या के भविष्य के इच्छुक, नारद को दिखलाए,

मोहित हो गए रूप-राशि पर, कामुक भाव से बोले,
त्रिपुर श्रेष्ठ इसका पति होगा, मन ही मन वे डोले,
लौट पड़े वे विष्णु लोक में, रूप उन्हीं का माँगा,
हँसकर नारायण ने उसके मनोभाव को आँका,

सारा तन नारायण का था, मुँह केवल बन्दर का,
भ्रम था उन्हें मिटाना, जो था अहं भाव अन्दर का,
उधर-उधर जाते थे, जिस ओर दिखी जय माला,
शिव के गण उपहास उड़ते, मुँह था बन्दर बाला,

स्वयं विष्णु नर रूप में आकर जैसे पड़े दिखाई,
कन्या ने तत्क्षण वह वर को जय माला पहनाई,
काम व्यथा से पीड़ित नारद, विष्णु पर झल्लाए,
रूद्र गणों की बात मानकर दर्पण हाथ उठाए,

देखा तो अभिशाप दे दिया, छल जो किया गया है,
ऐसा ही दुःख पाओगे, प्रभु जो दुःख दिया गया है,
शिव जी की माया है नारद, मोह से मुक्त हुआ है,
सही दिशा में जाओ नारद, ज्ञान से युक्त हुआ है,

नारद मोह से जीव ग्रसित है, नारद मान लीजिए,
बाबा कौन राह से जाना है, पहचान लीजिए।





ॐ नमः शिवाय

महाप्रलय का स्वरूप और विष्णु की उत्पत्ति

महाप्रलय होने पर कुछ भी शेष नहीं रह जाता है,
सभी धर्म निष्कर्ष है देते कोई एक विधाता है,
कोई ऐसी शक्ति है, निश्चित जो संसार बनाती है,
पालन करती जीवन देकर, फिर से इसे मिटाती है,

ये तारे बह्माण्ड अनगिनत, किसने इन्हें बनाया,
शून्य लोक में, किसने इसको अब तक नाँच नचाया,

कहाँ है वह सर्वज्ञ, सृष्टि कर्ता, भू-नभ संचालक,
इन असंख्य जीवों का जग में कहाँ है वह प्रीतिपालक,
कहाँ आदि है, कहाँ अन्त है, कोई हमें बताए,
किन्तु मौन हो जाता उत्तर प्रश्न कौन सुलझाए ?

कुछ हजार वर्षों में ही ये मजहब धर्म बने हैं,
नियम निषेध बने हैं सारे वांछित कर्म बने हैं,
आस्था के आयाम जुड़े हैं श्रद्धा भक्ति जुड़ी है,
नश्वरता को देख युक्ति के साथ में मुक्ति जुड़ी है,

नाम रूप कुछ भी हम दें, अपने मतलब बाला,
इतना तो जरूर कहते हैं, है कोई ऊपर बाला,
उसकी मर्जी ही चलती है, गोचर और अचर में,
उसे हार कर याद किया करते हैं सभी अधर में,

बहुत दूर तक उस अनन्त तक जब है सोचा जाता,
बुद्धि न करती काम, सोचकर माथा है चकराता,
वर्तमान को सत्य समझ हम यही लौटकर आते,
कोई नाम रूप गुण कहकर माँथा सभी झुकाते,



जो भी हो आराध्य, उसी की पूजा हम करते हैं,
मन वांछित पूरा हो जाता, उसे नमन करते हैं,
नहीं कहीं टकराव, धर्म, मजहब सब यही बताते,
जिसको जो अनुभव से आया, सब हैं यही सुनाते,

किन्तू भूमि भारत की सुफला, मिला प्रकाश प्रथम है,
पश्चिम में फैला जाकर फिर भी दुनिया को भ्रम है,
लोभ-स्वार्थ के वशीभूत हमने ईश्वर को बाँधा,
खड़ी हुई दीवाल चतुर्दिक खड़ी हो गई बाधा-

कल्प बदलते जाते हैं कहता इतिहास हमारा,
अपनी धरती अपनी, होता है आकाश हमारा,
वेद-शास्त्र कहते आये हैं, जिसकी नकल हुई है,
जब-जब पाप बढ़े हैं अपनी धरती विफल हुई है,

बढ़ता जब विज्ञान विनाशक अस्त्र-शस्त्र बनते हैं,
महायुद्ध के अवसर आते और युद्ध ठनते हैं,
समय-चक्र चलता रहता है, परिवर्तन होते हैं,
वही फसल काटते, बीज जैसा जब भी बोते हैं,

भौतिकता के चकाचौंध में मानव भटक गया है,
महानाश के दलदल में जो पहिया अटक गया है,
लोभ मोह के फन्दे ने आँखों पर पर्दा डाला,
ऊपर चढ़ी सफेदी तन पर, मन तो काला-काला,

महा प्रलय होगा निश्चित, यह दृश्यमान बदलेगा,
काल दूत का महाचक्र रथ अकस्मात् निकलेगा,
होता आया है कल्पान्तर नई सृष्टि होती है,
फिर से नए सिरे से जीवन जीव दृष्टि होती है,

कुछ भी शेष नहीं होता तब अन्धकार आता है,
शून्य सिर्फ निःशब्द प्रणव का नाद सुना जाता है,
निराकार की इच्छा से ही मूर्त रूप होता है,
तब तक निराकार शून्य में निर्विकार सोता है।



आदि अन्त से रहित चिदात्मा अविनाशी कहलाता,
वही सदाशिव ईश्वर बनकर, सृष्टि धर्म का दाता,
होती शक्ति प्रकट उससे ही प्रकृति परा कहाती,
माया अम्बा, जगजननी, जगदम्बा है बन जाती,

होने लगती सृष्टि ब्रह्म शिव, विष्णु रूप बनते हैं,
कल्प-कल्प की कथा, कथा वाचक से हम सुनते हैं,
वही एक ॐकार जनक अक्षर समूह बन जाता,
आदि-अन्त का साक्षी, शब्दों से रखता है नाता,

शब्द ब्रह्म है, अक्षर-अक्षर शक्ति पुंज कहलाते,
ये ही स्वर ध्वनि लय क्रम-क्रम से ईश्वर है बन जाते,
एकाक्षर ॐकार मूल है, मन्त्र सभी अवयव है,
परमेश्वर शिव कालातीत चिरन्तन नित अव्यय है।







ॐ नमः शिवाय

सभी देवता तत्त्वतः एक ही हैं

नाम रूप तो भिन्न-हैं भिन्न हैं विधि-विधान हैं अपने,
श्रद्धा लगन समर्पण की विधि अलग बनाये जग ने,
जैसे देश-प्रदेश वहाँ की अलग-अलग भाषाएँ,
जैसे पाया सन्त जनों ने गढ़ दी परिभाषाएँ,

जहाँ जीव जग जीवन धारी सुख दुःख के हैं फेरे,
सूरज से मिलते प्रकाश क्षण मिलते रहे अँधेरे,
प्रकृति के रूपों के चलते हुए बहुत परिवर्तन,
आघातों के चलते मन में, हुए मनन फिर चिन्तन,

जहाँ बुद्धि थक जाती होगी शक्ति जो काम न आई,
ईश्वरीय शक्तियाँ वहीं पर होंगी पड़ी दिखाई,
यह तो सच है उसी शक्ति ने जब प्रभाव दिखलाया,
विवश हुआ होगा मानव मन, तन जब काम न आया ।

विश्वासों ने नाम दे दिया, बन गई जब कुछ दीवारें,
कैद किया होगा ईश्वर को ले-ले नाम पुकारे,
जड़ चतन में आत्म तत्त्व है सृष्टि की ऐसी माया,
सब पर पड़ी समान रूप में परम शक्ति की छाया,

कोई कहीं जरूर शक्ति है, जो है विश्व चलाती,
पर हित करती पालन करती रचती और मिटाती,
शक्ति-सुधा वह मूर्तिमान हो जीव को यहाँ पिलाती,
ईश्वर के रूपों में शरणागत को राह दिखाती,

हरि हो, हर हो, ब्रह्म विष्णु हो, हों जगदम्बा काली,
प्रभु हो या अल्लाह, खुदा, सबकी कथा निराली,
एक वही परमात्म तत्त्व है, शासन वही चलाता,
नहीं दिखाई पड़ता फिर भी, सच्ची राह दिखाता,



मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा हो, प्रभु का गिरिजा घर हो,
भिन्न-भिन्न धर्मों का पावन जो भी पूजा घर हो,
अन्तर मन हो पावन निर्मल तो वह मिल जाता है,
वही पिता है, वन्धु सहोदर, और वही माता है,

सभी देवता मन मन्दिर के प्रीति भक्ति के इच्छुक,
देने वाले सभी सन्त मन शेष सभी हैं भिक्षुक,
किसी नाम से इसे पुकारें, देर नहीं करता है,
सभी बराबर है उस घर में, भेद नहीं करता है,

सभी तत्त्वतः एक हैं, अन्तर देश-काल का होता,
शिव जैसा देवता परार्थी कभी नहीं है सोता,
जगे अहर्निश, विश्व हेतु, कल्याण किया करता है,
सहज प्रीति वश भक्तों को वरदान दिया करता है,







ॐ नमः शिवाय

शिव पूजन-विधि

सभी वर्ण के लोग जहाँ पर शिव के आराधक हैं,
योगी, सन्यासी, विरक्त तक शंकर के साधक हैं,
सनत्कुमार कभी रहस्य यह व्यास को कहीं सुनाते,
वही भेद मुझको जो व्यास ने कहा ज्ञात हो जाते,

सुना जिसे उपमन्यु सन्त ने, कृष्ण को कथा सुनाई,
ब्रह्मा ने नारद को शिव की पूजन-विधि बतलाई,
सभी सुखों की प्राप्ति यहाँ शिव पूजन से हो जाती,
शिवार्चन से बाँझ कोख भी देर नहीं भर जाती,

यह शरीर है घर विकार का परिमार्जन तो कर ले,
फिर से चिन्तन हो शंकर का पूजन विधि वत् कर ले,
जब तक तन-मन पावन होता नहीं है पूजा वर्जित,
प्रीति-रीति से भक्ति भाव से शिव को रहे समर्पित,

करना हो यदि अवगाहन गंगा गंगा नित बोले,
तन-मन के कल्मष सारे गंगा के जल से घोले,
गंगा जैसी पावन धारा कहीं नहीं मिलती है,
जन्म-जन्म की पाप की गठरी गंगा में घुलती है,

नाम-मात्र लेने से गंगा आ जाती है जल में,
देर न करती तन-मन को पावन करती है पल में,
शिव की प्रियतमा गंगा है, साथ सदा रहती है,
तीनों लोकों में त्रिकाल वह एक भाव बहती है,

पहले गण पति का पूजन कर धूप-दीप दिखलायें,
शिव का करके ध्यान मन्त्र जप नमः शिवाय सुनायें,
नन्दी गण को नमन करें फिर जगदम्बा का ध्यान करें,
ओंकार पंचाक्षर के द्वारा शिव का आह्वान करें,



समय मिले शिव क्षेत्र में जाकर कुछ दिन-रात बितावें,
औढर दानी कुछ न चाहते दीन-दशा दिखलावें,
शिव चरणों में प्रीति सही और भक्ति हो सच्चे मन से,
खुश हो जाते औढर दानी मन के भोले पन से,

निर्विकार शिव, निश्छल मन से भजन किया जो करता,
शिव की कृपा है निश्चित होती मनन किया जो करता,
मन ही तो है अपना धन शिव जी को भेंट चढ़ाएँ,
अंजन है शिव-भक्ति-भाव से नयनों में रच जायें।



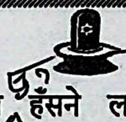




ॐ नमः शिवाय

शिव-सती विहार

आ गई है वर्षा ऋतु मेघाच्छन्न दिशा-दिशा,
बहती प्रचण्ड वेग वायु है गगन में,
कदम्ब के मकरन्द युक्त जल के छीटे चलते,
भरते हैं क्षुब्ध व्यथा विरही के मन में,
सूर्य चन्द्र दोनों ही लुप्त हुए लगते हैं,
मेघ गर्जन, विद्युत पात करते भुवन में,
हे शिव जी, मेरू शिखर लगते यमराज जैसे,
नृत्य करती है मृत्यु निर्जन से वन में,
मेघों के साथ पंक्ति उड़ती बगूलों की,
लगती है फेन जैसी यमुना के जल में,
रात्रि का ये अन्धकार बलयाकार बिजली से,
लगता है रश्मिहार निशा के आँचल में,
जैसे पर्यियों से घिरा सागर सुशोभित हो,
नाना रंग मेघों से घिरा मन भूतल में,
रत्नभरी थाल लिये रजनी पूजा में रबड़ी,
प्रकृति युग बाँध रही जैसे हो पल में,
मेघ-ध्वनि से हर्षित ये मोर मन्दरा चलके,
नाँच रहे मुग्ध मगन पर को फैलाये,
चातकों की मधुर ध्वनि से गुंजित है गगन लोक,
भयाक्रान्त मन मेरा चैन नहीं पाये,
हे शिवजी कहिए तो एक बात मन की कहूँ,
छोटा-सा घर अपना कहीं भी बनायें,
हिमगिरि में, काशी में अथवा पृथिवी पर कहीं,
जहाँ चाहे चल कर के घर हम बसायें,



दाक्षायिनी की बात सुन हँसने लगे महादेव,
भाल पर विराजत चन्द्र लगा जगमगाने,
गंगा से उठने हिलोर लगी बार-बार,
नाग देवता भी लगे जीभ लपलपाने,
डमरू से नाद उठा नन्दी जी पागुर करें,
भैरव भैरवी जी लगे नाँचने और गाने,
घर की थी कमी, लगे यह भी पूरी होगी,
शृंगी, भृंगी भैरवी लगे गुन गुनाने।
इच्छा है तुम्हारी वही इच्छा है हमारी प्रिये-
चलो उस जगह पर जहाँ मेघ नहीं जाये,
पावस में मेघ ये पहुँचते नहीं गिरि ऊपर,
नीचे ही अपनी ये भंगिमा दिखाये,
चलो सुमेरू पर ही जहाँ चाहो रह लेंगे,
सोने के पंख युक्त पक्षी जहाँ गाये,
सिद्धों की नारियाँ, मणि जटिल जहाँ आसन-भूमि,
होकर प्रसन जहाँ भेंट में चढ़ायें,
प्रतिदिन मेनका भी जहाँ रखेंगी प्रसन्न हमें,
हिमपति के दरबारी हाजिरी बजायेंगे,
कोकिला कल कंठी सुनायेगी मधुर राग,
सुरभित सुमन बसन्त पाँव में चढ़ायेंगे,
सरल शीतयुक्त कमल कमलिनी हिमालय के,
सुबह शाम-पूजन में तेरे लिये आयेंगे,
ऐसा सुरम्य-स्थल ओर न मिलेगा कहीं
जहाँ हम दोनों सुखी जीवन बितायेंगे,
मुनियों, यातियों से युक्त यहाँ यहाँ जो हिमालय है-
हिंसक जीव साधु के स्वभाव से है जीते,
कन्द-मूल फल खाकर करते जीवन-यापन,
प्रदूषण मुक्त जल वे हैं झरनों का पीते,



शाखा अरवग्रोटों की नृत्य जहाँ करती हैं,
करते सेवा जन की बाघ और चीते,
गए शिव-सती जहाँ जीव-जन्तु जा न सके,
दस हजार वर्ष जो विहार में थे बीते,
ऐसी सुरम्य जगह धरती पर और नहीं,
चकवाक, हंस, शंकु, सारस के कलरव,
क्रौंच और कोकिला की मीठी तान आठ पहर,
यती मुनि किन्नर देव भैरवी-संग भैरव,
भ्रमण करते यत्र-तत्र मन भावन सती-शिव,
काल जहाँ ठहर गया, ठहर गया सौष्ठव,
जय हे सती शिव सहज कृपा करें भोले नाथ,
अंजन अकिंचन को दे दें सुख वैभव







ॐ नमः शिवाय

मोक्षशास्त्र का रहस्य

तत्त्व ज्ञान के ज्ञाता, विरले विरले ही होते हैं,
शेष समूचे मोहग्रस्त हो जगकर भी सोते हैं,
प्रीति भक्ति से साधक पा जाते मेरे दर्शन,
तत्त्व ज्ञान विज्ञान सत्य को जान रहे योगी जन,

भक्ति-ज्ञान में भेद नहीं है जिसको ज्ञान हुआ है,
वही सुखी है, आत्मतुष्ट है, वही महान हुआ है,
जन्म-मृत्यु का चक्र जीवन-जग में चलाता रहता है,
अज्ञानी भवसागर में मोहित होकर बहता है।

इच्छाएँ ही जन्म है लेती, इच्छाएँ हैं बन्धन,
इच्छाओं के परिपोषण में चलता रहता जीवन,
जहाँ प्रीति है वहीं भक्ति है, उसमें मेरा घर है,
मोक्ष भक्त को ही मिलता है, शेष दृश्य नश्वर है,

यह तो सच है सभी जानते अहंनाश का घर है,
लोभ, मोह, छल, काम सभी कुछ पाले तन नश्वर हैं,
जन्म हुआ है तो निश्चित है मरण कभी होना है,
होनी तो होती रहती है, क्या हँसना रोना है,

श्रवण, भजन, कीर्तन से वन शिव चरणों का जो करते,
दास्य, शिवार्चन और वन्दना सच्चे मन से करते,
संख्य-समर्पण सभी मोक्ष के द्वार कहे जाते हैं,
ईश्वर लीन जीव जो बनते वही मोक्ष पाते हैं,

मंगल और अमंगल दोनों, हरि इच्छा के फल हैं,
नास्तिक, आस्तिक दोनों लड़ते सबमें भ्रम केवल है,
अहं त्याग कर मोह छोड़कर शून्य भाव जो रहते,
वे ही पाते मोक्ष भक्ति सुर नर मुनि आए कहते,



अटल भक्ति है आत्म समर्पण, माया के इस घर में,
नश्वरता का करें विसर्जन सर्व व्याप्त ईश्वरा में,
भक्ती का हित करता रहता, काल दूत बन जाता,
महाकाल मैं रूद्र रूप में हूँ हथियार उठाता,

आशुतोष औढरदानी बन जीवन देता रहता,
जो भी मेरे भक्त उन्हीं की सुधि मैं लेता रहता,
जो भी यह संसार आज है, पड़ता यहाँ दखाई,
जिसे महामाया ने रचकर माया है फैलायी

किसमें है सामर्थ्य यहाँ जो इसे पार कर जाये,
पापों के इस महा सिन्धु से कभी सहज तर जाये,
बिना भक्ति के प्रीति न मिलती, लोकनीति कहती है,
जहाँ भक्ति है, वहीं प्रीति की गंगा भी बहती है,

सुनकर शिव की मोक्ष दायिनी वाणी, सती भवानी,
होकर तन्मय प्रणत हो गई सम्मुख औढर दानी,
बोलो रे मन भ्रम छोड़ो, ॐ नमः शिवाय,
ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय।





ॐ नमः शिवाय

दक्ष और शिव के विरोध का कारण

तीर्थ राज संगम प्रयाग में हुआ एक सम्मेलन,
सभी सन्त ऋषियों, मुनियों, देवों के पाकर दर्शन,
धन्य हो गए पुरजन, परिजन सुनकर अमृत वाणी,
तीनों लोक, त्रिकाल निदर्शक की वाणी-कल्याणी,

निगमागम आए, ब्रह्मा भी सपरिवार थे आए,
शिव जी अपने सभी गणों के साथ सपत्नी आए,
शिव के दर्शन पाकर सारी सभा ने नमन किया था,
ब्रह्मा ने स्तुति की, सबने आसन उच्च दिया था,

महातेजस्वी दक्ष प्रजापति वहाँ पधारे,
सबने किया प्रणाम प्रणत थे विज्ञ सभासद सारे,
किन्तु एक शिव ने ही उनकी ओर न दृष्टि उठाई,
देख प्रजापति की आँखों में क्रोध अग्नि लहराई,

समझ गए अपमान किया है मेरा शिव शंकर ने,
भरी सभा ने नमन किया, अपमान किया शंकर ने,
दुर्वचनों के तीक्ष्ण बाण से करने लगे प्रहार,
झड़ी लग गई व्यंग वाण की, जुड़े तार पर तार,

क्रोधी मन की बुद्धि नष्ट हो जाती ज्ञान है जाता,
और विवेक नहीं रहता है क्या से क्या कह जाता,
बोला - "शिव है वध्य, सभा से बाहर तुरत निकालो,
यह मसान वासी है, इसको सभाच्युत कर डालो,

चमचे-वेलचें दक्ष समर्थक सबने किया समर्थन,
जितने थे शिव सत्यहीन जो दक्ष के करते पूजन,
नन्दी की आँखों में सुनकर उठी क्रोध की जवाला,
दिया दक्ष को शाप, सभा से शिव को गया निकाला,



शिव को कर के याद यज्ञ भी जहाँ सफल होते हैं,
तीर्थों के भी जल चिन्तन से गंगाजल होते हैं-
आदि देव हैं महादेव हैं, वन्दनीय अग जग में,
शिव-विहीन ठोकर खाता है जीवन के पग-पग में,

तर्क वितर्क लगा जब होने, बढ़ गई बात अरुचिकर,
दक्ष अहंकारी ने समझा नहीं मर्म क्या शंकर,
शंकर द्रोही, ढोंगी, कपटी, मोह ग्रस्त कुविचारी,
धन के लोभी कामी होते, भले हो वेदाचारी,

सुनकर वाद-विवाद शाप प्रतिशाप लगे शिव हँसने,
नन्दी मेरे चलते तुमने शाप दिए हो जितने,
नहीं चाहिए वेद निष्ठ वे यज्ञ कराने वाले,
हव्य-गव्य भी पावन पथ से हैं वे पाने वाले।

तुमको तो है आत्म ज्ञान मैं शापित कभी न होता,
मैं ही रहता यज्ञ भाग में तभी सफल वह होता,
अंग-अंग में व्याप्त हूँ नन्दी आदि अन्त में मैं हूँ,
जीव मात्र में, तप-जप में मैं, साधु सन्त में मैं हूँ,

जो भी दृश्यमान है नन्दी, सब कुछ लय हो जाता,
पाप ताप अभिशाप कृपा से मेरी क्षय हो जाता,
विघ्न हो गया पैदा शिव जी अपने नगर पधारे,
बढ़ गई आगे बात शत्रुता ने सब काम बिगाड़े,

होनी होकर ही रहती है, किसमें बल जो रोके,
दुश्मन हो जाते शुभचिन्तक, जब अपने ही होके,
खेल महामाया का ही है, शंकर की माया है,
देर-सबेर अन्त होता है, जीव जहाँ आया है,

ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय, जपो रे मन मतवाले,
शिव ही गति है शिव ही पथ है भ्रम में चलने वाले,
जो पाया है उसे सौंप दो, क्या है मेरा तेरा,
व्यर्थ लगा है, मोह लोभ का यह बन्धन यह घेरा,





ॐ नमः शिवाय

दक्ष-यज्ञ शिव को निमंत्रण नहीं, दधीचि का विरोध

लौट कहाँ पाते हैं बीते दिन, बीते दिन आग जो लगाते हैं,
वर्तमान के स्वर्णिम सुख वैभव खा जाते राख में मिलाते हैं,

अहंकार में दक्ष प्रजापति मद में इतना चूर हुआ,
शिव के प्रति निर्ममद्वेषी बन, था विवेक से दूर हुआ,
अद्भुत, अनुपम एक यज्ञ का अनुष्ठान कर डाला,
सुना सभी ने हिम पति का यह होगा यज्ञ-निराला,

शिवमाया से प्रेरित होकर सुर नर मुनि आचारी,
पहुँचे लेने भाग सिद्ध साधक गण वेदाचारी,
आ पहुँचे अगस्त कश्यप, भृगु, अत्रि व्यास जी आए,
वामदेव, भरद्वाज महामुनि, ऋषि दधीचि भी आए,

पैल पराशर, गर्ग और भार्गव के पाकर दर्शन,
कंक ककुत्सित, त्रिकसुमन्त वैशम्पायन मन भावन,
अन्य देवता लोकपाल, श्रुतिवेद स्मृति सब आए,
सपरिवार ब्रह्मा आमंत्रित देख दक्ष हरसाये,

विष्णु लोक से आ पहुँचे हर्षित बैकुण्ठ निवासी,
सबको आदर मान मिला, पहुँचे विरक्त सन्यासी,
कनरवल के उस महायज्ञ में, भृगु ऋत्विक् के भागी,
मरूद्गणों के सहित विष्णु ब्रह्मा उसमें सहभागी,

यज्ञ देवता स्थिर मन थे, वेद रूप मुनि तत्पर,
अग्नि सहस्त्रों रूप में आहुति लेते हँस-हँस कर,
और हजार अठासी ऋषि गण थे आहुति के दाता,
चौसठ सहस्र जहाँ पर ऋक् थे, महायज्ञ उद्गाता,

इतने ही अध्वर्यु और होता करते मनसायन,
नारद जी भी वीणा लेकर करते थे हरि गायन,
सभी देव राजर्षि और ब्रह्मर्षि वहाँ त्रिभुवन के,
सौम्य उपस्थिति से सुख देते, साध्य दक्ष के मन के,

किन्तु द्वेष वश सुता सती को उसने नहीं बुलाया,
शिव को हीन कपाली कहकर, उसने था ठुकराया,
यद्यपि बेटी सती प्राण से बढ़कर थी प्यारी,
हिमाचल की मणि थी, अनुपम थी वह राजदुलारी,

शिव जी थे दामाद, तीन लोकों के पूज्य चरण थे,
महादेव को तिरस्कार, बीते दिन ही कारण थे,
परम वैभव मुनिवर दधीचि को कभी पड़ी दिखलाई,
सती और शिव कहीं नहीं थे, बात समझ में आई,

बीते दिन के चलते शिव को नहीं है गया बुलाया,
शिव विहीन यह यज्ञ अधूरा, क्या है शिव की माया,
शिव की कृपा से मंगल होता, सभी विघ्न कटते हैं,
शिव की कृपा हुई तो सारे भव बन्धन हटते हैं,

आदर सहित बुलाते शिव को, दे देते उच्चासन,
ब्रह्मा, विष्णु बड़े प्रिय उनके वे ही है प्रिय भाजन,
सच कहता हूँ शिव विहीन यह यज्ञ अधूरा होगा,
दक्ष तुम्हारा कोई सपना, कभी न पूरा होगा।

सुन दधीचि की उचित मंत्रणा, क्रोध दक्ष का फूटा,
बंध धैर्य का यज्ञकरण का तत्क्षण जैसे टूटा,
अहंकार वश हँसकर बोला, विष्णु यज्ञ के स्वामी,
फिर कैसी न्यूनता यहाँ है सभी देव अनुगामी,

रूद्र का कहाँ प्रयोजन है, वे आये और न आये,
फर्क नहीं पड़ने वाला है, फिर क्यों उन्हें बुलाये,
आज्ञा थी ब्रह्मा की मैंने सती को व्याह दिया था,
शिव को कन्या देकर मैंने धर्म निर्वाह किया था,



वे अकुलीन मसान के वासी, थे अवधूत कपाली,
माता-पिता से हीन अघोरी गति थी अधम कराली,
सुनकर बात अनर्गल शिव की निन्दा सही न जाती,
मौन हो गए मुनिदधीचि थी मन की व्यथा न जाती,

क्रोधित मुनि उठ खड़े हो गए और शाप दे डाला,
नष्ट-भ्रष्ट तुम हो जाओगे, दुष्ट दक्ष मतवाला,
कभी न होगा पूर्ण यज्ञ यह शिव अपमान किया है,
अमृत के भ्रम में पगले तुमने विषपान किया है,

तुम्हें अहं है ज्ञान बुद्धि से जितना दूर हुआ है,
व्यर्थ दिखावा यज्ञ तुम्हारा मद में चूर हुआ है,
देर न होगी महाप्रलय का दृश्य जल्द आएगा,
सारा सुख वैभव क्षण भर में धूल में मिल जाएगा।







ॐ नमः शिवाय

पिता श्री दक्ष के यज्ञ में जाने के लिए सती का शिव से आग्रह

गिरि गंधमादन पर सुन्दर वितान मध्य-
सखियों के संग क्रीड़ा मगन थी।
देव-गन्धर्वों को, ऋषियों को मुनियों को-
भाग लेने यज्ञ में सवारी गगन की।
देखा सती ने रोहिणी को शृंगार किये-
पूछा विजया से कहाँ जा रहे हैं सारे।
सूर्य चन्द्र, सुर, ग्रह, नर जाते प्रसन्न मन,
कौन-सी सभा में जाते तारे-सितारे।
विजया ने चन्द्रमा से पूछा - "प्रयोजन क्या है ?"
चन्द्रमा ने दक्ष यज्ञ की कथा तब सुनाई।
सती हुई विस्मित और आहत हुई मन ही मन,
माता-पिता भूल गए, पाती भी न आई।
तुरत गई शिव के समीप, क्या है कारण कि,
नैहर कैं उत्सव में सुधि न मेरी आई।
शिव जी थे भूथपो से घिरे जब सभा के मध्य,
व्यथित सती के देख शंका कुछ समाई।
नाथ सच बतायें, क्या कारण है समझायें,
यज्ञ में तो सुहृदों को जाता है बुलाया।
सगे-सम्बन्धियों को, मित्र, शुभचिंतको को,
प्रीति भरा पत्र सदा जाता भिजवाया।
बेटी-दमाद ने है कौन-सा अपराध किया,
माता-पिता के द्वारा गया ठुकराया।

चलिए हम दोनों चले, नैहर का नाता है,
भले भूल से ही कोई पत्र न आया।
देवी ! श्वसुर मेरे द्वेष भाव रखते हैं,
जानते थे प्रिय जिनको वे गए बुलाये।
बिना स्नेह-पत्र मिले, जाना नहीं है अच्छा,
यज्ञोत्सव हो तो नहीं जाना, बिन बुलाये।
होगा अपमान, तिरस्कार होगा सहना हमें,
आत्मग्लानि होगी और होगा पछतावा।
अहंतुष्ट अभिमानी दक्ष की हे बुद्धि भ्रष्ट,
इसीलिए हमको न आया है बुलावा।
कितना हूँ व्यथित प्रिये व्यंग-बाणी कितने लगे-
चीर करके छाती मैं कैसे दिखाऊँ।
कितने अपमान जनक बातों से आहत हूँ-
कैसे सुनाऊ मैं फिर से दुहराऊँ।
सारे वृतान्त सुन के सती मर्माहत हो-
बोली - "पिता के भाव पढने मैं जाऊँगी।
पति का अपमान है असह्य अब मेरे लिये-
बिन बुलाए जाकर भी बदला चुकाऊँगी।
दीजिए अब अनुमति, वह नैहर है जन्मभूमि,
बचपन का घर मेरा खींच रहा मन को।
माता मेरी नहीं होगी भूली सुता का स्नेह,
क्रीड़ा भूमि देखूँगी, पिता के भवन को।
सखियों-बहनों के साथ होगी भेंट अँकवार-
गिरिपति के आँखों में स्नात करूँ तन को।
शिव ने कहा कि जाओ, मैं तो नहीं जा पाता,
करो श्रृंगार, साथ किया भैरव गण को।
चला है रथ जब गगन-पथ से दक्षपुरी,
भैरव भैरवी हजारों साथ-साथ जाते।



नाँचते और कूद-फान करते हैं गण सारे,
करते शिव गान, खेल मोहक दिखाते।
पहुँची सती तो यज्ञ अपने चरम पर था,
माता-पिता दोनों ही वेदी के पास थे।
देव और पंडित आचार्य ऋषि मुनिसारे,
दर्शक, याचक, साधक सिद्ध सभी साथ थे।
माता, बहनों, सखियों, सबने सत्कार किया-
किन्तु दक्ष पापी ने आँख न उठाई।
आँगन से नन्दी के साथ सती व्याकुल हो-
जैसे सभा के बीच आतुर हो आई।
सभी देवताओं के भाग वहाँ पृथक्-पृथक्,
शिव जी का भाग नहीं पड़ा जब दिखाई।
भड़की क्रोधाग्नि लपट उठने लगी आँखों से,
क्रोधित हो दक्ष से बात दुहराई।
"शिव से तो दूर होते विघ्न और बाधा सभी-
महाअधम तूने शिव की गरिमा ठुकराई।
तुमको है ज्ञान नहीं; शंकर त्रैलोक पूजित,
सारे देव-देवी उनको माँथा झुकाते हैं।
विश्व तो अयाची है; प्रीति भक्ति भूखे हैं,
भक्त विना माँगे भी चारो फल पाते हैं।
देवताओं, ऋषि मुनियों और यज्ञ भागी सभी,
सुख भोग सारे हो-स्वार्थ हेतु आए।
तुम भी तो उदर पूर्ति हेतु हुए ज्ञान भ्रष्ट,
अहंलीन दक्ष के इस यज्ञ में हो आए।
भूल गए सभी कृत्य, शिव की हितगामी कथा,
शिव निन्दक, निश्चित ही नरक लोक जाते।
बिना शिव की कृपा मिले कटता नहीं भव बन्धन,
सर्वेश्वर शंकर अशयरण पर रीझ जाते।



क्रोध से थी खींच रही बार-बार दीर्घ श्वासें,
नीति वचन कह शिव की महिमा बताती ।
मन ही मन शंकर को सती याद करने लगी,
जग जननी क्रोधाविष्ट क्षण-क्षण हो जाती ।



अच्छा हो सुख कामी जो हो यज्ञभागी यहाँ,
बिना पाये दक्षिणा ही तुरत भाग जाओ ।
देर न हो तुरत उठो, होगा विध्वंस यज्ञ,
थोड़ा-सा समय शेष तुरत जाग जाओ ।
आ रहे हैं महारूद्र ताण्डव अब शुरू होगा,
नष्ट-भ्रष्ट सारा यज्ञ अब तो हो जाएगा ।
अहं और मद का अब नाश होगा देर नहीं,
शंकर का काल रूप यहाँ देखा जाएगा ।



इतना कह नमन कर के शिव को सती ने सोचा-
इस तन से कैसे मैं शिव-समीप जाऊँगी ।
कैसे अपमान जनक दक्ष की व्यवस्था की,
सत्य कथा शिव जी को जाकर सुनाऊँगी ।
क्षणभर में मौन होकर उत्तर दिशा में बैठ,
अपने अतीत वर्तमान को मनन कर ।
करती है याद शिव को, देर मत करो हे नाथ,
कृपा करो हे शिवजी आशुतोष शंकर ।





ॐ नमः शिवाय

सती का देह-त्याग

होकर मौन, आचमन करके, शुद्ध वसन कर धारण,
योगमार्ग में लीन हो गई, शिव का कर उच्चारण,
नाभिचक्र से ऊपर उठकर हृदय-स्थित ले आसन,
भौंहों के ही मध्य त्रिपुटी में होकर स्थिर मन,

तन विकार से रहित, स्वतः उठ गई अग्नि की ज्वाला,
जो था मिला शरीर योग से उसे भस्म कर डाला,
लगी काँपने धरती तत्क्षण आसमान थर्राया,
जन-मानस में जिधर देखिए हाहाकार था छाया,

अकस्मात् साठो हजार शिव गण जो साथ थे आए,
क्रोधित हो तैयार हो गए, आयुध हाथ उठाए,
उच्च स्वर में चिल्लाते, धिक्कार के शब्द सुनाते,
कई हजार गणों को देखा, स्वयं को वहाँ मिटाते,

यज्ञाहुति से ऋभु यज्ञाग्नि जो बाहर निकले,
शिव के गण भी आयुध लेकर युद्ध हेतु थे सम्हले,
युद्ध भयंकर हुआ, मौत की आहुति होती जाती,
विघ्नों से भर गया यज्ञ यह होनी है हो जाती।





ॐ नमः शिवाय

आकाशवाणी

दुराचारी दक्ष सुनो, गौर करो फिर से तुम,
अहं, दंभ, मद है वहाँ बुद्धि भ्रष्ट होती,
जो भी दिखावा है, भ्रम है, छलावा है,
झूठी मनोकामना की विधि है नष्ट होती,
ऋषि दधीचि तत्त्वज्ञानी स्वाभिमानी जीवन मुक्त,
उनकी बातों पर जो ध्यान दिया होता,
शिव जी की गरिमा को ठेस न पहुँचती कभी,
कैसा भविष्य है, अनुमान किया होता,
प्राणों से बढ़कर प्रिय बेटी सती का जो,
भूलकर भी नहीं तिरस्कार किया होता,
इर्ष्या, द्वेष, छोड़के, छलहीन मन मानस से-
बेटी थी थोड़ा भी प्यार दिया होता,
किया है अनादर शिव सती का अपमान किया,
अपने धन-बल का न अभिमान किया होता,
मंगल के दाता शिव सती शुभ कारिणी है,
रंच मात्र मन से सम्मान किया होता,
विश्वमाता सति भुक्ति-मुक्ति देने वाली है,
वे ही आदि माता, आदि शक्ति हैं कहाती,
सृष्टि और पालन में रहती हैं तत्पर सदा,
इच्छा जब होती संसार को मिटाती,
ऐसी शक्तिरूपा, परा प्रकृति को न जान सका,
महादेवी माता को नहीं था बुलाया,
मातृ-पितृ स्नेहवश गर आ ही गई नैहर तो,
उचित भाग देकर भी नहीं बैठाया,



मात्र शिव-दर्शन से सफल होते मनः काम,
वे ही हैं त्रिभुवन के स्वामी प्रतिपालक,
कल्पान्तर होते हैं; जीव जग बनता है,
शाश्वत शिव-शक्ति सारे जग के संचालक,
शिव का विरोधी तो कहीं का न रह पाता,
जो भी तेरे रक्षक हैं; नहीं काम आयेंगे,
जिस दिन शिव जान जायें; सती-दहन हो गया है,
सारे शक्ति पुंज देव हवा हो जायेंगे,







ॐ नमः शिवाय

सती दहन सुन शिव जी का वीरभद्र को प्रकट करना

शिवगण परास्त होकर भागे शिवजी की शरण,
त्राहिमाम्, त्राहिमाम् जाकर सुनाये,
सभी देव सहभागी, दक्ष के समर्थक थे,
चौदहों भुवन से जो यज्ञ में थे आए,
होके तिरस्कृत सती आपे से बाहर हुई,
निन्दा अपमान उन्हें क्रोधित कराया,
योग में स्थित होकर नश्वर इस तन को,
उन्होंने समीप यज्ञशाला में जलाया,



भृगु जी के मन्त्रों से जो महावीर पैदा हुए,
शिव गणों को उन सबने युद्ध में हराया,
भाग कर के आए हैं, शेष गण समक्ष आप,
कुछ गणों ने खुद को था कटकर मिटाया,
सुनकर के सारी कथा उपजी शिव मन में व्यथा,
याद करके नारद को पास में बुलाया,
नारद ने. वृतान्त सारा एक-एक करके कहा,
शिव जी को आद्योपान्त वर्णन सुनाया,
तत्क्षण हो महारौद्र (रूप) जटा से उखाड़ केश,
क्रोधावेश में शिव ने पर्वत पर मारा,
दो खण्ड तुरत हुए पर्वत मन्दराचल के,
महाप्रलयंकारी शब्द वायु ने उचारा,
प्रकट हुए वीर भद्र, महामयकारी वीर,
पृथ्वी भी काँप रही गर्जन के स्वर से,



अंगारे टूट रहे तारे ग्रह भाग रहे,
आग भी बरसती ले लपट को अम्बर से,



काली कराली विकराली महाकाली हो,
दिशा दिशा भय विह्वल कौन है जो रोके,
वीरभद्र महाकाल, शंकर का मानस पुत्र,
चल पड़ा जो युद्ध को तो कौन है जो टोके,
बोलिए हे नाथ अभी दीजिये आदेश मुझे,
सारे ब्रह्माण्ड को मैं मिट्टी मिलाऊँगा,
सूर्य, चन्द्र, ग्रह, तारे सबको मैं चूर्ण करूँ,
कहिए तो यम को भी बाँध यहाँ लाऊँगा,



आपही की शक्ति से कृपा से हूँ वीरभद्र,
आपके आदेश की अब मुझे है प्रतीक्षा,
आप ही के अंश से है मेरा प्रादुर्भाव हुआ,
आ गया है समय, होगी मेरी परीक्षा,
"जाओ और दक्ष-यज्ञ नष्ट कर करके आओ शीघ्र,
जो भी यज्ञ भागी हैं सबको जला दो,
जो भी हो रक्षक उस अहंकारी-दक्ष का हो,
सबको विनष्ट करो मिट्टी मिला दो,
जो भी गण साथ चले महाकाल जैसे थे;
दस हजार सिंहों से युक्त हुआ रथ था,
दस हजार भुजा वाला सर्प को लपेटे हुए,
सारा आकाश भुवन निर्विघ्न पथ था,
काली कात्यायनी, ईशानी चामुण्डा रूप,
मुण्ड मर्दिनी भद्रा रूप महाकाली,
भद्रकाली त्वरिता वैष्णवी नवी दुर्गा साथ,
साथ चली युद्ध हेतु कालिका-कराली ।

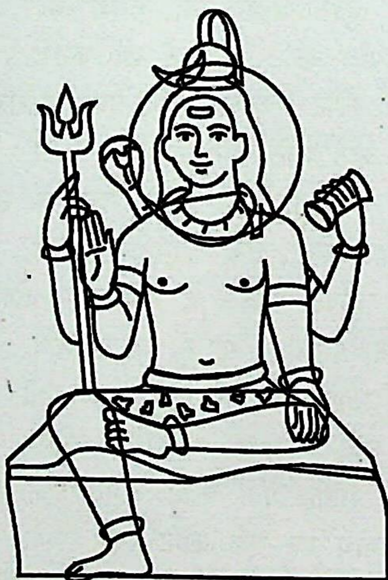


शंखिनी और डाकिनी, भूत-प्रमय सभी साथ चले,
गुह्यक-कुष्मांड, चर्पट, चटक, ब्रह्म राक्षस,
भैरव, क्षेत्रपाल सभी सेना में शामिल थे,
एक-एक नाग तक्षक, जीवों के भक्षक,
चौसठों योगिनियों का महा काल रूप देख,
धरती, आकाश सभी लगे थर थराने,
भूचर, नभचर, जलचर, गोचर, अगोचर सभी,
महाप्रलय जान लगे घर से पराने,
शंकुकर्ण दस करोड़ केकराक्ष दस करोड़,
विकृत ले आ़ठ कोटि गणों को चला था,
चौसठ करोड़ गण साथ ले विशाख चला,
पारियात्र नौ करोड़ गण संग निकला था,
सर्वोकक छः करोड़ विकृतानल छः करोड़,
श्रेष्ठ ज्वाला बारह करोड़ का था नायक,
साथ में समान के थे सात कोटि गण योद्धा,
दुद्रम आठ कोटि गण का अधिनायक,
कपालीश पाँच कोटि मन्दारक छः करोड़,
कोटि कुण्ड एक-एक करोड़ लेकर,
चिष्ट, भोष्ट आठ कोटि, वीर सात कोटि लेकर,
पिप्पल हजार कोटि गण के साथ तत्पर,
आवेशन आठ कोटि, चन्द्र तापन आठ कोटि,
कुण्ड पर्वतक के साथ आठ कोटि गण थे,
काल कातक महाकाल सौ सौ करोड़ साथ,
अग्निकृत नौ करोड़ गण भी भीषण थे,
आदित्या मूर्धा धनावह एक-एक कोटि,
सन्नाह एक कोटि कुमुद एक कोटि गण,
कोकिल अमोध एक-एक कोटि साथ लिये,
काष्ठा, मुकेशी गूढ़ करने चले थे रण,



गणाधीश नायक सुमन्त्रक सन्नातक भी,
कोटि-कोटि गण शूरवीर थे भयानक,
मधु पिंडा, नील, पूर्णभद्र, चतुर्वक्त्र सभी,
गण थे असंख्य शूरवीर संग्रामक,
अन्य जातियों के भूत-प्रेत जिन्न अट्टहास करें,
वीर भद्र चला घोर संग्राम करने,
कौन है समर्थ रोके वीरभद्र के पथ को,
शंकर के गण लगे कुहराम करने,
होगा अब महानाश महाप्रलय होगा अब,
जीव मात्र सभी लगे अनुमान करने,
दक्ष का अब नाश होगा, इसमें सन्देह नहीं,
गणों का समूह लगा जय-गान करने।







ॐ नमः शिवाय

क्या होगा परिणाम, बुरे लक्षण सब पड़े दिखाई,
वीरभद्र की अतुलित सेना दत्तपुरी में आई,
उल्कापात्र लगा होने, दिन में अँधियारी छाई,
लगे अपशकुन होने, ऐसी प्रलय घटा घिर आई।

गृद्ध लगे उड़ने, शृंगाल भी लगे जोर से रोने,
कौवे काँव-काँव करते थे, उड़कर कोने-कोने,
उठने लगे बवंडर आँधी आई महा भयंकर,
आज प्रलय का समय आ गया, कोप गए शिवशंकर।

लगा बरसने शोणित, टुकड़े अस्थि मांस के गिरते,
उत्पातों के काल सरीखे दृश्य थे जहाँ उभरते,
विष्णु आदि देवों के तन में भय मिश्रित थे कम्पन,
शिव का था अपमान, था निश्चित होगा कुछ परिवर्तन।

जो भी निन्दा करता प्रभु की चैन नहीं पाता है,
लोक बिगड़ जाता उसका परलोक बिगड़ जाता है,
बुद्धि बिगड़ जाती पहले, फिर तन का है नाश होता,
आखिर में दुर्बुद्धि मना, सिर पीट-पीट कर रोता।

कौन है ऐसा शिवद्रोही की रक्षा यहाँ करेगा,
जो खाई खोदी है तुमने उसको कौन भरेगा,
सब कर्मों के एक मात्र शिव-कुफल-सुफल दाता है,
जो जैसा करता है जग में वैसा फल पाता है,

वीरभद्र को कम मत समझो शिव का तेज भरा है,
महावीर है अविजित होगा स्वतः रूप उभरा है,
कोई नहीं बचेगा उससे, इसीलिए आया है,
सबको भस्म करेगा बनकर, महाकाल आया है,

देख रहे हो चक्र सुदर्शन, शिव सनेह का फल है,
कोई रोक नहीं सकता, वह वीरभद्र अविचल है,
वीरभद्र के अस्त्र-शस्त्र सब है अमोध बल वाले,
कौन है ऐसा उन अस्त्रों से किसी को यहाँ बचा ले,

कहीं भागकर जाने पर भी जान नहीं बच सकती,
वह अबाध गति वीरभद्र की, चाल नहीं है रूकती,
इसी बीच उस मण्डप में है वीरभद्र जब आया,
लगी नाँचने सब पर तत्क्षण महानाश की छाया,

इन्द्र ने ताना ब्रज और देवों ने शस्त्र संभाला,
भृगु मंत्रों से उपजे वीरों ने अस्त्र संभाला,
लगे वहाँ मरने गण, वीरभद्र बढ़ आया,
वह त्रिशूल से देव सैन्य का करने लगा सफाया,

कहा वृहस्पति ने शिव महिमा अपरम्पार कहाती,
कोई भी हो शक्ति-बुद्धि शिव तत्त्व का पार न पाती,
वे ईश्वर के भी ईश्वर हैं, हैं महेश परमेश्वर,
जितने नाम सभी गुण बोधक महारूद्र शिव शंकर,

नहीं रूकेंगे ये गण अपने मन का काम करेंगे,
जो भी है सहभागी उनका काम तमाम करेंगे,
देख विष्णु को वीरभद्र ने जो मन्तव्य सुनाया,
सारे कृत्यों को उसने था खोल-खोल समझाया,

साक्षी थे वे नारायण भी, सती दहन के क्रम का,
शिव अपमान अनर्गल बातें, दक्ष अहम् के भ्रम का,
विष्णु - "सेवक था यह दक्ष इसी से यहाँ यज्ञ में आया,
मैं भी शिव प्रेमी हूँ, लेकिन यह कर्त्तव्य निभाया,

कहा वीर ने जान रहा हूँ है अभिन्न प्रिय दोनों,
एक तत्व हैं, एक रूप हैं, वन्दनीय हैं दोनों,
फिर भी युद्ध हुआ निष्फल हो गए सुदर्शन धारी,
एक ओर देवों की सेना बहुत बड़ी तैयारी,

सब हो गये परास्त भागने लगे भयंकर रण से,
वीरभद्र की अडिग युद्ध रत बँधा हुआ था प्रण से,
काट दिया शिर दक्ष-दंभ का उसे भस्म कर डाला,
शंकर का वह तेज जीतकर, यज्ञ नष्ट कर डाला,

योगिनियाँ पी रही रक्त थीं, भैरव नाँच रहे थे,
पुर वासी लुक छिपकर, सच की हालत जाँच रहे थे,
किसमें थी सामर्थ्य जो रोके महाकाल ताण्डव को,
जय शिव, जय शिव पड़ा सुनाई तीन लोक में सबको,







ॐ नमः शिवाय

शिव पार्वती सम्वाद

सती दहन के बाद हो गए, शिवजी परम विरागी,
सारी इच्छाएँ विरक्त हो - शंकर जी ने त्यागी,
चले गए हिम गहन गुफा में जब अखण्ड तप करने,
समाधिस्थ हो, दिव्य मनोरथ हेतु, लगे जप करने,

कोई भी हो जीव-जगत् का, वहाँ नहीं जा सकता,
देव और दानव प्रवेश था, वहाँ नहीं पा सकता,
पुनर्जन्म ले वहाँ शक्तिरूपा पति नग घर आई,
नाम शैलजा-पार्वती-हिमसुता वहाँ थी पाई,

गिरिपति का आदेश शैलजा शिव-सेवा में जाती,
परम विरागी शिव की नजरें वहाँ नहीं उठ पाती,
धीरे-धीरे सेवा व्रत से हो प्रसन्न शिव शंकर,
कृपा दृष्टि पाकर गौरी ने देना चाहा उत्तर,

कहा शिव ने वहाँ हँसकर सुनो गौरी सुनो गिरिजा,
मैं प्रकृति नष्ट कर देता, उग्र तप से सुनो गिरिजा,

ये मेरा नाम शंकर है, मैं ईश्वर लीन हो जाता,
ये भौतिक लोक का सुख, भूलकर भी पास न आता,
जिन्हें सद्वृत्ति होती है, प्रकृति से दूर रहते हैं,
वे स्थिर-चित्त सदा रहते विरत भरपूर रहते हैं,

हँसी गिरिजा-ये सुनकर बात मीठे स्वर में वह बोली,
रहस्यों से भरी वाणी अधर से मुखर हो डोली,
कहा है आप ने जो, वह भी प्रकृति रूप है शिव जी,
प्रकृति से अलग होकर रह नहीं सकते हैं, हे शिव जी,



जरा फिर सोचिए प्रकृति है पूर्णा, इस तन की,
नहीं अस्तित्व कोई, कामना होती न जीवन की,
परे प्रकृति से होकर कोई भी बेकार हो जाता,
निरर्थक निष्प्रभावी, यह सकल संसार हो जाता,

समझकर बोलिए कुछ तप का ये कैसा प्रयोजन है,
ये भोजन और वाणी, प्रकृति का ही क्रम नियोजन है,
ये जो भी कर्म होता, प्रकृति का ही धर्म है शिवजी,
समझ लें, देह धारण का, सुनिश्चित मर्म है शिवजी,

नहीं मैं चाहती, यह तर्क और विवाद कोई भी,
जो पड़ता है दिखाई, उससे हो सम्वाद कोई भी,
जो गोचर है, सभी कुछ उसी प्रकृति की ये माया है,
मैं प्रकृति शक्तिरूपा हूँ सभी में मेरी छाया है,

पक्ष वेदान्त का लेकर के शिव जी अन्त में बोले,
रहो सेवा में तुम मेरी हृदय की बात वे खोले,
मिले आज्ञा जो नगपति की-यहीं पर साधना होगी,
निडर होकर रहो, सान्निध्य में आराधना होगी।

सांख्य मत में पगी हो तुम, मेरा वेदान्त अविचल है,
तुम्हारा मन भी निश्चल है, हमारा पथ भी निश्चल है,
मिला आदेश गिरिपति का, करे विचरण अभय मन से,
नहीं कोई भी भय होगा, अभय गिरि मेरू से, वन से,

परस्पर वार्ता से शक्ति शिव दोनों मगन मन थे,
परम योगी विरागी शक्ति शिव मिल एक ही तन थे,
करूँ नित-प्रति नमन, श्रद्धा-सुमन उनको चढ़ाऊँ मैं,
कि जब जब जन्म हो मेरा समर्पित होता जाऊँ मैं,





ॐ नमः शिवाय

इन्द्र द्वारा कामदेव को शिवजी के पास भेजना

मित्र मन्मथ हो कुसमय के साथी-
काम आने का है समय आया,
करना मोहित है शिव का अडिग मन,
आज तक साथ तुमने निभाया।
ब्रह्म वर पाकर तारक बढ़ा है,
ध्वंस करने शिखर पर चढ़ा है।
तीनों लोकों पर करना है शासन,
आततायी, अधम वह बड़ा है।।
चैन से कोई रहने न पाता,
है महाकाल विप्लव की छया।।1।।
शिव का सुत होगा उसका संहारक,
वरना बढ़ता ही जाएगा तारक,
शिव जी तप में रमे हैं विरागी,
कामनाओं रहित मन के त्यागी,
जाइए देर मत कीजिए अब,
शिव को दिखलाइए अपनी माया,
जितने मोहक थे साधन वह लेकर,
कामोद्दीपक यह मौसम बनाकर,
एक परिवेश उसने बनाया,
काम ने काम को था जगाया,
पार्वती-शिव जहाँ बात करते,
शिव के मन में कुछ आकर्षण आया।





ॐ नमः शिवाय

तारका सुर

तारक अजेय दुर्निवार महा योद्धा है-
तीनों लोक हार गया उससे समर में,
वरुण, इन्द्र, नारायण, अग्निदेव हार गए,
मचा है त्राहिमाम्, भू-नभ सागर में,
ऐसे समय शिवजी समाधिस्थ तपोलीन,
देव सभी भूमिगत हैं गिरि के गह्वर में,
शिव का सुत होगा वह तारक विनाश कारक-
शिव जी हैं काम मुक्त, गिरिपति के घर में।
एकमात्र आप ही समर्थ मित्र कामदेव,
सारे अस्त्र-शस्त्र ले हिमालय में जाओ,
काम के वितान तान मौसम मनोरम करो-
जैसे भी हो शिव के मन को रमाओ,
सेवा में गिरिजा दिन-रात वहीं रहती हैं,
हाव-भाव सहित पाँचों शस्त्र आजमाओ,
यह है परोपकार धर्म की रक्षा होगी-
जाओ शीघ्र, शिव मन में काम को जगाओ।
कब तक दुःख झेलें हम, हव्य-गव्य मिलता नहीं-
सुर-नर-मुनि आज हैं अपार कष्ट पाते,
चारो ओर हाहाकार, लूट-पाट हिंसा है-
शरण नहीं मिलती है; जहाँ कहीं जाते,
एक ही है रास्ता जो मुक्ति में सहायक है-
आपका सहारा है ज्योतिषी बताते,
जन्म हो तो मृत्यु भी है, मन्मथ अवश्य जाओ,
गणना कर गुरुदेव सबको सुनाते,



देर मत करो मित्र, हम भी आ जायेंगे,
कोई कष्ट होगा तो शिव को मनायेंगे।
भक्तों के शरणदाता आशुतोष शिवजी हैं,
क्रोध न करेंगे सबकी बात मान जायेंगे,
जानेंगे जब सही बात अन्तर्यामी भोलेनाथ,
औढरदानी स्वतः देख आर्तरीझ जायेंगे,
सारे देव, ऋषि, महर्षि पास ही रहेंगे वहाँ,
तपोनिष्ठ शिव जब कामातुर हो पायेंगे।
शंकर की माया से मोहित हो मन्मथ ससैन्य चला,
महाजाल जा करके उसने फैलाया,
रूप, गंध, रस की बौछार लगी होने वहाँ,
शीतल सुगंध पवन गिरि पर बहाया,
ऐसा प्रभाव कि वसन्त मन मोहक रूप,
पुष्पित हुए सभी वृक्ष मोह-मद छाया,
ऐसे उद्दीपन आलम्बन का वातावरण,
विरही-विरक्त के भी मन को भटकाया,
हुआ आश्चर्य घोर लीला कुछ प्रभु की है-
किया है शरीर धारण, होगा कुछ कारण,
पुनः हुए तपोलीन काम था प्रतीक्षारत-
रति समेत देख रहा, उचित समय, उचित क्षण,
देखा कोई जगह नहीं शिवजी के मन में है,
कैसे प्रहार करें शिव पर अकारण,
देखा कि शिव का त्रिनेत्र महा तेजवान्,
लगता प्रदीप्त ज्योति फैली है तत्क्षण,
नित्य की ही भाँति सखी और सहेलियों के साथ,
पूजन अर्चन को वहाँ पहुँची भवानी,
देखकर भवानी को शिव जी कुछ जाग गए,
यही एक जगह देख हुई कुछ आसानी,



छोड़ दिया पाँचो शर एकसाथ शिवजी पर,
देखने रूप लावण्य लगे भोले औढरदानी,
अंग-अंग लोच भरा, लगता संकोच भरा,
कैसी अद्वितीय छवि से भरी है जवानी,
मुख है कि चन्द्रमा लजाकर कहीं भाग गया,
लगती भ्रूकुटियाँ ज्यों काम के ही शर हों,
सारे रूप लावण्य भरकर विधाता ने,
रूपों से भरी देह जैसे रत्नाकर हो,
धन्य हो तुम पार्वती जन्म तेरा सार्थक है-
सारे सौन्दर्यों के अतुलित सागर हो,
अनुपम हो पृथ्वी पर नहीं कहीं समता है-
या कि रूप-सागर की मधुरिम लहर हो ।







ॐ नमः शिवाय

कामदेव को भस्म करना

डोलता है क्यों मन,
रूप पर मन गमन,
क्या है, कारण कि आसक्त मन हो गया,
काम का कैसे है संचरण हो गया,
स्वयं पर सोचने को वे हो गए विवश,
कैसे सामान्य जन का चले कोई वश,
ध्यान गिरिजा से हटकर कहीं चल दिया,
मेरे विरक्त मन को क्यों चंचल किया,
आए हैं विघ्न क्यों ?
हो गया खिन्न क्यों ?
मेरे तप का है असमय क्षरण हो गया ।। काम ......
किस दुरात्मा ने ऐसा किया कर्म है,
किसने तोड़ा है निर्मम, मेरा धर्म है,
रूप पर यह अडिग मन चला है गया,
किस अधम से यह मन यूँ छला है गया,
देखा भू फिर गगन,
होकर चिन्ता मगन,
किसके द्वारा इस मन का हरण हो गया । काम का ....
क्रोध में तेज ज्वाला से खुलगए नयन,
उठ गईं लपटें जैसे महा अग्नि बन,
जल गया काम तन, काँपते भू-गगन,
चीख चीत्कार से भर गया यह भुवन,
होनी थी हो गई,
चेतना सो गई,
देवताओं का फिर आगमन हो गया । काम का......



भोले अपराध को अब क्षमा कीजिए,
हम हैं अपराधी सुर, अब कृपा कीजिए,
रति है असहाय, पति को जिला दीजिए,
काम-निर्दोष रति से मिला दीजिए,
धर्म रक्षक प्रभो,
कर्म रक्षक प्रभो,
परहित ही काम का है मरण हो गया ।। काम का.........







ॐ नमः शिवाय

रति विलाप (निर्गुण-धुन)

रूकती नहीं अश्रुधारा,
हो गई मैं बेसहारा,

शिव वरदानी बाबा, आगे मेरे छाया है अँधेरा हे नाथ,
औढरदानी बाबा ....

देवों ने किया है छल,
मेरा पति गया है जल,

शिव वरदानी बाबा उजड़ गया मेरा है बसेरा हे नाथ
औढरदानी बाबा ....

फिर से जिला दें पति को,
शरण में बिठा लें रति को,

शिव वरदानी बाबा पति के बिना अब है कौन मेरा हे नाथ !
औढरदानी बाबा ....

आशुतोष औढरदानी,
कृपा करें स्वाभिमानी,

शिव वरदानी बाबा - दया कर बसा दें मेरा डेरा हे नाथ !
औढरदानी बाबा ....





ॐ नमः शिवाय

पार्वती को नारद का उपदेश

शिव जी के नेत्रों से उठी हुई अग्नि लपट,
काम को कर भस्म लीन हो गई सागर में,
सुनकर विस्फोट गगन काँप उठा यथाशीघ्र,
गर्जन-तर्जन की लहर उठी अम्बर में,
व्याकुल हो पार्वती गई स्नान हेतु,
चिन्तित उदास बैठी जाकर हिम सर में,
सुनकर भयानक स्वर चिन्तित नगराज हुए-
सपरिवार पहुँच गए गुफा-गह्वर में।

●

पाया शोक विह्वल, चिन्तातुर है पार्वती,
बहुविध प्रबोधन दे लाए भवन में,
किसी प्रकार शान्ति मिली नहीं गिरिजा को,
शिव की चिन्ता सताये जाती थी मन में,
उधर योगिराज शंकर हो गए जो अन्तर्धान,
शिव-शिव की ध्वनि गूँजे निर्जन से वन में,
होकर निमग्न शिव ध्यान में उदास पड़ी,
शैलजा के पास गए नारद उस वन में,

●

हे काली, जगदम्बा पार्वती-गौरी सुनो-
तुमने निर्लिप्त भाव सेवा की शिव की,
महिमा अपार अगम आशुतोष शंकर की,
तप से प्रसन्न करो, अर्चना हो शिव की,
परम विरागी है, निर्विकार शंकर जी,
आठ पहर पूजन हो वन्दना हो शिव की,



तेरा अहं नष्ट किया, शिव ने तपोबल से,
पंचाक्षर मंत्र से ही प्रार्थना हो शिव की ।।



महामंत्र है यह "नमः शिवाय" जाप करो,
आशुतोष शीघ्र ही अनुग्रह कर आयेंगे,
प्रकृति, शक्तिपरा, जगदम्बा जगजननी को,
अपनी प्रियतमा चिर संगिन बनायेंगे,
पुनर्जन्म होगा नहीं, कलप-कल्पान्तर में,
शिव-शक्ति, शक्ति-शिव एक ही हो जायेंगे,
यह है अमोध अस्त्र जपो नमः शिवाय तुम-
मंत्र का प्रभाव शिव शीघ्र रीझ जायेंगे ।







ॐ नमः शिवाय

पार्वती का तप

जान गई तप से ही शिव जी प्रसन्न होंगे-
पिता नगराज से आदेश मांगती है,
माता-पिता को प्रणाम करके सादर वह
शिव को पति रूप में, वर मन से चाहती है,
जया और विजया दो सखियों के साथ-शिव
मन चाहा सुख कर संदेश चाहती है।
माता उदास लगी, पिता भी निराश लगे-
कल से ही तपोवन प्रस्थान चाहती है।

●

कोमल शरीर, रूप अद्वितीय तेरा है,
कैसे तपोवन में कष्ट तू उठाओगी,
घर में ही सभी देव तीर्थ हैं विराजमान,
इन्हें छोड़ निर्जन में कहाँ तुम जाओगी,
करके प्रणाम, ले सहेलियों को साथ गौरी,
करने तप, शिव को अभीष्ट वर पाने,
चलीं गई तप करने अहं को मिटाकर वहाँ,
तपोवन में भाग्यफल, अपना वह पाने,

●

मैं हूँ समर्पित शिव मानते हें मन से तो-
निश्चित है पति रूप मेरे हो आयेंगे,
पंचाक्षर मंत्र जो नमः शिवाय उनका है,
मंत्र मुग्ध होकर वे पास मेरे आयेंगे,
सारे देवर्षि, ब्रह्मर्षि, राजर्षि वहाँ,
देखकर कठोर तप दंग रह जायेंगे,



निश्चित है निर्विकार योगिराज शंकर जी,
शीघ्र ही गौरी की अपनी प्रियतमा बनायेंगे ।



कठिन परीक्षा, विघ्न बाधा अनेक आए,
प्रकृति भी प्रेम-भाव प्रतिदिन दर्शाती,
मेरी प्रतिज्ञा है, शिव को ही वरण करूँ-
मेरी समर्पित दृष्टि कहीं नहीं जाती,
जन्म-जन्म शिव की हूँ, रहूँगी भविष्य में भी,
थाती हूँ शिव की मैं; शिवजी मेरी थाती,
शिव के शक्ति संग, भव साथ में भवानी हूँ,
शिव को छोड़ और कहीं कभी नहीं जाती ।



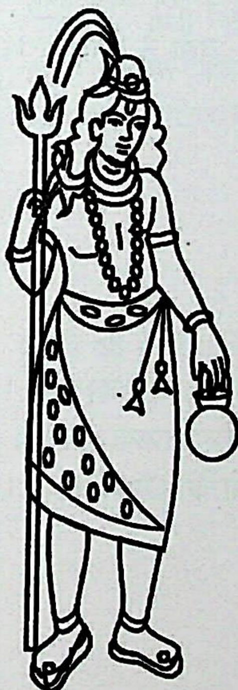




ॐ नमः शिवाय

तपश्चर्या

कठोर तपश्चर्या,
कृशकाय पार्वती तपोलीन-
एक मात्र शिव ही अभीष्ट जहाँ ।
और कोई रूप रंग
भाव प्रेम नहीं जहाँ-
ॐ नमः शिवाय का स्वर
गूँज रहा भू-अम्बर -
कोई परीक्षा उसे,
डिगा नहीं सकती है-
उसके मन-मन्दर को-
हिला नहीं सकती है ।
पतिव्रता अडिग व्रती
पार्वती,
एकाकार, निर्विकार,
करने सपना साकार
तपोवन, गिरिगह्वर
सरिता वन, गिरि निर्झर-
एकतार गुंजित स्वर
ॐ नमः शिवाय ।
ॐ नमः शिवाय ।।
इसी शान्त निर्जन में;
शिव थे तपोलीन
बीत गए वर्ष साठ हजार,
पता होगा उनको भी-
आएँगे जरूर एक दिन,
करने स्वीकार,
करने अंगीकार
पूरे परिवेश में निर्जन प्रदेश में,
छा गया एक स्वर पंचाक्षर,
ॐ नमः शिवाय ।
ॐ नमः शिवाय ।।





ॐ नमः शिवाय

तप से व्याकुल हो देवताओं का ब्रह्मा के पास जाना

कठिन तपोव्रत से त्रिभुवन में बढ़ने लगी उदासी,
भूचर, नभचर, जलचर तापित, तप्त हुए वनवासी।
नहीं पता चलता था आखिर इसका क्या है कारण,
चले देवगण ब्रह्मलोक में करने हेतु निवारण।।

कान्तिहीन देवों को देखा, किया ब्रह्म ने चिन्तन,
मन ही शिव को प्रणाम कर, बोले प्रिय स्वर ब्रह्मन।
पार्वती की अडिग तपस्या ने है रंग दिखलाया,
दग्ध ताप से यह त्रिभुवन है - ब्रह्मा ने समझाया।।

पड़े शेष शय्या पर नारायण ने क्षीर भवन में,
सब पहुँचे हैं समाधान हित आशा लेकर मन में।
हे नारायण आप सहारा हैं, अब हमें बचायें,
जले जा रहे कठिन ताप से, कृपया आग बुझायें।।

हँसने लगे शेष शायी भगवान विहँस कर बोले,
पार्वती की अडिग तपस्या का रहस्य वे खोले।
जान रहा हूँ पार्वती शिव हेतु तपस्या रत हैं,
शिव तो परम विरागी, लोभों से वे अडिग विरत हैं।।

चले सभी मिलकर महेश को सादर शीश झुकाये,
परहित रागी महादेव को अपनी व्यथा सुनाये।
आशुतोष हैं भक्तों के हित नियम बदल देते हैं,
दुःख को गले लगा लेते, औरों को सुख देते हैं।।



प्रलयंकारी रूप है उनका पास न कोई जाता,
अपने में ही मगन नहीं है और किसी से नाता।
उग्र तपस्या में रत वे हैं, जबसे काम जला था,
विरुपाक्ष का रौद्र रूप जब आँखों से निकला था।।

डरते हैं हम कैसे जायें, कहीं कोप जायेंगे,
तुरत, न होगी देर भस्म हम तत्क्षण हो जायेंगे।
चलो सभी शिव दर्शन हित, पाकर हरि का आश्वासन,
बीच राह में गौरी-दर्शन करके नत अभिवादन।।

घिरे हुए गण से, भैरव से, लेकर के योगासन,
थे प्रसन्न देवाधिदेव, थी अद्भुत कान्ति-चिरन्तन।
सबने स्तुति की जब सबने सादर शीश झुकाया,
ध्यान से शिव ने स्नेह-सिक्त वाणी से नयन उठाया।।

हे सर्वेश्वर, दीनबन्धु भक्तों के भव भयहारी,
आशुतोष नन्दी पति शंकर हे महेश त्रिपुरारी।
बहुत प्रताड़ित पीड़ित होकर शरण आमकी आये,
रक्षा करें हे सहज दयामय, धर्म की लाज बँचायें।।

तारक के अत्याचारों से काँप रहा है त्रिभुवन,
हव्य-गव्य से हम वंचित हैं भाग रहे हैं वन-वन।
हठ छोड़े प्रभु तारक से हम सबका पिण्ड छुड़ायें,
अपने सुत से तारक बध कर, जीवन नया दिलायें।।

पार्वती का पाणिग्रहण कर, काम को पुनः जिलायें,
अपने दिये वचन को चलकर सत्य रूप दिखलायें।
ब्रह्मा का वरदान है तारक कहीं न मारा जाये,
सिर्फ आपके बेटे से ही वह संहारा जाये।।

हे नारायण काम भस्म कर जग का भला किया है,
उसी काम ने धर्म-निष्ठ लोगों को छला किया है।
उसी काम ने जीव-मात्र को पथ से है भटकाया,
उसी काम ने तृप्ति-तुष्टि हित, अन्धा हमें बनाया।।

उसी काम ने भ्रष्ट किया तपो निष्ठ ज्ञानी को,
उसी काम ने दास बनाया ज्ञानी अज्ञानी को ।
उसी काम ने तो विवेक का सर्वनाश कर डाला,
उसी काम ने शुभ्राम्बर में दिया है धब्बा काला ।।

उसी काम के चलते मानवता का हनन हुआ है,
उस के चलते जो चारित्रिक पतन हुआ है ।
सुने देवगण आप सभी सादा विचार अपनायें,
सत्य मार्ग पर चलकर अपना जीवन सफल बनायें ।।

भोग तृप्ति का पथ छोड़ें, परहित में अब रम जायें,
काम वासना के दल-दल से निकल सुपथ अपनायें ।
काम से होता क्रोध, क्रोध से बुद्धि नष्ट हो जाती,
बुद्धिहीनता से विवेक की गरिमा है मिट जाती ।।

स्त्री बन्धन से कोई भी नहीं निकल सकता है,
एक भौंह की चितवन पर पाषाण पिघल सकता है ।
बहुत कठिन है काम क्रोध से दूर कभी हो पाना,
काम पाश में बड़ा सहज है योगी का बंध जाना ।।

सुनकर शिव की ज्ञानमयी वाणी हरि साग्रह बोले,
तारक की यातना पुस्तिका पन्ना-पन्ना खोले ।
हे महेश, हे भक्त के रक्षक, दीनबन्धु हितकारी,
स्वयं देख लें, इस पृथ्वी पर आया संकट भारी ।।

तीनों लोकों का हित होगा थोड़ा नियम बदल दें,
पार्वती को पत्नी रूपा करने जल्दी चल दें ।
कठिन तपस्या रत गिरिजा का प्रण पूरा हो जाये,
त्रिभुवन का आतंक है तारक, वह भी मारा जाये ।।

विषय सुरा दोनों मादक है, जो कोई पाता है,
काम, कामिनी कनक देखकर के ही बँध जाता है ।
ज्ञान चक्षु के जो कपाट हैं, तुरन्त बन्द हो जाते,
सारे तेज प्रकाश जल्द ही सहज मन्द हो जाते ।।



किन्तु आप लोगों की होगी जिससे वहाँ भलाई,
वही करूँगा, शीघ्र चलूँगा, जीवन हो सुखदाई।
अपना कोई स्वार्थ नहीं है, भक्त का भला करूँगा,
जो पथ हो त्रिभुवन हित कारक उस पर चला करूँगा ।।

कहकर शिवजी मौन हो गए, लगी समाधि सलोनी,
अनहोनी टल गई वही होगी जो होगी होनी।
हर्षनाद जयकार मनाते चली मण्डली सारी,
शिवजी के विवाह की होने लगी गजब तैयारी ।।







ॐ नमः शिवाय

सप्तर्षियों द्वारा हिमालय को विवाह के लिए सहमत करना

आप तैयार हो जायें नग पति,
शिव जी बारात लें आ रहे हैं।
सातों ऋषियों के सन्देश पाकर,
सागर खुशियों के लहरा रहे हैं।।
मेरू हे, हे गन्धमादन, हे गिरिवर,
विन्ध्य, मैनाक, शैलेन्द्र भारी,
ऐसी तैयारी करनी है हमको,
देख पुलकित हो जायें त्रिपुरारी,
हम हैं अतिथ्यक त्रिपुरारी शिव के,
बन कर मेहमान शिव आ रहे हैं।।
गिरि-सुता, मेना, हिमपति सभी तो,
शिव के अपने ही मन के चितेरे,
झील, झरने सरोवर नदी-नद,
वन, गुफा और उपवन घनेरे,
घर है परमेश शिव के ये अपने,
अपना घर देखने आ रहे हैं।।
धन्य है ये हिमालय का आँगन,
धन्य मेना का आँचल सुहावन,
जिनके दामाद शिव हो रहे हैं,
आ रही है बड़ी शुभ-लुभावन,
गंध, रूप, रस गागर में भरकर,
जो पवन देव पहुँचा रहे हैं।।
पावन तिथि, वार, मंगल का कारक,
पंडितों ने परखकर सुनाया,
वाहकों ने प्रफुल्लित हो मन में,
शिव महादेव को था बताया,
अनगिन शुभ चिन्तक दोनों घरों के,
बारी-बारी से आ जा रहे हैं।।





ॐ नमः शिवाय

शिव जी की बारात

शिव जी ने प्रकृति के सारे प्रतीकों को,
दे दिया आदेश है बारात को सजाना।
नदियों, समुद्रों, झील, झरनों सारे सरोवर को,
घाटी, पर्वत, जंगल साथ है निभाना।
कुछ तो रहेंगे यही शेष साथ देंगे मेरे,
हिमांचल-नगर में तनेगा शामियाना।
प्राणों में प्रसन्नता की दौड़ गई लहर एक,
शुरू हुआ नृत्य वादन, गाना-बजाना।
गणराज शंख कर्ण गण ले करोड़ एक,
देवगण गणाधिपति दस करोड़ लेकर।
गणेश्वर विकृत के साथ आठ कोटि गण अपने,
गणेश्वर विशाख चार कोटि गण अनुचर।।
पारिजात नौ करोड़ सर्वान्तक विकृतानन,
साठ-साठ कोटि के थे महानायक बनकर।
दुन्दुभ के आठ कोटि, कपाल पाँच कोटि लिये,
सन्दारव छः करोड़ निकल पड़े पथ पर।
विष्टम संग आठ कोटि, पिप्पल सहस्र कोटि,
सन्नादक, सहस्र कोटि गणों के ये नायक।
आवेदन आठ कोटि, महाकेश सहस्र कोटि,
कुण्ड और पर्वतक के बारह कोटि धावक।
काल, कालक, महाकाल, अग्निक शत कोटि लिए,
एक-एक शूर-वीर योद्धा विनाशक।
अग्निमुख, आदित्य मूर्धा, धनावह के साथ सभी,
एक-एक कोटि गण के साथ थे भयानक।



सन्नाह, कुमुद, अमोध और कोकिल के,
सौ-सौ करोड़ गण, सब थे निराले।
नायक सुमन्त्र, काक पादोदर, सन्नातक के,
साठ कोटि गण वीर विक्रम मतवाले,
महाबल कोकिल नील मधुपिंग, पूर्वभद्र,
नब्बे करोड़ गण पूर्ण शक्ति वाले।
चतुर्थक्त्र सात कोटि, करण बीस कोटि लिये,
यज्वाक्ष शत मन्यु, मेथ मन्यु वाले।
नब्बे करोड़ गण खुशियाँ मनाते चले
काष्ठांगुष्ठ, विरुपाक्ष नायक बलशाली।
सनातन, सुकेश, वृषभ चौसठ करोड़ संग,
कालकेतु षण्मुख, चंचुमुख छवि निराली।
सनातन सन्वतंक चैत्र लुकलीश सभी,
कोलान्तक दीप्तात्मा बजा रहे ताली।
दैत्यांतक देवगिरिट अशनि और चाबुक की,
चौसठ कोटि सेना थी अति प्रभावशाली।
भूत थे हजार कोटि प्रमथ थे करोड़ तीन,
वीरभद्र चौसठ करोड़ साथ जाते।
तीन रोमज सहस कोटि मगन मन हैं साथ चले,
नन्दी आदि गण राज खुशियाँ मनाते।
क्षेत्रपाल भैरव करोड़ों गण साथ लिये,
जा रहे हैं रास्ते में धूल को उड़ाते।
किसी के हजार हाथ, कोई बिना हाथ का है,
जटा जूट मुकुटधारी शोभा बढ़ाते।
चन्द्ररेखधारी नीलकंठ वाले गण कोई,
तीन मुँह वाले साथ गाल हैं बजाते।
रूद्राक्ष मालाधारी, भस्म को रमाए हुए,
केयूर, कुण्डल मुकुट वाले साथ जाते।



ब्रह्मा, विष्णु आदि अणिमाओं सहित आठो सिद्धि,
शिव की बारात की हैं शोभा बढ़ाते।
कुछ पैदल भूतल पर गगन पथ से कुछ जाते,
कुछ पाताल लोक से बारात में है जाते।
महाबल वाली भगवती ले भूत-प्रेत,
आ गई है राह में उपद्रव मँचाते।
आगे आई चण्डी कोलाहल हुआ भू-नभ में,
मंगल ध्वनि शंख रणभेरी की है आती।
वेद-शास्त्र, श्रुतियाँ, स्मृतियाँ सब साथ-साथ,
सिद्धियाँ नवोनिधियाँ हैं शोभा बढ़ाती।
पहला और अन्तिम विवाहोत्सव शिव का है,
कल्प-कल्पान्तर में कथा कही जाती।
चातुधानी, शाकिनी, वैताल, ब्रह्मराक्षस सभी,
भूत-प्रेत प्रमथ मस्ती में चले जाते।
तुम्बरू, नारद हा-हा, हू-हू किन्नर गण भी,
मुख और हाथ से जो है वाद्य हैं बजाते।
श्रृंगी-भृंगी है लिये हाथ में झण्डी शिव की,
डमरू भी अनहद का नाद है सुनाते।
बफ्फर सिस्टम है, भोजनालय है यत्र-तत्र,
जो चाहे जहाँ चाहे, इच्छा भर खाते।
मेवा मिष्ठान्न, भोजन छप्पनों प्रकार बना,
पीने और खाने की छूट है वहाँ पर।
सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग है साथ-साथ,
रुचि के मुताबिक सभी पाते हैं खुलकर।
सारी विभूतियों से भूषित शिव वर बनकर,
जा रहे हैं, दिव्यरूप हिमपति के घर पर।
गूँज रहा अवनि और अम्बर में नमः शिवाय
पुष्प-वृष्टि होने लगी अम्बर से भू पर।





ॐ नमः शिवाय

शिव-पार्वती विवाह

मान्य गर्गाचार्य की थी प्रेरणा अति पावनी,
थी घड़ी आई वहाँ शुचि दान की मनभावनी,
आ गई मेना हिमालय के निकट निज भाग में,
थे वहाँ पत्नी सहित पति हर्ष में अनुराग में ।

वन रहा परिणय का उस क्षण, एक नव इतिहास था,
धरा अति आनन्द में थी, मुग्ध मन आकाश था,
वेद मंत्रों से भरा आनन्दमय वातावरण,
भर गया आनन्द से हर जीव का अन्तःकरण ।

उचित तिथि को उचित क्षण में हो गया कन्या का दान,
था महोत्सव सविधि परिणय हो रहा जय घोष गान,
दे रहा हूँ दान पत्नी रूप में स्वीकारिए,
मेरे घर की ज्योति अपने भवन में अवतारिए ।

मेना की आँखें सजल हो, सुता को करने विदा,
विरह की सुख-वेदना हिमवान को देती हिला,
बेटी आंगन का उजाला, बेटी कुल का ताज थी,
हिम-भवन की ज्योत्स्ना थी, और कुल की लाज थी ।

विदा होकर शैलजा-गिरिजा थी जाने लगी,
रो पड़ा आकाश धरती अडिग थर्राने लगी,
प्रकृति थी आहत शिखर गिरि राज का आहत हुआ,
नदी झरने रो पड़े गिरि मेरू मर्माहत हुआ ।

देव-दानव और ऋषि मुनि सबकी आँखें भर गई,
डोली में गौरी सहज नैना लिये जब चढ़ गई,
कोई कुछ कहता नहीं सब मौन साधे थे खड़े,
जैसे प्राण विहीन होकर सब वहाँ पर थे पड़े ।



जो थे परम विरक्त वे भी फूटकर रोने लगे,
हो रही बेटी बिदा थी, विकल सब होने लगे,
था परम सौभाग्य नगपति का जो शिव दामाद थे,
लोकहित के सामने कुंठित सभी अवसाद थे।

सभी दोनों पक्ष के जयकार स्वर भरने लगे,
जो हुआ सत्कार वर्णन वे सभी करने लगे,
जो व्यवस्था थी बड़ाई हो रही हरबार थी,
जा रही बारात वापस, पूर्णतः तैयार थी।

कठिन तप के बाद शिव से उमा एकाकार थी,
शक्ति शिव के रूप में जो कल्पना साकार थी,
हो गया विश्वास तारक दैत्य मारा जाएगा,
डूबता जलयान सकुशल अब किनारा पायेगा।

सच है शिव जी भक्त का कल्याण करते हैं सदा,
इसी से प्राणी दुखी शिव गान करते हैं सदा,
औरों के हित के लिए विषपान करते हैं सदा,
जयति जय शिव शंभु हम सब ध्यान करते हैं सदा।







ॐ नमः शिवाय

द्विज पत्नी द्वारा पार्वती को उपदेश

सुनी गिरिजा विदा होकर पति भवन जब जाओगी,
कोई भी परिचित न होगा, धर्मपथ अपनाओगी,
है यही गृहस्थ जीवन, वही होगा अपना घर,
होगी रखनी प्रीति श्रद्धा, उस सकल परिवार पर।

पति ही होता देवता, पूजन करोगी उम्रभर,
पति का सुख होगा तुम्हारा, ब्रत अडिग हो उम्रभर,
पतिव्रता का धर्म है पति को समझ परमेश्वर,
नियम व्रत साधन करें, जाए नजर न गैर पर।

जिस किसी ने धर्म का पालन किया सेवन किया,
वन्दनीया हो गई, पति धर्म का चिन्तन किया,
आज भी इतिहास उनकी जय मनाता देख लो,
सती कहता जय मनाता गीत गाता देख लो।

माँ पिता के चरण में मिलते हैं चारो धाम ये,
ऊँगलियों पर गिने जाते सतियों के कुछ नाम ये,
पती-पत्नी दोनों ही जिस देश में आदर्श हैं,
वह दो गौरव से भरा, वह देश भारत वर्ष है।

पति न हो घर तो शृंगार मत करना उमे,
पति कहे जो नीति वह इन्कार मत करना उमे,
आस्था-श्रद्धा रहे विश्वास तेरे साथ हो,
जहाँ भी हो साथ तेरे साथ में प्रियनाथ हो।

क्या कहूँ तूँ शक्तिरूपा, प्रकृति का अवतार हो,
सृष्टिकर्ता शिव की खातिर तुम सही आधार हो,
गौरी, गिरिजा, शैलजा, नगपति सुता कहलाओगी,
शिव-शिवा बनकर जगत् कल्याण में लग जाओगी।



क्रोध वश पति कुछ कहे तो मौन हो सह जाओगी,
क्रिया-प्रतिक्रिया बिना ही धैर्य धर रह जाओगी,
जाओ नैहर याद रखना, सोचना हरदम भला,
समय उसको याद रखता सत्य-पथ पर जो चला ।

पति ही ईश्वर रूप है जो घर चलाता है,
उसी के कृत्यों से घर भी जगमगाता है,
अगर वह व्यभिचार में जाने लगे तो रोकना,
पत्नी का कर्त्तव्य है उस समय पति को टोकना ।

पत्नी होती सृष्टि का संसार रचती है सदा,
धर्म का आधार वह परिवार रचती है सदा,
संस्कारों का वही आधार बन जाती सदा,
आने वाले दिनों का आकार हो जाती सदा ।







ॐ नमः शिवाय

आदर्श पति

पत्नी पति दो चक्र हैं जीवन चलांने के,
सृष्टि के आधार हैं आगे बढ़ाने के,
हाथ में जब हाथ का है आगमन होता,
साथ रहने का, निभाने का वचन होता।

साक्षी देकर अग्नि का संकल्प होता है,
जिन्दगी भर साथ का, अनुकल्प होता है,
पति अगम भव सिन्धु में पतवार होता है,
इसी से जीवन लहर के पार होता है।

पत्नी है दासी नहीं वह पूजनीया है,
शक्ति रूपा है सदा वह वन्दनीया है,
नारी माता है अनादर है जहाँ होता,
कई पुश्तों तक वह विकल हो परिवार है रोता।

पति का ये कर्त्तव्य है घर को बनाने का,
एक सुन्दर रूप में घर को सजाने का,
चाहिए कोई कलह की बात मत आये,
घुटन में बीते वो ऐसी रात न आये।

कर्म करना है, सुफल कोई देने वाला है,
जीवन की नैया को, कोई खेने वाला है,
जले घर में कोई दीपक, सुबह तक जगमगाए जो,
हो जो आदर्श पति परिवार को सुखमय बनाये जो।

हमारे शास्त्र कहते हैं, हमारी नीति कहती है,
शिव की शक्ति में, अनुपम सुहानी प्रीति रहती है,
वे ही आदर्श पति हैं जो हमें संदेश देते हैं,
गृहस्थों के लिये कर्त्तव्य का उपदेश देते हैं।



परस्पर बैर वाले जीव भी जो साथ रहते हैं,
सभी हैं प्रेम से रहते निभाते साथ रहते हैं,
यही आदर्श पति की देखिए सच्ची कहानी है,
जहाँ आदर्श भव के साथ में रहती भवानी है।

नमन शिव-शक्ति को मेरा अहर्निश याद करता हूँ,
मेरा करते भला दोनों जब फरियाद करता हूँ,
वे ज्योति स्तंभ हैं; जिस पथ से हमको आगे जाना है,
उन्हीं की है दया जिससे हमें अंजन रचाना है।







<u>रूद्र संहिता कुमार खण्ड</u>

ॐ नमः शिवाय

तारक वध

बार-बार इस धरा धाम में होता रहता परिवर्तन,
कभी पाप सिर पर चढ़ जाता, कभी पुण्य के हों दर्शन,
सुबह-शाम दिन-रात समय का रूप बदलता जाता है,
जाने कबसे सृष्टि प्रलय का यह क्रम चलता आता है।

जो भी जन्मा पला, बढ़ा फिर कभी अचानक अस्त हुआ,
लोभ मोह के महापाश में जीव बेचारा व्यस्त हुआ,
नियत काल का जीवन है यह फिर भी हमें न ज्ञान हुआ,
उदय हुआ सपनों में खोया, कभी यहाँ अवसान हुआ।

पाप-पुण्य का द्वन्द्व न जाने कबसे चलता आया है,
यह वृतान्त धर्मों में, ग्रन्थों ने ही सदा सुनाया है,
वर पाकर ब्रह्मा का तारक, संहारक हो गया कभी,
धर्म, नीति सत्पथ विवेक सब मन से था खो गया कभी।

भ्रष्ट आचरण, लूट अपहरण, परधन हरण लगा होने,
बलात्कार, रंगदारी रिश्वत का अवतरण लगा होने,
यज्ञ तपोव्रत सदाचार परहित पर था संकट आया,
व्यभिचारों का शासन ऐसा भारत पर था लहराया।

लगे भागने देव स्वर्ग से साधु-सन्त मजबूर हुए,
मन्दिर, मठ भी खाली हो गए, धर्म-निष्ठ थे दूर हुए,
कोई पंडित कथा न कहता, पोथी-पत्रा बन्द हुए,
घंटा शंख नहीं थे बजते, मन्दिर के पट बन्द हुए।

चोर, डाकुओं की बन आई, तारक का जो शासन था,
सारे अफसर स्वेच्छाचारी कहीं नहीं अनुशासन था,
जिसको जहाँ जगह मिल जाती, लूट से द्रव्य कमाता था,
इस निरीह जनता का हक बिना हिचक के खाता था।



त्राहि-त्राहि धरती करती थी, आसमान चिल्लाता था
कौन सुने फरियाद स्वार्थ में बँधा न्याय का दाता था,
हद से आगे पाप-ताप का बढ़कर अत्याचार हुआ,
तब शिव के घर शिव ही बनकर कार्तिक का अवतार हुआ।

जहाँ आदि है, वही अन्त है, यह तो अटल नियम है,
पाप-पुण्य का इसी धर पर हो जाता संगम है,
किया सत्य संकल्प असुर तारक को मार गिराने का,
कार्तिकेय ने व्रत ठाना धरती का भार हटाने का।

तारक भी था ब्रह्मा का मानस आत्मज कहलाता था,
शक्ति अजेय महावलशाली, रण कौशल का ज्ञाता था,
इधर स्वयं शिव त्रिभुवनजेता कार्तिक बनकर आए थे,
भक्तों की रक्षा करने, गृहस्थ धर्म अपनाए थे।

बिना बिलम्ब किए कार्तिक ने तारक पर धावा बोला,
लगी काँपने धरती थर-थर, आसमान का मन डोला,
महा समर के तुमुलनाद से सारे जीव प्रकम्पित थे,
किसकी होगी विजय, समूचे दर्शक चिन्तित शंकित थे।

एक से बढ़कर एक युद्ध के लगे पैंतरे चलने,
काट से होती काट, दाव पर दाव थे लगे बदलने,
दिन में लगती रात, रात में होते शोर भयानक,
कार्तिक तारक दोनों अतुलित प्रतिपक्षी संहारक।

अपने वचन निभाने वाले शिव शंकर भगवान्,
किया त्रिपुर संहारक ताकत का तत्क्षण संधान,
छिन्न-भिन्न तारक के तन को कार्तिक ने कर डाला,
आशुतोष हैं सदा-सदा से भक्तों का रखवाला।

वे ही करते पालन पोषण परहित के अनुरागी,
औरों को सुख देने वाले, वे हैं परम विरागी,
तारक के मरते ही तीनों लोगों में जयकार हुई,
शिव की वाणी सत्य हुई फिर सुफल हुई, साकार हुई।

नमो नमः

ॐ नमः शिवाय! ॐ नमः शिवाय!! ॐ नमः शिवाय!!!





ॐ नमः शिवाय

बाण और प्रलम्ब का वध

बाण अधम को मार क्रौञ्च का कार्तिक ने उद्धार किया,
अधम कोटि के असुर जनों का धरती पर संहार किया,
तीन-तीन लिंग स्थापित कर, साधक क्रौञ्च अभय था,
प्रतिज्ञेश्वर, कपालेश्वर, कुमारेश्वर निर्भय था,
महिमा मण्डित इन लिंगों का, पूजन अर्चन करता,
शिव शिव जय कार्तिक कुमार का प्रतिदिन कीर्त्तिन करता,
मनोकामना पूरी होती, लोग शान्ति पाते हैं,
जो भी श्रद्धा भक्ति सहित, शिव दर्शन को जाते हैं,

उसी समय प्रलम्बासुर से पीड़ित भक्त ने आकर,
अपनी कथा-व्यथा कार्तिक के सम्मुख खड़ा सुनाकर,
नाथ ! असुर नारक का साथी है पाताल नगर में,
बहुत सताता, करे उपद्रव, अपना गोल बनाकर,
शरणागत हूँ, रक्षा कर प्रभु, धर्म की लाज बचायें,
शेष राज्य के कुल गौरव का पावन ताज बचायें,

हे देवाधिदेव के आत्मज, हे तारक संहारक,
हे स्कन्द कुमार कार्तिक, भक्तों के उद्धारक,
क्रोधित कार्तिक ने हाथों में शक्ति का अस्त्र उठाया,
महाघोर स्वर नभ में उभरा भू अम्बर थर्राया,
चला शक्ति का तेज प्रज्वलित, प्रलयकाल घिर आया,
सेना सहित प्रलम्ब असुर को उसने तुरत जलाया,
भस्म हो गये असुर सभी फिर लौट शस्त्र वह आया,
भक्तों ने ऊँचे स्वर के गीतों को वहाँ सुनाया,

जय हो शिव की, जय कार्तिक की पिता-पुत्र की जय हो,
पार्वती-शिव के आत्मज की जय हो, जय हो, जय हो,
श्रद्धा भक्ति प्रीति पूर्वक जो कथा श्रवण करता है,
अगम सिन्धु को सहज कृपा से वह प्राणी तरता है,





ॐ नमः शिवाय

गणेश को प्रथम पूज्य पद और विवाह

पार्वती माता शिव जैसे पिता सुखी परिवार,
एक पुत्र गणनायक विद्या बुद्धि विवेक अपार,
और दूसरे महा बली हैं कार्तिक शक्ति अपार,
अपने आप पूर्ण हैं दोनों सन्तति सुख आधार।

यह गृहस्थ जीवन है शिव का, नहीं विघ्न का भय है,
जो भी शिव की शरण में रहता, वह जीवन सुखमय है,
बेटों की क्षमता, कर्मठता, सदा शान्ति बरसाती,
शिव जी के परिवार में बाधा कोई नहीं है आती।

बिना विवाह के कब तक रहते दोनों पूत सयाने,
चिन्ता रहती पति पत्नी को जाने या अनजाने,
वर तो जग जाहिर थे, कोई पुत्र वधू आ जाती,
सास-ससुर की सेवा करती, कुल का मान बढ़ाती।

दोनों सुत पर अटल स्नेह था शिव और शिवा का,
षण्मुख लम्बोदर दोनों पर स्नेह भाव समता का
शक्ति और शिव ने एकान्त में, बैठे हुआ विचार,
बड़े हो गए हैं दोनों, अब हो गए हैं होशियार।

दोनों पुत्र समर्पित, माता-पिता की सेवा करते,
अटल भाव से हम दोनों को सदा सुखों से भरते,
किसका पहले पाणिग्रहण हो बड़ा कठिन निर्णय था,
कोई हेय न हो जाये, इसका दोनों को भय था।

एक परीक्षा लेनी होगी, जो उत्तीर्ण हो जाये,
उसका ही विवाह पहले हम विधि पूर्वक करवाये,
यही सोचकर दोनों को शिव ने समीप बुलवाया,
अपना गुप्त प्रस्ताव खोलकर दोनों को समझाया।



सुनते ही प्रस्ताव पुत्र दोनों में जागी इच्छा,
किन्तु विवाह के पहले, होगी बड़ी कठोर परीक्षा,
जो पहले भू मण्डल की कर परिक्रमा आ जाये,
उसका ही पहले विवाह हम विधि पूर्वक करवाये ।

सुनते ही अति वीर पराक्रम, कार्तिक मोर सवारी,
लेकर के उड़ चले तीव्र-गति शक्ति तेज अवतारी,
हवा सोचती कैसी है गति, पल में नजर न आती,
सूर्य चन्द्रमा सोच रहे हैं, कौन शक्ति मदमाती ।

इधर दिखाई पड़ा कि पल में दूर निकल जाता है,
अतुल वेग से कोन वीर है, बिना रूके जाता है,
मन में तो उपजी विवाह की जो है सुखदा इच्छा,
उसके लिये दौड़ में शमिल देने चला परीक्षा ।

पलक झपकते ओझल हो जाता है कहीं कुमार,
गजब चाल है महावीर की बहुत तेज रफ्तार,
देर न होगी, तुरत प्रदक्षिणा पूरी हो जायेगी,
कार्तिक का परिणय होगा एक नई बहू आयेगी ।

हाथी जैसी देह मेरी थुल-थुल मेरी काया,
मूस है मेरा वाहन टेढ़ा प्रश्न सामने आया,
लगे बैठकर चिन्तन करने, मैं तो हूँ लाचार,
लम्बी दूरी भूमण्डल की कैसे करूँगा पार ।

एक कोस भी जा न सकूँगा, मूस बैठ जाएगा,
घर में दौड़ लगाने वाला, पार नहीं पाएगा,
मैं भी थककर कहीं बीच में, बैठ कहीं जाऊँगा,
लाद के गाड़ी पर अपने घर पर लाया जाऊँगा ।

बुद्धि विवेक जहाँ ये दोनों सूझ समझ में आई,
माता-पिता दोनों से सविनय अपनी बात बताई,
सिंहासन पर बैठाकर दोनों का कर शुभ वन्दन,
सात बार करके प्रदक्षिणा, खड़े हुए शिवनन्दन ।



स्तुति वन्दन दोनों का कर प्रकट किये निज चाह,
आप हैं त्रिभुवनपति, मेरा ही पहले करें विवाह,
शिव बोले जाओ भू-मण्डल की दूरी कर पार,
लौटो तो होगा सम्यक् फिर इस पर गहन विचार ।

क्रोधित होकर के गणेश ने बार-बार समझाया,
माता-पिता तीर्थ हैं मेरे अपना फर्ज निभाया,
आप ही चारोधाम पिताजी छोड़ कहाँ मैं जाता,
माता-पिता को छोड़ पुत्र जो तीर्थाटन में जाता ।

महा पाप का भागी होता, अन्त नरक है पाता,
आप भी यही बताते आये, वेद शास्त्र बतलाता,
कहकर गणपति मौन हो गए, लगे खोजने उत्तर,
जगदम्बा शिव जी प्रसन्न थे, सुन गणेश के उत्तर ।

मन ही मन दोनों ने गणपति की बहुत की बड़ाई,
बुद्धि, विवेक जहाँ थे दोनों प्रशंसनीय चतुराई,
इसीलिये पहले विवाह गणनायक का होना था,
होना था, जो वही हुआ, कुछ कर्म न अनहोना था ।







ॐ नमः शिवाय

शंख चूड़ और शिव को दूत प्रेषण

जब से पृथ्वी पर जीव तत्त्व का पड़ा स्वरूप दिखाई,
रूप बदलता गया प्रगति की, गति है बढ़ती आई,
परिवर्तन की लगी श्रृंखला मौसम रहा बदलता,
आत्म तत्त्व इस चेतन मन-तन में है रहता चलता,

जबसे जिज्ञासा ने मन को बार-बार उकसाया,
एक प्रश्न, युग-युग से मानस पट पर अब तक छाया,
कौन हूँ मैं, कैसे आया हूँ, कहाँ है मुझको जाना,
क्या रहस्य है इस जीवन का कहाँ है सही ठिकाना,

ज्ञान और विज्ञान प्रकृति का तत्त्व निरूपण करते,
नित्य नए कर सृजन शेष का नित अन्वेषण करते,
अन्तिम सत्य नहीं मिल पाता शोध है अब तक जारी,
एक तरफ है सृजन, दूसरी तरफ प्रलय भयकारी,

बाह्य जगत् के बाद भीतरी विश्व अगोचर लगता,
साधक, योगी, तपी, मनस्वी सत्य खोज में रहता,
जो यह है संसार, दृश्य जो पड़ते यहाँ दिखाई,
किसने रूपों की नगरी यह है किस हेतु बसाई ?

आते-जाते स्वप्न लोक में भेद नहीं खुलपाया,
जानेवाले पछताते, यह जीवन व्यर्थ गँवाया,
है कोई कर्त्ता-धर्ता इस दृश्यमान का निश्चय,
वही बनाता खेल दिखाता फिर कर देता है क्षय,

माया का यह लोक लुभावन, दृश्यों का यह मेला,
भीड़ बनाता तृप्ति तुष्टि की, देता छोड़ अकेला,
विवश हुआ होगा मन थककर, होगा कभी पुकारा,
हो असहाय परम सत्ता को होगा कभी निहारा,



हो अस्तित्व विहीन, केन्द्र पर होगा ध्यान लगाया,
निश्चित ही उस महाशक्ति के होगा दर्शन पाया,
ये तारे नक्षत्र और ब्रह्माण्ड शून्य के सारे,
आखिर चक्कर काट रहे हैं, किसके लिये सहारे,
वही शक्ति है, शिव भी वह है, सृष्टि-चक्र चलता है,
उससे ही दृश्य जनमता, पलता है, चलता है,
कोई नाम उसे देकर हम, अपना ईश्वर कहते,
भक्ति भाव से तन्मय होकर दिव्य-धार में बहते,
पाप-पुण्य का देवासुर का, होता युद्ध निरन्तर,
हर क्षण उसका साक्षी होता, जीत हार का चक्कर,
कथा सभी धर्मों में आती, नाम पात्र में अन्तर,
चलाता है संघर्ष सुरा सुर जग में जहाँ निरन्तर,
शंख चूड़ ने दूत बनाकर दानवेश को भेजा,
जाओ शिव के पास, मेरा संदेश वहाँ पर ले जा,
हो सकता है शिव यदि चाहें महासमर टल जाये,
असुर-देवता दोनों का घर जलने से बँच जाये,
योगासन में हास्य युक्ततन शिव के कर के दर्शन,
दानवेन्द्र ने किया प्रणत हो शिव जी का अभिवादन,
लेकरके त्रिशूल और पट्टिका वे ध्यान मगन थे,
व्याघ्र चर्म पर बैठ प्रकृति का करते अवलोकन थे,
वाम भाग में भद्र कालिका आगे कार्तिक आसन,
आशीर्वाद दिया सबने, उस दानवेश को तत्क्षण,
हाथ जोड़कर दानवेन्द्र ने झुक कर किया निवेदन,
जो भी इच्छा हो कहिए शिव जी शान्ति चाहिए या रण,
शिव ने कहा धर्म रक्षक ब्रह्मा के जो दो हुए सुवन,
थे मरीचि कश्यप दोनों, अतुलित साहस बलतेज वदन,
दक्ष प्रजापति ने तेरह कन्याओं का जो दान किया,
कश्यप को दे अखिल विश्व का पावनतम कल्याण किया,
दनु ने चार दानवों को दे, जन्म महतर काम किया,
एक विप्रिचिति दम्भ, कुशल बौद्धिक ने अपना नाम किया,



उसके सुत तुम दानवेश हो, धर्म निष्ठ मनवाले,
पूर्व जन्म में कृष्ण सखा थे, वीर गोप रखवाले,
आए हो अब देव बृन्द से, वैर भाव सब त्यागो,
भूल से हो दानव अब हठ छोड़ो मन से तुम जागो,

वापस कर दो राज्य स्वर्ग का सुख-सम्पत्ति लौटाओ,
तुम भी रहो चैन से अपना सकुशल राज चलाओ,
वे अपने घर में रहकर के जीवन सुखी बनायें,
दानव भी अपने ही घर में, चैन के गीत सुनायें,

वैर भाव तो कभी न अच्छा जग में है कहलाता,
साधारण जन भी पिड़ित हो जीवन दुखी बनाता,
जाति द्रोह से बढ़कर कोई पाप नहीं होता है,
एक हो दानव देव बराबर, कौन बड़ा छोटा है।

कश्यप की सन्तान सभी हैं, देव सदाचारी हैं,
अहं और मदमोह वशी, दानव अत्याचारी हैं,
श्रुतियों-स्मृतियों की नीतियों को सोदाहरण बताकर,
शिव ने जो संदेश दिया अच्छी विधि से समझाकर,

दानवेश ने जाते-जाते किया विनम्र निवेदन,
आदि देव जो कहा आप ने मेरा उसे समर्थन,
जाति द्रोह की बात बताकर उसे पाप बतलाया,
क्या यह असुरों के हित हैं ? देवों को नहीं बताया ?

अगर देव दानव दोनों के लिए है बात बराबर,
शंका का कर समाधान दे, हे महेश शिवशंकर,
मधु कैटभ का सिर क्यों था आपने चक्र से काटा,
त्रिपुरासुर के साथ युद्ध कर, भस्म उसे कर डाला,

देवों का ले पक्ष आपने जो भी काम किया था,
राजा बलि का सब कुछ लेकर क्यों पाताल दिया था,
हिरण्याक्ष तो देवों का था एक सहोदर भाई,
भाई को ही मार किसी भाई की हुई भलाई,



शुंभ-निशुंभ आदि को मारा देवों ने निर्मम हो,
सभी जाति थे एक, भेद क्यों किया गया निर्मम हो,
मन्थन हुआ महासागर का, दोनों सहभागी थे,
छुपे रूप में आप सदाशिव सुर के अनुरागी थे,
दानव दल को विष दे देवों को अमृत दे डाला,
आप तो हम दोनों के प्रिये थे, पक्षपात कर डाला,
कर्म तो करना ही पड़ता है, होता कोई प्रयोजन,
जीत हार है काल के हाथों भीषण हो जितना रण,
आप तो दोनों के स्वामी हैं, श्रद्धा कहीं न कम है,
हम भी तो सम्मान है देते, अगर कहीं कुछ भ्रम है,
तो दे उसे भुला शिवशंकर जायें कभी न रण में,
निर्णय हो जायेगा सच्चा, एक दिन समरांगण में,
देवों का ले पक्ष आप भी वैर भाव रखते हैं,
शोभा देती नहीं आपको, जो कुछ भी कहते हैं,
दानवेन्द्र का तर्क देख, बोले शिवशंकर हँसकर,
मैं स्वतंत्र हूँ भक्त का सेवक रहता बनकर,
अगर भक्त संकट में होता, मैं हथियार उठाता,
अधम आततायी जो भी हो उसको मार गिराता,
धर्म, कर्म पर जब भी कोई संकट है आ जाता,
पीड़ित होती मानवता जब कदाचार बढ़ जाता,
तेरे जैसा धर्म-निष्ठ कोई भी असुर न पाया,
इसीलिए तुमको सनेह वश इतना है समझाया,
देवों का सुख छीन असुर दल ने हैं उन्हें सताया,
सुनकर उनकी विनय युद्ध करने निमित्त मैं आया,
धर्म अधर्म यहाँ प्रति पक्षी, निश्चित है रण होगा,
महाप्रलय यह महाकाल का भीषण वह क्षण होगा,
मुझको यह सत्कार्य देवगण का करना ही होगा,
कह देना, जा शंख चूड़ से अब मरना ही होगा।





ॐ नमः शिवाय

देव-दानव महासंग्राम

दूत ने जाकर शंखचूड़ को शिव संकल्प सुनाया,
शंख चूड़ ने सेना को रण हेतु तुरत सजवाया,
कूच कर गई सारी सेना, भू-नभ था थर्राया,
इधर महेश्वर ने देवों की सेना को सजवाया,

लगे गूँजने मारू वाजे उठा जोर हुंकार,
मंचा जीव-जग में करुणा का ऐसा हाहाकार,
कल्प-कल्प से होता आया देवासुर संग्राम,
लगता था आ गई सुबह में महाभयानक शाम।

धर्म युद्ध था दोनो दल, कोई न किसी से कम था,
भारत की धरती पर जैसे महाकुंभ संगम था,
गगन आग वरसाने वाला, धरती आग उगलती,
धूँ-धूँ करके पाप-ताप से सारी बसुधा जलती,

जब-जब खतरा बढ़ा पुण्य पर, पापाचार बढ़ा है,
जब-जब सिर के ऊपर पानी अत्याचार चढ़ा है,
तब-तब ईश्वर की लीला ने है यह सृष्टि मिटाई,
युग-युग से तो यही कथा, जाती जग में दुहराई,

कभी पाप का शासन होता, कभी पुण्य का राज्य,
दोनों होते ग्राह्य मनों को दोनों होते त्याज्य,
यही हुआ इस महासमर में, बही खून की धारा,
धरती हो गई रक्त रंजिता कौन था जीता-हारा,

धर्म-निष्ठ हो, पाप-निष्ठ हो, सब हैं मारे जाते,
शिव की लीला-माया से दोनों संहारे जाते,
वही बनाती, वही मिटाती, यह सारा संसार,
प्रकृति करती जन्म-मृत्यु के रंगों से श्रृंगार,



नियत-काल में बँधा हुआ यह जीवन आता रहता,
कोई कारण लग जाता है, जग से जाता रहता,
कुछ ही दिन के लिए अहं का ताण्डव होता है,
आहत मानवता होती है, सदाचार रोता है।

ये ही शिव-शंकर जग का कल्याण किया करते हैं,
देते अमृत बाँट स्वयं विष पान किया करते हैं,
हद हो जाती जहाँ पाप की, कर देते हुंकार,
प्रलयंकर बन ताण्डव करते, करते हैं संहार

ये प्रतीक हैं ईश्वरता के लीला नित करते हैं,
शक्ति रूपिणी, प्रकृति रूपा हो, जग में रहते हैं
गौरी-गिरिजा, सती पार्वती चिर संगिनी भवानी,
शिव-शंकर महेश प्रलयंकर प्रभु की यही कहानी,

अलग-अलग धर्मों की अपनी, अलग-अलग परिभाषा,
महाप्रलय या कहें कयामत अपनी-अपनी भाषा,
ऋषि मुनियों ने बहुत शोध कर मनोयोग से पाया,
ईश्वरता के दर्शन के हित तन को बहुत तपाया,

एक शक्ति का केन्द्र कहीं है सत्य जहाँ पलता है,
परिवर्तन का लगा सिलसिला युग-युग से चलता है,
क्षण भंगुर इस तन पर मानव, क्यों इतना इतराता,
करता जैसा कर्म यहाँ पर वैसा ही फल पाता,

जान रहे हैं सभी, कभी तो देह छोड़ है जाना,
कहाँ है जाना ज्ञात नहीं है, नश्वर तन अनजाना,
जिसने दी है सारे जग को इतनी सुन्दर काया,
सारे सुख वैभव से पूरित यह संसार बनाया,

भूल गए हैं उसे मोहवश लोभ काम के चलते,
दौड़ रहे हैं स्वप्न लोक में सिर्फ नाम के चलते,
मोह निशा में हम सोये हैं, गलत रास्ते जाते,
पाप कर्म करते हैं हर दिन दौलत खूब कमाते,

भजो राम का नाम और शिव के गुण हरदम गाओ,
निश्छल मन से भक्ति भाव से सही राह अपनाओ,
वह दिन भी जल्दी जीवन में कभी है आने वाला,
जब अर्थी उठने वाली है अन्त है आने वाला,

जय शिव नमः शिवाय कहो रे, लोभ मोह छल त्यागो,
चादर ओढ़े महामोह की, समय है थोड़ा जागो,
देवासुर संग्राम तो हर क्षण मन में होता रहता,
नहीं जाग पाता माया से जगकर सोता रहता,

वह देखो आ रही शीघ्र ही मृत्यु की एक सवारी,
क्या लेकर जाना है सोचो, करो अभी तैयारी,
अलख निरंजन जय दुःख भंजन, अंजन नयन रचाओ,
महासमर में जीत आज सद्धर्मों को दिलवाओ ।।







ॐ नमः शिवाय

शिव जी की आठ मूर्तियाँ

सारा विश्व व्याप्त शिव की आठ मूर्तियों में है,
भूमि, जल, अग्नि, पवन, अन्तरिक्ष सारे ।
क्षेत्रज्ञ, सूर्य चन्द्र जो भी जग के कारक हैं,
प्रकृति है प्राणमयी जिनके सहारे ।
शर्व, भवं, रूद्र, उग्र, भीम और पशुपति रूप,
रूप है ईशान महादेव जिनके प्यारे ।
विश्वंभर रूप चर अचर को है धारण किये,
सारा ब्रह्माण्ड गोचर ग्रह नक्षत्र तारे ।



वाह्यान्तर सर्वत्र व्याप्त उग्र रूप शिव,
करता है पालन और जग को चलाता ।
सर्व व्यापक वाला रूप भीम नाम वाला है,
पशुरूप जीवन का पशुपति रूप दाता ।
सूर्य चन्द्र रूप में जो अग-जग प्रकाशित करे,
वह ईशान रूप शिव का शिवम् कहलाता ।
तप्त और शीतल करे सारा यह सृष्टिलोक,
जीवन चक्र जीवों का जिससे चला आता ।



मूर्त हो अमूर्त हो जो आत्मा रूप परमात्म,
शिव में समाहित यह दृश्य लोक सारा ।
कंठ में है नागहार, भालचन्द्र चंदन है,
जल से प्रवाहित है जहाँ गंगधारा ।
बाघम्बर आसन, रूद्राक्ष माल शोभे नित,
कर में त्रिशूल और डमरू है प्यारा ।
मेरा है प्यारा शिव, जगं का सहारा शिव,
आठ रूप शिवमय है जीवन हमारा ।





ॐ नमः शिवाय

अर्द्धनारीश्वरम्

सृष्टि-सृजन का काम समर्पित था ब्रह्मा के मन को,
वृद्धि न होती देख हुई, चिन्ता स्त्रष्टा ब्रह्मन को,
पड़ी सुनाई नभ की वाणी था आदेश निराला,
करो मैथुनी सृष्टि तो ब्रह्मा ने निश्चय कर डाला,

जब तक शिव की कृपा न होगी, लगे ब्रह्मण तप करने,
शक्तिरूपिणी के संग शिव का लगे ब्रह्म जप करने,
ध्यान योग में समाधिस्थ हो ब्रह्मा ध्यान लगाये,
आशुतोष शिव जी प्रसन्न हो, दर्शन वहाँ दिखाए,

नारी आधा, पुरुष अर्द्ध में प्रकट हुए शिवशंकर,
युगल रूप को ब्रह्मा ने कर नमन जोड़ दोनो कर,
धन्य हो गया मैं, हे शिवजी मिले आपके दर्शन,
"हूँ संतुष्ट तुम्हारे तप से - करो सृष्टि पावन मन"

देता हूँ वरदान-देखलो, नारी-नर दोनों तन,
सृष्टि कार्य आदेश आपका बोले तत्क्षण ब्रह्मर्षन्,
देवों की भी सृष्टि कर चुका वृद्धि नहीं होती है,
मैथुन विधि से प्रजा सृष्टि की अब इच्छा होती है,

मेरे अन्दर शक्ति नहीं है, नारी सृजन करूँ मैं,
प्रजा जनों की वृद्धि करूँ मैं, यह संसार भरू मैं,
हे जग-जननी तुझे शक्ति दे ऐसा विश्व बनाऊँ,
सभी चराचर के स्त्रष्टा, शिव में कर्त्तव्य निभाऊँ,

एक विनय है हे जगदम्बा, मुझपर दया दिखाएँ,
दक्ष प्रजापति मेरे सुत की कन्या बनकर आएँ,
"एवमस्तु" कह शक्ति विधाता को कर दिया समर्पित,
भ्रूकुटि मध्य से एक शक्ति ब्रह्मा को हो गई अर्पित,



पूर्ण करो वे सभी मनोरथ, यह संसार बनाओ,
शिव का था आदेश मनोरथ पूरा करने जाओ,
शिव में ही हो गई समाहित शिव जी अन्तर्धान हुए,
उसी मैथुनी विधि से, नाना जीवों के निर्माण हुए।

यही अर्द्धनारिश्वर छवि शिव की इच्छा का फल है,
जिसे पूजकर भक्तों का जीवन हो चुका सफल है।
जो सुनता है और सुनाता शिव की अमर कहानी,
उस पर खुश हो सुख देते हैं भोले और भवानी,







ॐ नमः शिवाय

श्वेत मुनि और ऋषभदेव के रूप में अवतार

सप्तम मन्वन्तर, वाराह कल्प जब आ जाएगा,
कल्पेश्वर भगवान रूप में दर्शन हो जाएगा,
शिव की वाणी सुन के हरसे मुनिवर सनत्कुमार,
करने लगे नमन झुक करके शिव को बारम्बार,

वे वैवस्वत मनु ही प्रपौत्र वन तेरे घर आऐंगे,
द्वापरान्त में हम होकर अवतीर्ण खुशी पायेंगे,
प्रवृति होगी गुरु युगों की व्यास वहाँ प्रभु होंगे,
द्विज हित कलि के अन्त काल में मुनि श्रेष्ठ हम होंगे,

हिमगिर के रमणीय शिखर पर ब्रह्मा शिष्य बनेंगे,
श्वेत और श्वेताश्वर श्वेत लौहित सुत सुयश करेंगे,
और श्वेत सिख सहित चार सुत करेंगे जग कल्याण,
मेरे अव्यय रूप का होगा कभी नहीं अवसान,

ध्यान योग के बिना न होंगे जग में मेरे दर्शन,
केवल सत्कार्यों से मुझको देखेंगे धर्मी जन,
और दूसरे द्वापर में जब सत्य प्रजापति होंगे,
कलियुग में सुतार नाम से हमीं जगत् में होंगे,

जितनी कल्प कथाएँ उतने नाम रूप में अन्तर,
एक हूँ मैं बनकर अनेक करता परहित जग में आकर,
परिवर्तन होते रहते हैं, कल्प बदलता रहता,
सृष्टि और पालन लय का यह क्रम चलता रहता।

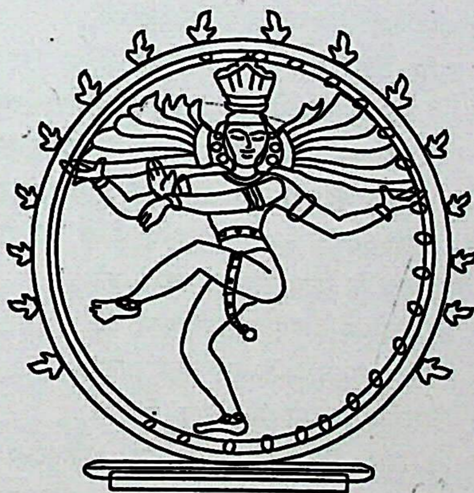
कभी कंक नाम से योगी तापस बन आ जाता,
कभी सनातन, सनत, सनन्दन भी हूँ मैं बन जाता,
बनकर सनत्कुमार कभी मैं सही राह दिखलाता,
कभी मृत्यु बन जीव जगत् को सत्य पथ मैं दिखलाता,



बनकर के लोकाक्षि मार्ग निवृत्ति का यहाँ दिखाता,
कभी यहाँ सर्वज्ञ हूँ जैगीषव्य प्रकट हो जाता,
काशी मैं एक गुफा में, लेकर के कूशासन,
देता हूँ निर्वाण-मोक्ष, देखा करते योगी जन,

कभी यहाँ भद्रायु नाम बालक को जीवित करता,
ऋषभ रूप में शोभित होता, जग को सुख से भरता,
नाम रूप, छवि कृति रूप में, मेरी अनुपम छाया,
आँखों पर पर्दा दे देती यह है मेरी माया,







ॐ नमः शिवाय

ग्यारह रूद्रावतार

सुनकर देवगणों की पीड़ा, कश्यप का मन डोला,
चले गए काशी रहते हैं, जहाँ विश्वपति भोला,
गंगा जल से स्नान हुए फिर विश्वनाथ मन्दिर में,
जगदीश्वर को गंगाजल से नहवाकर मन्दिर में
उमा सहित शिव की पूजा कर तप में ध्यान लगाया,
बहुत समय तक तपोलीन हो शिव के दर्शन पाया,
आशुतोष भक्ति प्रीति का आदर भी करते हैं,
हर-हर महादेव जो कहता, उसका दुख हरते हैं।

हे अविनाशी, काशीवासी सुन ले करुण व्यथा है,
देव, साधु, योगी, सन्यासी की जो सत्य कथा है,
पीड़ित है सब भक्त आपके दुःख अकथ्य सहते हैं;
दीन दशा है असुर दमन से, सब भागे रहते हैं,
सब है भव के पुत्र आज निर्बल असहाय हुए हैं,
कोई शक्ति है शेष न उनमें सब निरूपाय हुए हैं,
सुनते ही हो गए शून्यगत शिव शंकर त्रिपुरारी,
कश्यप के घर सुरभि रूप में हो गए वे अवतारी,

हुए एकादश रूद्र रूप के शिव शत्रुनाश करने को,
हुए अवतरित अँधियारे में, शुभ प्रकाश भरने को,
नाम कपाली पिंगल अद्भुत शक्तितेज बल वाला,
भीम भयंकर विरूपाक्ष अपने में आप निराला,
और विलोहित शास्तावन अर्हिदुर्दन्य भयकारी,
शंभु चण्ड भव सभी रूद्र थे, महाप्रलयंकर भारी,
दैत्यों का संहार हो गया देव हो गए निर्भय,
अब न शेष था कहीं उपद्रव नहीं कहीं भी था भय,
रूद्रों की यह कथा भक्त को निश्चित देती सम्बल,
नमो नमो शिव कहने से ही जाते हैं सब दुःख टल।





ॐ नमः शिवाय

दत्तात्रेय, दुर्वासा और चन्द्रमा का जन्म

अत्रि और अनुसूया ने जब मन में किया विचार,
एक पुत्र बिन सूना लगता घर आँगन परिवार,
पुत्र नरक से त्राण दिलाता कुल दीपक कहलाता,
जीव मात्र का जीवन से सार्थक हो जाता नाता,
उसी के बल पर आगे बढ़ता सृष्टि और संसार ।।1।।
ब्रह्म पुत्र थे अत्रि मुनीश्वर वेद शास्त्र के ज्ञाता,
पति-पत्नी सोचा करते, यह जीवन बीता जाता,
बिना पुत्र के नीरस लगता रहती बनी निराशा,
समय बीतता चला जा रहा मिटती जाती आशा,
मिट्टी व्यर्थ चली जाएगी होगा तन बेकार ।।2।।
यही सोचकर अत्रि रात-दिन लगे तपस्या करने,
त्र्यक्ष शिखर गिरि विन्ध्य निकट दिनरात मन्त्र जप करने,
सौ वर्षों तक पति पत्नी ने तप से बदन जलाया,
पुत्र लाल सा पूरी होगी ऐसा भी दिन आया,
अत्रि शीर्ष से प्रकट हुइ तब एक अग्नि साकार ।।3।।
उस ज्वाला से लगे झुलसने जब त्रिभुवन के वासी,
देव-दनुज नर त्यागी, तापस, साधु सन्त सन्यासी,
मची खलबली प्राणि लोक में, कैसी है यह ज्वाला,
जिसने भस्मी भुत सभी लोकों को है कर डाला,
ब्रह्मा, विष्णु, महेश बैठकर सोचें बारम्बार ।।4।।
पुत्र हेतु ही किया अत्रि ने महा कठिन तप भारी,
चलो चलें तीनों मिलकर, देते सलाह त्रिपुरारी,
गए वहाँ जिस जगह तपस्या रत थे मुनिवर ज्ञानी,
वेश देख पहचाने मुनिवर सबकी की मेहमानी,
नमन, स्तवन पूजन अर्चन विधिवत् शिष्टाचार ।।5।।



बोल पड़े त्रिदेव आ गए देने हम वरदान,
एक नहीं तीनों अंशों से होंगे पुत्र महान्
कहा अत्रि ने केवल शिव के लिए तपस्या रत था,
एक पुत्र के लिए तरसता जीवन मर्माहत था,
किन्तु आप तीनों ने मुझपर कृपा की अपरम्पार ।।6।।

तीन अंश से तीन पुत्र जो ऋषि कुल में आऐंगे,
कुल मर्यादा गौरव-गरिमा, जग में बढ़ जायेंगे,
ब्रह्मा से चन्द्रमा धरा को देंगे सुखद प्रकाश,
करते आए युगों-युगों से अन्धकार का नाश,
पुत्र योग्य हो तो बढ़ता है धर्म नीति आधार ।।7।।

विष्णु अंश से अत्रि वंश में दत्तात्रेय कहाते,
धर्म क्षेत्र में कीर्ति पताका सदा ही फहराते,
शिवजी से अंश हुए था नाम पड़ा दुर्बासा,
महा तेजस्वी त्रिकालज्ञ, सारे शास्त्रों के ज्ञाता,
अम्बरीश की कठिन परीक्षा लेने पहुँचे द्वार ।।8।।

लेते सबकी कठिन परीक्षा, फिर करते उपकार,
बड़े-बड़े राजा विज्ञानी करते थे सत्कार,
एक पुत्र के लिए किया था तप मुनिवर ज्ञानी ने,
तीन पुत्र दे दिये देवता तीनों वरदानी ने,
शिव शिव नमः शिवाय बोलिए पापी मन लाचार ।।9।।





ॐ नमः शिवाय

दधीचि का अस्थिदान

वृत्रासुर के सहायक दैत्यों से पराजित,
देवतागण, इन्द्र सहित भयाक्रान्त निरूत्साहित,
अपने शस्त्रास्त्रों को फेंक कर
दधीची के आश्रम में भागे-भागे पहुँच गए ब्रह्मा के पास
उदास-निराश !
ब्रह्मा ने बताया, रहस्य समझाया,
त्वष्टा ने तप द्वारा देवताओं के दमन के लिए
वृत्रासुर को जन्माया है, पाया है
वृत्रा अजेय है, पराक्रमी है, अतुलित बलशाली है,
समस्त दैत्यों का स्वामी है,
किन्तु अधोगामी है, पाप कामी है, इसीलिए मारा जाएगा,
जब दधीचि की अस्थियों से बनेगा बज्र ।
किसी समय दधीचि ने शिव की आराधना की-
साधना की और प्रार्थना की-
दधीचि की अस्थियों अविजेय बज्र हो गई,
जाओ दधीचि जीवन मुक्त है, त्रिकालज्ञ है, परहितानुरागी है,
शिव भक्त है, द्रवित हो जाएगा,
समाधान होगा और अस्थियों से बने बज्र से,
वृत्रासुर का अवसान हो जाएगा,
दधीचि देवताओं का प्रयोजन जान जाते हैं-
योगासन में बैठकर शरीर त्यागते हैं -
विना माँगे भी मिल जाता है जो देवता माँगते हैं -
परोपकार में देह मुक्त हो जाते हैं -
और अस्थियों का दान करते हैं,



आगत-अतिथि का सम्मान करते हैं,
ऋषि परम्परा का कीर्तिमान करते हैं,
"अतिथि देवो भव" का आदर्श निभाते हैं,
जय घोष होता है पुष्प वृष्टि होती है,
एक आतंक, एक भय, एक संहारक का नाश होता है,
धरती आँसू बहाती है, आकाश रोता है,







ॐ नमः शिवाय

पिप्पलाद का विश्राप, शनि पीड़ा निवारण

शिव जी को कहते हैं - हैं वे लीला के अवतार,
लीलाओं से भरा हुआ है, यह सारा संसार,
नश्वर तन में सुख-दुख दोनों का अपना ही घर है,
और इसी के मन मन्दिर में, बसता परमेश्वर है,
यही हर्ष है, यही शोक है, राग-विराग यही है,
यही नरक दुर्गन्ध और फिर गन्ध पराग यही है,
खुशियों का है यही सिलसिला, यहीं थिरकती मस्ती,
और इसी में बसी हुई है पीड़ाओं की बस्ती,
शंकर की माया की नगरी जहाँ चल रहा जीवन,
जब तत्व के निर्माता शिव सबका करते पालन,
सुख सम्पत्ति शिव ही देते हैं दुःख भी एक निर्यात है,
भक्ति प्रीति वश कर्म जन्य फल देती यह प्रकृति है,
पीड़ाओं में शनि की पीड़ा कभी नहीं टलती है,
शनि की गति है टेढ़ी-मेढ़ी, टेढ़ी ही चलती है,
सृष्टि की रक्षा करने पीड़ा हरने का सुविचार किया,
पिप्पलाद बन शिव ने मानव-जीवन का उपकार किया,
सहज दयावश देकर के वरदान भक्त का भला किया,
सोलह वर्षों तक शनि पीड़ा का जो शुभ अवसान किया,
श्रद्धा सहित प्रीति रख शिव का जो पूजन है करता,
शनि पीड़ा है नहीं सताती निर्भय हो जन रहता,
शंकर जी की प्रीति भक्त पर सहज भाव हो जाती,
शनि की कोप दृष्टि भक्त पर कभी नहीं आ पाती,
नमो-नमो शिव नमो-नमो कहता नमः शिवाय,
उसका हर लेते हैं शंकर दुःख-दारिद्र बलाय,





ॐ नमः शिवाय

शिव का ब्रह्मचारी रूप

दक्ष यज्ञ में स्वयं भस्म हो पुनर्जन्म में आई,
पार्वती, गिरिजा गौरी शैलजा वहाँ कहलाई,
शंकर को वर रूप में पाने हेतु लगी तप करने,
शिव-शिव नमः शिवाय मन्त्र का लगी वहाँ जप करने,

लेने हेतु परीक्षा शिव ने मन में एक विचार किया,
सातो ऋषियों को करने को जाँच हेतु तैयार किया,
शक्ति रूपिणी जगदम्बा का अचल-अटल वह व्रत था,
कोई भी विधि काम न आई पार्वती का तप था,

थक कर लौट गए सातो ऋषि शिव को हाल सुनाए,
कौन डिगा सकता प्रकृति को, लौट घरों को आए,
शंकर जी चल पड़े स्वयं ही लेने कठिन परीक्षा,
विचलित कभी न होने वाली थी गिरिजा की इच्छा,

बनकर एक ब्रह्मचारी शिव, काम लोभ के त्यागी,
इन्द्रियजेता, विश्व प्रणेता बनकर परम विरागी,
गए तपोवन जहाँ पार्वती, कठिन तपस्या रत थी,
शिव को वर के रूप में पाने हेतु सदा उद्यत थी,

अंग अंग में दिव्य कान्ति की आभा चमक रही थी,
पुष्प राग अनुराग तपोवन, शोभा चहक रही थी,
जटा जूट मय लिये कमण्डल एक विप्र है आया,
खड़ा विप्रवर दिए दिखाई जैसे नैन उठाया,

भक्ति प्रीति के सहित विप्र का आदर सह सत्कार किया,
पूजन कर विधिपूर्वक द्विज का सम्यक शिष्टाचार किया,
कौन आप है, कौन प्रयोजन लेकर के आए हैं,
देख आगमन इस वन में जो दीप्त तेज छाए हैं,



"मैं हूँ एक तपस्वी देवी परोपकार करता हूँ,
ब्राह्मण हूँ, ब्रह्मचारी हूँ, विचरण स्वच्छन्द करता हूँ,
हे देवी क्या बतलाऊँ विग्रह दिखलाई पड़ता,
होगा महा अनर्थ यहाँ स्वर यही सुनाई पड़ता,

नई आस्था, कोमल काया, नाहक जला रही है,
सुख भोगों को छोड़ क़ान्ति मय काया गला रही हैं,
कौन आप हैं किस उद्देश्य से तप में लीन हुई हैं,
कौन है ऐसी इच्छा जिसके आप अधीन हुई हैं,

स्मित भाव से पार्वती ने अपना सच बतलाया,
मैं हूँ शिव की प्रियतमा, यह नया जन्म है पाया,
सती नाम की दक्ष-सुता थी, परम दुलारी बेटी,
पिता हिमालय, माता मेना, राजकुमारी मैं थी,

किसी बात पर पिता दक्ष ने पति का था अपमान किया,
अनाहत चल गई यज्ञ में बदला लूँगी ठान लिया,
स्वयं भस्म हो गई और पति हो गए विरागी,
सारे रूप कान्ति मय सुख की सुविधा शिव ने त्यागी,

अमर प्रेमवश पुनर्जन्म ले इसी भवन में आई,
शिव की फिर से पाने के हित, धूनी यहाँ रहमाई,
कोई नहीं डिगा सकता है मुझे कठिन व्रत तप से,
शिव ही हैं आराध्य हमारे पा लूँ फिर तप से,

वे ही एक मात्र हैं मेरे, सब कुछ उन्हें समर्पित,
यह जीवन अब जन्म-जन्म तक उनको होगा अर्पित,
पति ही परमेश्वर होता है शिव हैं मेरे स्वामी,
साक्षी हैं शिव जान रहे हैं, वे हैं अन्तर्यामी,

हँसकर बोले छोड़ दो हठ, वह शिव मसान का वासी,
कापालिक है बैल सवारी वह योगी सन्यासी,
भस्म लेकर नित समाधि में लीन रहा करता है,
भूख मिटाता है पत्तो से दीन रहा करता है,

सब कुछ है विपरीत तुम्हारे फक्कड़ है मतवाला,
वह त्रिशूल डमरू धारी है, गले सर्प की माला,
शिव निन्दा सुनते-सुनते क्रोधित हो गई भवानी,
अरे धूर्त ब्राह्मण हट जा, जा दूर अभी अभिमानी,

ब्राह्मण जान किया था आदर तू तो अज्ञानी है,
सर्वेश्वर की निन्दा करता, मिथ्या अभिमानी है,
बोली विजया से इस नीच अधम को तुरत हटाओ,
शिव का निन्दक पापी होता इसे दूर कर आओ,

सुनकर बातें छद्म रूप को त्याग, रूप शिव धारण,
वही रूप जो पार्वती के तप का मौलिक कारण,
बोले शिव प्रसन्न हूँ देवी, जो चाहो वर माँगो,
मैं ही शिव हूँ - प्रियतमा हो, और रूप यह त्यागो,

मुझको अंगीकार करें प्रभु कभी साथ मत छोड़ो,
पाणि ग्रहण कर कल्प-कल्प तक कभी हाँथ मत छोड़ों,
हुए मनोरथ सारे पूरे, पूरी हुई कहानी,
अब तो साथ रहेंगे हरदम, भोले और भवानी,





शत रूद्र संहिता

ॐ नमः शिवाय

अश्वत्थामा के रूप में शिव

महा मनीषा पूर्ण बृहस्पति, देवगुरु विख्यात हुए,
उनके अश धरा पर ऋषिवर भरद्वाज सुविख्यात हुए,
उनके द्वारा पुत्र अयोनिज द्रोण अनु धनुधारी,
सकल बाण विद्या के ज्ञाता शस्त्र-शास्त्र आचारी ।।

कुल वर्द्धक, कुल गौरव रक्षक कौरव कुल के नायक,
कुलाचार्य हो शास्त्र-शस्त की शिक्षा के उन्नायक,
एक पुत्र के लिए द्रोण ने शिव व्रत को तत्पर,
हो प्रसन्न वरदान को देने हुए प्रकट शिव शंकर ।।

कर के सादर नमन द्रोण ने अपनी चाह सुनाई,
हो अज्ञेय बलवान पुत्र, अपनी इच्छा बतलाई,
दे अपनी ही अंश द्रोण पर शिव ने जो अवतार लिया,
अश्वत्थामा नाम पड़ा, द्विज का सपना साकार किया ।।

इसी वीर के चलते कौरव सेना में उत्साह भरा,
भय चिन्ता का कारण भी पाण्डव दल के मन में उतरा,
जब तक अश्वत्थामा जीवित जीत नहीं संभव है,
शिव का अंश भरा है उसमें द्विज कुल का गौरव है ।।

कहा कृष्ण ने सुन लो अर्जुन शिव पर ध्यान लगाओ,
आशुतोष की सहज दया का अनुपम सम्बल पाओ,
उग्र तपस्या करके शिव की अजुर्न ने जो पाया,
उन अमोध अस्त्रों के बल पर पौरुष था दिखलाया ।।

कृष्ण सारथी रथी थे अर्जुन देखा आगे आते,
अश्वत्थांमा भय- के वश हो रणो भूमि से भागे,
जाते-जाते अजित ब्रह्मशर अर्जुन पर जो छोड़ा,
वह अचूक थी महासमर में कहीं नहीं था जोड़ा ।।



भय से व्याकुल अर्जुन ने तब कृष्ण कृष्ण गुहराया,
कृष्ण सारथी ने अर्जुन को बार-बार समझाया,
यह शिव का ब्रह्मास्त्र नागशर विफल नहीं होता है,
करता है यह नाश सामने जो इसके होता है ।।

तुमने भी जो शिव से पाया उसका अभी प्रयोग करो,
वही रोक सकतां है इसको तुरत सफल उद्योग करो,
शिव की शक्ति समन्वित दोनों अस्त्रों में टकराव हुआ,
तब जाकर उस महाशक्ति का तत्क्षण दूर प्रभाव हुआ ।।

सोचा अश्वत्थामा ने पाण्डव कुल का संहार करूँ,
आज उत्तरा के गर्भस्थन शिशुओं पर ही वार करूँ,
छोड़ दिया ब्रह्मास्त्र उत्तरा व्याकुल हो घबड़ाई,
कृष्ण करो रक्षा संकट में अपनी टेर सुनाई ।।

शिव का कर स्मरण कृष्ण ने चक्र सुदर्शन छोड़ा,
रक्षा हुई अजन्मे शिशुओं की सबने कर जोड़ा,
कहा कृष्ण ने अश्वत्थामा को करके नमन मनाओ,
वह है शिव का अंश यत्नकर कृपापात्र बन जाओ ।।

ब्राह्मण था जब आर्त्त दशा में अर्जुन ने कर जोड़ा,
हो प्रसन्न पाण्डव कौरव दोनों दल को उसने छोड़ा,
अब तक हैं वे वर्तमान, गंगातट बने निवासी,
शिव हैं जो भी रूप रहें - वे होते हैं अविनाशी ।।



ॐ नमः शिवाय

द्वादशज्योतिर्लिंगावतार

हिमगिरि केदारनाथ, डाकिनी में भीम शंकर,
काशी में विश्वनाथ महिमा अपार है।
गोमती तट त्र्यम्बकेश्वर, सौराष्ट्र सोमनाथ,
शैल मल्लिकार्जुन को जानता संसार है।
शोभते उज्जैन महाकालेश्वर भोलेनाथ,
ॐकार अमरनाथ प्रकृति साकार है।
चिन्ता भूमि वैद्यनाथ दारूक बन नागेश्वर,
नाग नाथ तुमको प्रणाम बार-बार है।

सेतु बन्ध रामेश्वर शिवालय घुश्मेश्वर शिव,
कृपा करें दीनबन्धु शरण में तिहारी।
गौरी पति महादेव, गंगाधर अविनाशी,
दूर करें दारिद दुख जय हे भयकारी।
आधि व्याधि त्रिविध ताप हरे हे त्रिशूलधारी,
मैं हूँ अनाथ नाथ आप त्रिपुरारी।
देर हो रही है नाथ पाप सिन्धु बढ़ आया,
कृपा करें, कृपा करें, जय हे असुरारी।



कोटिरूद्र संहिता

ॐ नमः शिवाय

द्वादश ज्योतिर्लिंगों का माहात्म्य

जिनकी कृपा से भक्त पा जाते चारो फल,
जिनके चरणों में पलता यह धराधाम है,
अपनी ही माया से करते जो सृजन लोक,
जीवन चक्र चलता जिस कृपा से अविराम है,
भौतिक विकारों से रहित जो निर्विकार,
वाम भाग पार्वती जहाँ रहती आठोयाम है,
तेजोमय दीप्त कांति रहती असीम शान्ति,
ऐसे शिव शंकर को मेरा प्रणाम है।



योगी जन ध्यान में उतारते हैं दिव्य रूप,
विश्व रूप भव्य और ललित है ललाम है,
भस्मीभूत भूतनाथ जगन्नाथ, विश्वनाथ,
मन्दिर में भजन पूजन होता सुबह शाम है,
पर हित के रागी विरागी सिद्ध कामना से,
जीवन समग्र जिनका पावन निष्काम है,
कृपा करें आशुतोष दे दें अपार भक्ति,
ऐसे शिव शंकर को मेरा प्रणाम है।।



जितने भी लिंगों की महिमा शिव की गई बताई,
श्रद्धा भक्ति समर्पित भक्तों ने है मन की पाई,
भारत भर में शिव की पूजा की जाती है मन से,
सारे दुख मिटते जाते हैं, लिंगों के दर्शन से।



है असंख्य लिंगों के दर्शन विश्व पटल पर होते,
मन की पीड़ा और वेदना, दर्शन कर हम खोते,
द्वादश लिंग प्रधान देश में जो हैं पूजे जाते,
जिन्हें पूज करके मन वांछित फल हैं हम पा जाते ।

मुझमें तो सामर्थ्य नहीं है महिमा आज गिनाऊँ,
कैसे विश्वेश्वर की गाथा कहकर आज सुनाऊँ,
इतना है विश्वास महेश्वर सबकी सुन लेते हैं,
पात्र कुपात्र सभी की झोली खाली भर देते हैं ।

जो भी आया शरण में शिव ने अपनी कृपा दिखाई,
दारूण दुःख की भव बाधा को शिव ने तुरत हटाई,
मैं तो एक मूढ़ अधकामी हूँ अकथ्य अज्ञानी,
कृपा करेंगे, यही भरोसा है शिव औढरदानी ।



भूमि और सागर के तट पर सोमेश्वर रहते हैं,
सभी मनोरथ पूरा करते ऐसा सब कहते हैं,
मल्लिकार्जुन रूद्रेश्वर शिव लिंग है बड़ा प्रतापी,
तर जाता है दर्शन करके कितना बड़ा हो पापी ।

महाकाल दुत्वेश लिंग उज्जैन नगर का वासी,
जिसके दर्शन से मिट जाती भक्त की घोर उदासी,
केदारेश्वर में भूतेश लिंग है गौरवशाली,
जो दर्शन करता तन मन से कभी न जाता खाली ।

भीमेश्वर जो लिंग भीम शंकर का कहलाता है,
जन्म-जन्म के पाप हैं घुलते जो दर्शन पाता है,
सरस्वती के तट पर नागेश्वर भूतेश्वर का घर,
स्वयं दिया करते हैं दर्शन आकर के शिव शंकर ।

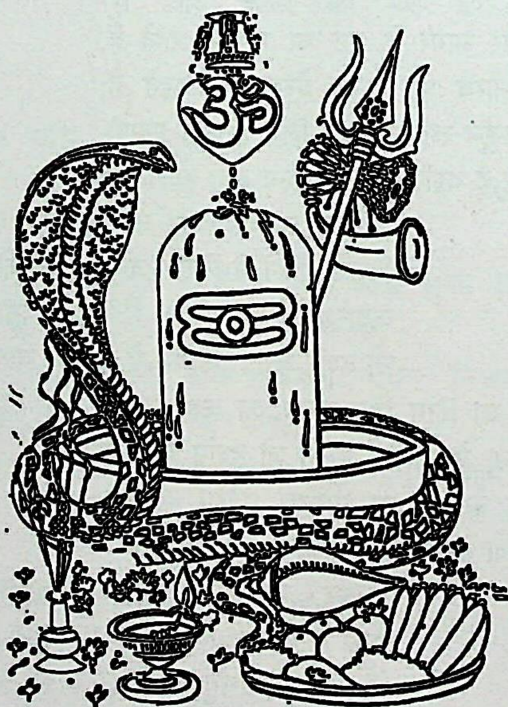
रामेश्वर, गुप्तेश्वर, घुश्मेश्वर, व्याघ्रेश्वर शंकर,
भक्तों के हित हो तो जाते हैं सहजभाव अभयंकर,
जीवन तो क्षणभंगुर ही है, एक बार कर दर्शन,
करो कृतार्थ करो शिवलिंगों के शुभ-दर्शन ।



लिंगों में ही मूर्तिमान शिव सदा स्मरण करते हैं,
भक्त जनों की मनोकामना वे पूरी करते हैं,
चलो करो दर्शन काशी में महादेव शंकर के,
चन्दन, बेलपत्र, अक्षत, गंगाजी का जल भरके।

कभी न खाली कोई लौटता जो जाता है काशी,
सहज दया दिखलाते बाबा विश्वनाथ अविनाशी,
काशी है त्रिशूल पर स्थित, विश्वनाथ की नगरी,
पाप-पुण्य का निर्णय करती, करती जग जगमग री।







ॐ नमः शिवाय

शिव सहस्त्र नाम

शिव नाम त्रिगुण रहित मंगल कारक होता,
हर नाम जग का संहार किया करता,
मृड सुख दाता, रूद्र संहारक पापों का,
पुष्कर पुष्टिकर्ता उपकार किया करता,
पुष्प लोचन, नेत्र कमल पुष्प के समान जिनके,
अर्पिगम्य मोक्ष का उपहार दिया करता,
सदाचार आचरण की शुद्धता का बोधक है,
रवि नाम अन्त का आधार दिया करता।
शंभु नाथ सुखदाता परमेश्वर, महेश्वर,
सबसे है ऊपर जो कहलाता मन से,
चन्द्र चन्द्रधारी नाम भालचन्द्र सार्थक हैं,
चन्द्रमौलि चन्द्रमा का साथ है जीवन में,
विश्व परब्रह्म का स्वरूप बतलाता है,
विश्वंभर अर्थबोध भरण पोषण में,
वेदान्त-सार संदोह ज्ञाता वेद शास्त्रों का है,
कपाली नाम, संकेत कपाल के धारण में,
नील लाहित जटाजूट लोहित वर्ण होने से
ध्यानाचारं योगियों का आधार होता है।
अपरिच्छेद्य होता है कभी परिच्छन्न नहीं,
गौरी भर्त्ता गौरी पति साकार होता,
प्रमथगण नियन्त्री गणेश्वर, गण नाथ शिव,
अष्टमूर्ति जिसमें यह संसार होता,
त्रिवर्ण स्वर्ग साधन है चारोफल दाता नाम,
ज्ञानगम्य ज्ञान का है संचार होता,



दृढ़ प्रज्ञ ज्ञानपूर्ण देवदेव शुभदाता,
त्रिलोचन तीन नयन, बोध है कराते,
ॐकार, अ, उ, म तीनों के बोधक हैं
कामदेव महादेव पूज्य कहे जाते,
पंटु दुखहर्ता परदृढ़ है अजेय शक्ति,
विश्वरूप,. विरूपाक्ष भय हैं मिटाते,
वागीश वाणी को देते महान शक्ति,
शुचि सत्तम् त्रिगुण भाव जग में दर्शाते,
वृषांक वृषवाहन नन्दीश्वर वाहन बोध,
ईश, सर्वेश्वर, पिनाकी धुनधारी,
षट्बांग चित्रवेष वेदधारक शिवजी हैं,
अन्तहीन बनते चिरन्तन त्रिपुरारी,
तमोहर करते हैं दूर अन्धकार सदा,
महायोगी, योगी महान भयहारी,
गोप्ता, ब्रह्म घूर्जटी तार धूतज़टा,
काल-काल महाकाल रूप अवतारी,
कृतिवास, व्याघ्र चर्म करते पिनाक धारण,
सुभग-स्वरूप कान्ति छवि को दरशाते,
पुरुष सर्वव्यापी शिव, जुष्य सर्व सेवा योग्य,
दुर्वासा बल्कल धारक शिव जी कहाते,
पुरषासन, त्रिपुरनाशक, दिव्यायुध पिनाकधारी,
स्कन्द गुरु कार्तिक के पिता कहलाते,
मेरे शिव, तेरे शिव, सबके शिव अभयंकर,
परमेशी, सकल गुणी नभ में हो जाते,
परात्पर अनादि मध्य निधन काल से भी परे,
वे ही गिरीश मेरुसुता के हैं स्वामी,
गिरिजाधव, गिरिजापति हैं कुबेर बन्धु भ्राता,
श्रीकंठ सौन्दर्य सौष्ठव के स्वामी,



लोक वर्णोतम तीनों लोकों में श्रेष्ठदेव,
मृद सौम्य रूप शिव संमाधिस्थ स्वामी,
नीलकंठ विषपायी परस्वधी सुखदाता,
विशालाक्ष कहलाते हैं अन्तर्यामी,
मृगव्याध व्याघ्ररूप हैं सुरेश सुरस्वामी,
सूर्यतापन, सूर्य सरिस हैं वे ताप दाता,
पोषणेति सूर्य जीवमात्र के वे पोषक हैं,
धर्माध्यक्ष धर्मों का रक्षक कहलाता,
क्षमा क्षेत्र क्षमाशील भगवान वैभवयुक्त,
उग्र नाम प्रलय का स्वरूप बतलाता,
पशुपति, पशुजीवों के रक्षक महान देव,
प्रिय भक्त भक्तवत्सल भाव दरशाता,
पर-तप शत्रुओं को ताप है बढ़ाने वाला,
दाता, सुखदाता, दयाकर कहलाते,
दक्ष अति कुशल कपर्दी ज्ञानदाता नाम,
काम शासन काम को वे राख हैं बनाते।
श्मशान निलय जो मसान में निवास करे,
सूक्ष्म जो स्थूल में है नजर नहीं आते,
आप है महेश्वर, देवों के भी पूज्य देव,
लोक कर्ता मृगपति महाकर्मा कहाते,
महौषधि ज्ञान विज्ञान सिद्ध रोग नाशक,
सोमपान करने से सोमय कहलाते,
सौम्य महातेज महाश्रुति है सभी सार्थक नाम,
तेजोमय अमृतमय सुधामय कहाते,
अन्नमय अजातशत्रु आलोकज्योतिरूप,
सम्प्राप्य हव्यवाहन नाम है सुहाते,
लोककर, वेदकर सूत्रकार सनातन,
सभी नाम भक्तों को सुख पहुँचाते,



महर्षि कपिलाचार्य विश्वदीप्ति त्रिलोचन,
कर में पिनाक भूदेव कहे जाते,
स्वनितप, सुकृत धातृधाम पृथ्वीधर्ता,
धामकर ये धराधाम आपही बनाते,
सर्वगः सर्वगोचर पर रखते हैं दृष्टि सदा,
ब्रह्मसिगा, विश्व सुक्सर्ग हैं कहाते,
कर्णिकार प्रिय कविसकल गण ज्ञाता है,
अग-जग में युग-युग से आप पूजे जाते,



साख और विसाख साथ नाम है गोसाख मधुर,
शिव अभिष धन्वन्तरि बोधक नाम आता,
अनुत्तम है द्योतक, कोई उत्तम नहीं शिव से है,
गंगाप्लवोदक जनतारक कहलाता,
भव्य, भव्यता सूचक, पुष्कल सर्वव्यापी रूप,
स्थपंसि भाव स्थाई रूप है दिखाता
बिजितात्मा विषयात्मा, भूत वाहन सारथि नाम,
अग-जग में कर्मों का है फलदाता,



सगणं गणकायं सुकीर्ति छिन्न संशय नाम,
यथा नाम तथा गुण महिमा बताते।
कामदेव काम पाल करते हैं पूर्ण काम,
भस्मी भूषित विग्रह भयं है हटाते।
भस्म प्रिय भस्म शायी अलखनिरंजन हैं,
कामी काय पूर्णकाम बोध है कराते।
वृतागम श्रुतियों को देते स्वरूप सत्य,
जितने नाम उतने काम शास्त्र बतलाते।



समावर्त निवृतात्मा धर्मपूज्य सदाशिव,
अंकल्मष शुद्धरूप चतुर्बाहु नाम है।



दुरावास, दुरासद, दुर्गम, दुर्लभ दुर्गा,
एक-एक नाम ललित है ललाम है।
सर्वायुध विशारद अध्यात्म योग निलय नाम,
शुभांग लोक सारंग छवि अभिराम है।
जगदीश प्यारा नाम जनार्दन विख्यात जहाँ,
भस्म शुद्धि कर जीवन करता निष्काम है।



मेरू ओजस्वी शुद्ध विग्रह असाध्य साधु साध्य,
रूप शिव का जो जग में विख्यात है।
भृत्य मर्कट रूप धृक् हिरण्य रेत अग्निबोधक,
पौराणी रूप जीवहर विदित है ज्ञात है।
महारूद्र महागर्त गंभीर सर माया,
योगी समुदाय जहाँ होता नित स्नात है।
सिद्ध वृन्दारविन्द व्याघ्र चर्माम्बरयुक्त,
व्याली गलहार शिवरूप सुख्यात है।



महाभूत, महानिधि, अमृताश, अमृतवपु,
पाञ्चजन्य प्रभंजनतत्त्वज्ञ जानते हैं।
पंच विंशति तत्त्वां के अन्तर में रहते हैं,
पारिजात का स्वरूप योगी पहचानते हैं।
सुलभ, सुव्रत, शूर, ब्रह्म वेदनिधि निधिपूर्ण,
वर्णाश्रम गुरुरूप सभी मानते हैं।
शत्रुजिच्छतनु तापन आश्रम क्षपश क्षाम,
शास्त्र वेद सभी अनुमानते हैं।



ज्ञानवान् अचलेश्वर, प्रमाण भूत दुर्ज्ञेय,
महिमा अपार कोई विरले जान पाता।
सुवर्ण वायु वाहन धनुर्धरा धनुर्वेद,
गुणराशि गुणाकर नाम कहा जाता।



सत्य-सत्यपरं दीन धर्मागं धर्म साधन,
कल्प कल्प नाम रूप सभी बदल जाता।
नाम रूप गुण अनेक सब हैं चिरन्तन जहाँ,
युग-युग से सत्य नाम यहाँ चला आता।



है अनन्त दृष्टि फिर आनन्दमय स्वरूप जहाँ,
दण्डी स्वरूप दण्ड करते, पाप हरते।
अभिवाद्य महामाया विश्वकर्मा सुविशारद,
वीतराग विनीतात्मा रूप धारण करते।
तपस्वी भूतभावन मनभावन नाम शिव जी के
उन्मत्तवेष प्रच्छन्नहर्ष मोद भरते।
जित काम अजितप्रिय, कल्याण प्रकृतिपूर्ण,
कल्प सर्वलोक प्रजापति पोषण करते।
तपस्वी तारक धीमान और है प्रधान प्रमुख,
है वे सर्वज्ञ ज्ञान सुधा बरसाते।
लोक पाल अन्तरात्मा कल्प कमलेक्षण है,
वेद शास्त्र तत्त्वज्ञ वे ही कहलाते।
नियम-नियता श्रय शिव चन्द्र सूर्य शनि केतु,
वरांग विद्रुम छवि वाले कहाते।
भक्तिवश्य, परब्रह्म मृग बाणार्पण अनध,
पाप, ताप सारे अग-जग के मिटाते।
अद्रि नेरू रूपवाले हिमगिरि के वासी शिव,
कान्त परमात्मा जगद्गुरु कहाते।
सर्व कर्म सन्तुष्ट मांगल्य मंगलवृत,
महातप दीर्घतप लीन वे हो जाते।
स्थविष्ट, स्थविर, ध्रुव, अह सम्वत्सर सभी,
व्याप्ति सर्वत्र थाह नहीं हम पाते।
परम तप प्रमाण सम्वत्सर मन्त्र प्रत्यय के
सर्वदर्शन हे शिवजी कैसे कर पाते।।





अज सर्वेश्वर सिद्ध महारेत, महावली,
योगी योग्य महातेज सिद्धि सुखदाई ।
सर्वादि हेतु वसु पालक संचालक शिव,
सत्य सर्व पापहर छवि है शुभदाई ।
सुकीर्ति शोभन अवाऽमन गोचर छवि,
मूढ़ मन को अभी नहीं पड़ती दिखाई ।
अमृतशाश्वत शान्त वाणहस्त शैवरूप,
अति ही प्रताप वान् कृपा है पाई ।



कमण्डलुधारी धन्वी वेदांग वेद सहित,
भ्राजिष्णु भोजन भोक्ता है आप शंकर ।
लोकनाथ दुराधार, अतीन्द्रिय महामाय,
सर्ववास, चतुष्पथ के गामी अभयंकर ।
काल योगी महानाद, महोत्साह, महाबल,
रक्षा करे, रक्षा करें, जय हे प्रलयंकर ।
महाबुद्धि, महावीर्य, भूतचारी महादेव,
कृपा करें कृपा करें, जय हे पुरन्दर ।।



निशाचर प्रेतचारी महाशक्ति महाद्युति,
अनिर्देश्य वपु है हे श्रीमान् शंकर ।
सर्वाचार्य मनोगति मैं हूँ मन्द मूढ़ मति,
बहुश्रुत महामाया में सीमित हूँ बँधकर ।
नियतात्मा, ध्रुव, ध्रुव ओजस तेजी,
त्रिधर नर्तक सर्वशासक शुभंकर ।
नृत्य प्रिय नृत्य नित्य ही प्रकाश पुंज,
आया हूँ शरण नाथ जीवन से थककर ।
कहते प्रकाशात्म, ज्योति के प्रकाशक आप,
ॐकार मंत्र बुध ज्ञाता हैं आप ही ।



सार संप्लव संसार सागर से करते पार,
युगादि कृद्यगावर्त त्राता हैं आप ही।
गंभीर बृषवाहन, इष्ट और विशिष्ट आप,
शिष्टेष्ट शलभ शरण दाता हैं आप ही।
शरभ, शरभ, धनुर्धारी तीर्थ रूप कहे जाते,
दुख करते दूर सुखदाता हैं आप ही।



अपानिधरधिष्ठान विजयो जय कालवित्,
प्रतिष्ठित प्रमाणज्ञ आप विख्यात हैं।
हिरण्य कवचधारी हरि भव भयहारी नाथ,
विमोचन अधनाशक विघ्नेश रूपज्ञात है।
विदु संज्ञय आत्मरूप, बाल रूप, ब्रह्म ललाट,
बलोन्मत्त विकर्ता स्वरूप प्रख्यात हैं।
गुह्य गहन गृह करण कारण सब आप ही हैं,
आपकी यह माया तो जग में अज्ञात है।



सर्वबध विमोचन व्यवसाय, व्यवस्थान सभी,
स्पानद जगादादिज आप ही से आते।
गुरूदा ललित अभेद भावातात्म संस्थित जो
वीरेश्वर वीरभद्र आप ही बन जाते।
वीरासन विधि विराट् वीर चूड़ामणि विराट्,
तीव्रानन्द. नदीधर आप ही कहाते।
आज्ञाधार अस्त्रि शूली शिपिविष्ट शिवालय
आपही के नाम शास्त्र हमें बतलाते।



बालखिल्य, महाचाप, लिग्मांश बधिर खग,
निर्भर हो करते हें विचरण गनन में।
अभिराम सुशरण, सुब्रह्मण्य, सुधापति शिव,
मधवा कौशिक स्वरूप होते तन मन में।



गोमान अविराम, सर्वसाधन सम्पन्न,
ललाटाक्ष विश्वदेह होते त्रिभुवन में।
सारा संसारचक्र प्रलय काल धारण करें,
बार-बार संलग्न जीवन सृजन में।



लेकर अमोध दण्ड पक्षपात हीन न्याय,
होकर मध्यस्थ रूप से हिरण्य ब्रह्म वर्चस्व दिखाते।
परमार्थ परोमाया शबरो व्याघ्र लोचनशिव,
रुचि विरंचि स्वर्बन्धु वाचंस्पति कहाते।
हर्षित रवि विरोचन स्कंद शास्ता-शंकर,
वैवस्वत मनु होकर सृष्टि क्रम चलाते।
युक्तिरून्नत कीर्ति सानुराग परञ्जय जय,
कैलास अधिपति सहज दया हैं दिखाते।



कान्त सम्भ्रान्त सविता रवि लोचन जिनके हैं,
सम्यक् दृष्टि रखते हैं शिव औढ़रदानी।
विद्वत्तम वीतभय विश्वभर्ता अनिवारित,
नित्य नियत कल्याण करते स्वभिमानी।
पुण्य श्रवण कीर्तन दूर श्रवा विश्वासह,
एक रूप सक्त शक्ति भव सह भवानी।
ध्येय दुःस्वप्न नाशन उत्तारण दुष्कृति सब,
कौन है उदार ऐसा, ऐसा कौन दानी।
अनादि र्भू, भूवोलक्ष्मी किरीटी त्रिदशाधिप शिव,
विश्व गोप्ता, विश्वकर्ता जय शिव अविनाशी।
सुवीर, सुरूचिर अंगद, वाजूबन्द धारण किए,
जननो जन जन्मादि कर्ता सुखराशि।
प्रीतिमान नीतिमान् सबसे सम्पन्न नाथ,
कश्यप, वशिष्ठ भानु भीम सुंप्रकाशी।



प्रणव सत्पथा चारी महाकोश, महाधन,
जन्माधिप महादेव संकलागमवासी ।



तत्त्व तत्त्वज्ञ आत्म विभु विश्व-विभूषण,
ऋषि, ब्राह्मण हैं सबका करते परिवर्द्धन ।
जन्म-मृत्यु जरातिय सबका अतिक्रमणकर्ता,
शिव कृपा से हो जाता युग का परिवर्तन ।
पंच यज्ञ उत्पन्नकर्ता शिव विश्वेश्वर,
विमलोदयकर्ता मंगल कारक पावन ।
आत्म योनि अनाद्यन्त भक्त वत्सल,
भक्तों की रक्षा हेतु करते तन धारण ।



गायत्री वल्लभ प्रांशु विश्वावास प्रभाकर,
शिशु गिरिरत सम्राट सुषेण सुखदायक ।
अमोध अरिष्ट नेति सुखदायक निज भक्तों के,
कुमुद ज्वर विगत कर्ता शिव गण नायक ।
आत्मज्योति आत्मरूप अभय करे पृथ्वी को,
यज्ञ जाप धर्म कर्म सबके उन्नायक ।
त्राहिमाम, त्राहिमाम कृपा करो आशुतोष,
शिव शंकर अभयंकर जग के विधायक ।।



पिंगल कपिलश्मश्रु कपिल रंग दाढ़ी मूँछ,
भालनेत्र त्रयी तनु वेद के हैं धारक ।
ज्ञानस्कंद मोक्षदाता महानीति ज्ञाता,
विश्व स्रष्टा प्रलयकर्ता जग के उद्धारक ।
भग विवस्तन आदित्य देव रूप धारण कर,
योगधारक भक्तों के हो जाते दवारक ।
दिवस्श्रति इन्द्ररूप कल्याण गुण नाम,
असुरों के त्रास-ताप भय के संहारक ।।



पुण्यदर्शन पापहारी, उदारकीर्ति उद्योगी,
सहयोगी सद्सन्मय जग का भला करते।
नक्षत्रमाली नक्षत्रों की माला पहन,
नाकेशस्वर्गपति जब हैं चला करते।
करते विनाश अधकामी मदान्धो का,
जब वे शिव भक्तों को कभी छला करते।
स्वाधिष्ठान, प्रदाश्रय वन देते सुख भक्तों को,
खुलते ही दिव्य चक्षु काम जला करते।
पवित्र पाप हारी मणिपूरक नभोगत शिव,
ह्रतपुण्डरीक आसन योगिराज होते।
शक्र, इन्द्र सम स्वरूप शांत वृषाकपि रूप,
भक्त वत्सल आशुतोष कभी नहीं सोते।
उष्ण हालाहल पायी गृहपति और कृष्ण रूप,
करते अनर्थ-नाश रौद्र रूप होते।
अधर्म शत्रु दोनों का नाश करें सदाशिव,
होकर अधीर भी वे धैर्य नहीं खोते।
वे हैं अज्ञेय पुरुहूत पुरुश्रुत योगी,
जल्दी नहीं जान पाते ध्यान जो लगाते।
ब्रह्मगर्भ वृहद्गर्भ करते ब्रह्माण्ड धारण,
धर्म, धेनु धनागम के मार्ग हैं दिखाते।
जग के हितैषी सुगत बुद्ध रूप धारक शिव-
बनकर कुमार कामदेव को जगाते।
कुशलाग वाले कल्याण सारे अग-जग का,
शिव हैं शिवत्व-भाव हरदम निभाते।



हैं शिव हिरण्यगर्भ, ज्योतिष्मान अग-जग में,
नाना भूत रत होकर रमण किया करते।
ध्वनि नारद रूप होकर रातो दिन स्वर भरते,
वे हैं वराग राग रहित हुआ करते।



नयनाध्यक्ष आँखों में सबके बसा करते हैं,
विश्वामित्र धनेश्वर भ्रमण किया करते हैं।
ब्रह्म ज्योति रूप शिव ललाम हैं : सुधाम शिव,
महा ज्योति उत्तम संचरण किया करते।



मातामह, मातरिश्वा, माता-पिता सबके पिता,
नामहार धृक सर्पहार हैं पहनते।
पुलस्य पुलह रूप में अवस्थित सदाशिव हैं,
ॠषि अगस्त वे ही शिव यदा कदा बनते।
जातो कर्ण्य पराशर वन करते मार्ग दर्शन हैं,
निरावरण निर्वाद विरंचि वेही बनते।
विष्टरश्रवा विष्णुरूप धर्म रक्षा करते हैं,
सर्वव्यापी शिव सबके मन की हैं सुनते।



आत्मभ् आत्म ज्योति रूप अनिरूद्ध रूप प्रबल,
अत्रि ज्ञानमूर्ति मेरे शिव जी कहाते हैं।
महायशी लोक वीराग्रणी ज्ञान अग-जग में,
होकर प्रचण्ड वे पराक्रम दिखाते हैं।
व्याल कल्प नागभूषित, महाकल्प कल्पवृक्ष,
कलाधर स्वरूप जहाँ अमृत बरसाते हैं।
अलंकरिष्णु होकर करते हैं अलंकार धारण,
अचल रोविष्णु रूप भी वे ही बनाते हैं।



विक्रमोन्नत और आयु शब्द पति हैं,
वेगी पवन शिरिष सारथि आप कहे जाते।
असंत्रेष्ट अतिथि शक्र प्रमाथी आप ही हैं,
पाद पासन आप ही तो हरदम लगाते हैं।
वसुश्रवा हव्यवाह प्रतप्त विश्वभोजन प्रिय,
जप्य जप जरादिशमन आप ही कराते हैं।



लोहितात्मा तनून पात रक्त वर्ण शोणित हैं
वृहदश्व नभोयोनि कारण बन जाते हैं।



सुप्रतीक तामि सृहा तिमिर दूर करते आप,
निदाध तपन मेघ रूप होकर मिटाते हैं।
स्वक्ष, सुघर नेत्र वाले पर पुर के विजेता आप,
सुखानिल सुनिष्पन्न सुरभि फैलाते हैं।
शिशिर ऋतु के सुखद दृश्य आप ही दिखाते नाथ,
वसन्द माधव ग्रीष्म बीज वाहन नभ पाते हैं।
अंगिरा गुरु अत्रेय विमल विश्व पावन नाथ,
पावन सुमति विद्वान् आप ही कहाते हैं।



त्रैविद्य ऋग, यजु, साम वेदो के ज्ञाता शिव,
नर वाहन, पक्षराज धनपति हैं स्वामी।
मनोबुद्धि अहंकार और क्षेत्रपालक आप,
जमदग्नि बलनिधि हैं आप अन्तर्यामी।
विशाल विश्वगालव अघोर अनुत्तर स्वरूप,
भक्तिभाव से दर्शन पाते मनो कामी।
यज्ञ, श्रेय, निश्चय स्वरूप आप राती दिन
दानवारि संहारक परहित पथ गामी।
रजनीजनक, कालरात्रि के हैं उत्पादक,
चारू विशल्य लोक कल्पधृक् हैं कहलाते।
चार वेद चतुर्भाव, चतुर और चतुरप्रिय,
श्राम्नोया सभामनाय तीर्थ रूप पाते।
देवता शिवालय बहुरूप और महारूप,
सर्वरूप चराचर सबमें दिखाते।
न्याय निर्णायक न्यायगम्य हैं निरन्तर आप,
सहक्षमूर्धा देवेन्द्र सहस्र प्रभंजन कहाते।





मुण्डीलम्बेकेशवाले विरूप श्रेष्ठ रूपधारी,
विक्रान्त अतुल तेज दण्डी हैं शिव जी।
गुणोत्तम हैं, पिंगलाक्ष जनाध्यक्ष नीलग्रीव,
सहसबाहु सर्वेश शरण्य आप शिव जी।
सर्वलोकधृक परम ज्योति सम्बर्द्धक शिव,
फलप्रदा परम पुरुषार्थ रूप शिव जी।
पद्मगर्भ, महागर्भ, महावन्दनीय आप,
विश्वगर्भ विचक्षण वरेश आप शिवजी।



देवासुर गुरुदेव, देवासुर महाश्रय हैं,
देवाधिदेव देवाग्नि दवाग्नि सुखदाता हैं।
देवासुरेश्वर दिव्य, देवासुर महादेव,
देव-देव देवात्म संभव शुभदाता हैं।
सद्योनि, असुर, व्याघ्र देव सिंह दिवाकर,
विवुधाग्रवा श्रेष्ठ सकल ज्ञान ज्ञाता हैं।
शिवज्ञानलीन श्रीमान् शिख पार्वती,
पर्वत प्रिय, बज्रहस्ता आप अधिष्ठाता हैं।



सिद्धि खंगी नरसिंह निपातनशरकर्ता शिव,
ब्रह्मचारी लोकचारी शिव को नमन है।
धर्मचारी धनाधिव नन्दी नन्दीश्वर नाथ,
अनन्त नग्न व्रतधर का नित-नित चिन्तन है.।
लिंगाध्यक्ष, सुराध्यक्ष, योगाध्यक्ष, युगवाही,
स्वधर्मा, स्वर्गत को अर्पित तन मन है।
स्वरभय, सप्तसुरलय के ज्ञाता त्रिपुरारी को,
मनसा वाचा कर्मणा ये मेरा समर्पण है।



बाणाध्यक्ष बीजकर्ता कर्मकृद्ध मैश्रंभव,
दंभ अलोभ, अर्थ वित शंभ्र नाम आप ही के।



सर्वभूत महेश्वर, श्मशान निलय त्र्यक्ष,
सेतु अप्रति आकृति सब धाम आप ही के।
लोकोत्तर स्फुटालोक त्र्यम्बक् भाग भूषण छवि,
रूप नाम गुण सब अभिराम आप ही के।
अन्धकार असुर के निकन्दन आप भोलेनाथ,
भव-भय भार टालने के काम आप ही के।

●

विष्णु कंधर पातन हीन दोष अक्षय गुण,
दक्षारि पूषदंत तोड़क शिव ही आप ही कहाते।
पूर्ण, पुरयिता पुण्य सुकुमार सुलोचन,
साम मयं पेय, अक्रूर नाम विख्यात है।
पुण्य कीर्ति अनामय मनोजवे तीर्थंकर नाम,
जटिल जीवितेश्वर नाम अग-जग को ज्ञात है।
जीवितांतकर प्रभाव नित्य वसुरेता वसु प्रद,
सद्गति सत्कृति सिद्धि शुभ्रकर प्रभात है।
सज्जाति कालकंटक कलाधर महाकाल,
भूतसत्य परायण जैसे पारिजात हैं।

●

लोक लावण्य कर्ता, दुखहर्ता हे विश्वनाथ,
लोकोत्तर सुख आलय नाम सुखकारी।
चन्द्र संजीवन और शास्ता लोकगूढ़ नाम,
महाधिप लोकबन्धु नाम शुभकारी।
लोकनाथ, कृतज्ञ कीर्तिभूषण कहाते आप,
अन पायोक्षर आप ही हैं त्रिपुरारी।
कान्त सर्वशस्त्र, भृताम्बर तेजोमय नाथ,
द्युतिधर लोकनामाग्रणी जय हे भयहारी।

●

शुचि स्मिति प्रसन्नतात्मा, दुर्जन, दुरविक्रम,
ज्योतिर्मय जगन्नाथ निराकार शिव जी।



जलेश्वर तुम्ब वीणा, महाकोप सह-विशोक,
शोकनाशन त्रिलोकपति, साकार शिव जी।
सर्व-शुद्धि, अधोक्षज अव्यक्त लक्षण महादेव,
व्यक्ताव्यक्त अगजग के आधार शिव जी।
विशांपति वंर शील वर गुण सारो मानधन,
ब्रह्मा, विष्णु, प्रजापाल जनाधार शिवजी।

●

हंसोहंस, गतिर्वय बेधा विधाता धाता,
सृष्टा, हर्ता चार मुख सुरथदाता शिव जी।
कैलास शिखर वासी सर्ववासी सदागति,
हिरण्यगर्भ, द्रुहिया है; शुभ दाता शिव जी।
भूत पाल, भूपति, सदुयोगी, विद्योगी नाथ,
वरद ब्राह्मण प्रिय है; भयत्राता शिव जी।
देवप्रिय, देवनाथ, देवज्ञ, देव चिन्तक,
विषमाक्ष, विशालाक्ष सर्वज्ञाता शिवजी।

●

वृषद् वृषवर्द्धन, निर्मम निरहंकारी,
निर्मोही निरूप्रदवआप ही कहाते।
दर्पहा, दर्पदीदृप्त सर्शतु परिवर्तक हैं,
सहस्त्रजित सहस्त्रार्चि आप जाने जाते।
स्निग्ध प्रकृति, दक्षिणभूत, भव्य भवन्नाथ प्रभो,
प्रभवभृति नाशन रूप आप ही .बनाते।
अर्थ और अनर्थ महाकोश परहिताय पंडित,
निष्कंटक, कृतानन्द, सुख है पहुँचाते।

●

निर्व्याज मान-मर्दन, सत्य मान सात्विक नाम,
सत्य कीर्ति स्नेह कृत्त, आगम नाम पावन।
अकम्पित गुण ग्राही नौकात्मा नैक,
कर्म कृत सुप्रतीत सुमुख नाम, लगते मनभावन।

सूक्ष्म, सुकर, दक्षिणा निल, स्कन्दधर,
धूर्य प्रकट : प्रीतिवर्द्धन शुभदर्शन।
अपराजित, सर्व सत्व गोविन्द सत्व वाहन,
अधृत स्वधृत, सिद्धपूत, भूति यशोधन।



वाराह, शृंगधृक्, शृंगी, बलवान एक नायक रूप,
श्रुति प्रकाश, श्रुतिमान, एकबन्धु शंकर।
लेते अनेक रूप श्री वत्सल शिवादंभ,
शातभद्र यशीसम शिव हैं शुभंकर।
भूयशी, भूषण भूत-भूत में अवस्थित हो,
भूत भावन लोक पूजित शिव अभंकर।
अकम्पी भक्ति काय, काल्हा नील लोहित रूप,
सत्यव्रत महात्यागी, नित्य शांति सुखकर।



परार्थ वृत्ति वरदानी, विविक्षु विशारद शिव,
शुभद शुभकर्ता शुभनाभा शिवदानी।
स्वयं शुभ अनर्थित साक्षी करते हैं कनक प्रभा,
स्वाभाविक भद्र हैं, मध्यस्थ औढरदानी।
शीघ्रगमन करने शीघ्र नाशक हैं नवभय के,
शिखण्डी कवची, शूल जटी स्वाभिमानी।
मुंडी और कुंडली अमृत्यु सर्वदृक साथ
तेजो राशि महा मणि धारक महाज्ञानी।



असंख्य अप्रमेयात्मा, वीर्यवान वीर्य कोविद,
वैद्य वियोगात्मा, पराबर मुनीश्वर।
अनृत और दुराघर्ष मधुर प्रिय दर्शन नाम,
सुरेश शरणं सर्वशब्द, वृहत् परमेश्वर।
सतांगति, कालपक्ष, कालकारी ककणीकृत्,
सुकि महेष्वास नही भर्ता सर्वेश्वर।



निराकलंक विशृंखल माया बन्ध रहित शिव,
त्राहिमाम् त्राहिमाम् जय हे महेश्वर।



द्युमणि स्तरणि धन्य सिद्धि सिद्ध साधनपूर्ण,
विश्व संवृत तुल्य व्येढोरस्क वक्ष अतिपावन।
महाभुज सर्व योनिनिरातंक नर नारायण,
प्रिय निर्लेप विष्प्रपंच शंकर मन भावन।
दिव्यंगा, व्यंगनान स्तवप्रिय स्तोता व्यास,
पूर्तिमय निरंकुश निरवद्यमय सुहावन।
विद्याराशी रस प्रिय आनन्द सुखदाता शिव,
कृपा करो नाथ कव्यथाहर लोभपावन।



हे प्रशान्त बुद्धि अक्षुण्ण संग्रह नित्य सुन्दर रूप,
वैयाघ्रधुय धारण कर दो दर्शन।
शाकल्य शर्वरी पति परमार्थ गुरुदृष्टि करो,
शरीराश्रित वत्सल मैं करता अभ्यर्थन।
स्तमीरसज्ञरसद सर्व सत्वालम्बान,
कर रहा हूँ बार-बार स्तुति भजन मन।
कृपा करो भोलेनाथ मैं हूँ अनाथ नाथ,
ज्ञानहीन आँखें रचा दो प्रभु अंजन।





ॐ नमः शिवाय

शिव सहस्त्र नाम स्तोत्र का फल

जो जन प्रतिदिन नाम है जपता, या करता है नित्य श्रवण ।
उसको तुरन्त प्रसन्न भाव से शिव जी देते हैं दर्शन ।
इसी नाम जप के चलते हरि हुए सुदर्शनधारी,
अपने भक्तों पर खुश होते शिव शंकर त्रिपुरारी ।।

एक हजार एक सुमन शतदल से करते पूजन,
हुए विष्णु पूजा रतकर के ध्यान मनन कर चिन्तन,
एक फूल की कमी देखकर चढ़ा दिए निज लोचन,
प्रकट हुए शिव और उन्हें मनचाहा दे वरदान,
देकरके संदेश सृजन का हो गए अन्तर्धान,
चक्र सुदर्शन देकर हरि को उन्हें अभय वरदान दिया,
विष्णु रूप हो विष्णु सृष्टि का बार-बार कल्याण किया,
शिव तो भक्ति के भूखे हैं जो भक्तिभाव दिखलाता,
निश्चित है वह इस जीवन में शिव के दर्शन पाता,

एकाक्षर ॐकार मंत्र पंचाक्षर नमः शिवाय,
ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय,





ॐ नमः शिवाय

नारद का शिव तत्त्व श्रवण

ब्रह्मा ने आत्मज नारद को था शिवतत्त्व सुनाया,
शिव की महिमा अतुल अगम है सार तत्त्व समझाया,
लक्ष्मी के संग कभी विष्णु ने शिव स्तवन किया था,
हो प्रसन्न शिव ने हरि को मनचाह सभी दिया था।

ऋषि मुनि साधक और तपस्वी योगी फिर सन्यासी,
बैरागी-रागी कष्टी सुख कामी और उदासी,
सभी भक्ति पूर्वक शिव का नित ध्यान किया करते हैं,
औढरदानी हो प्रसन्न वरदान दिया करते हैं।

अरून्धती लोपामुद्रा अनुसूया और अहिल्या,
विश्वामित्र दधीचि और जैमिनि की देख तपस्या,
गर्ग याज्ञवल्क्य, पराशर भरद्वाज मुनि ज्ञानी,
कितने नाम गिनाऊँ नारद महिमा जानी-मानी।

देव और दानव मानव सब शिव के भक्त हुए हैं,
कुछ तो तपी विरक्त और कुछ कामासक्त हुए हैं,
बिना भेद के शिवशंकर ने सबका भला किया है,
भले छली भक्तों ने उनको हरदम छला किया है।

कोई भी हो, जो शिव का पूजन अर्चन करता है,
अन्तकाल शिवपुर में जाता जब भी वह मरता है,
एकमात्र शिव महादेव ही हैं सर्वत्र पूजाते,
सबको देते मनचाहा जो शरण में हैं आ जाते।

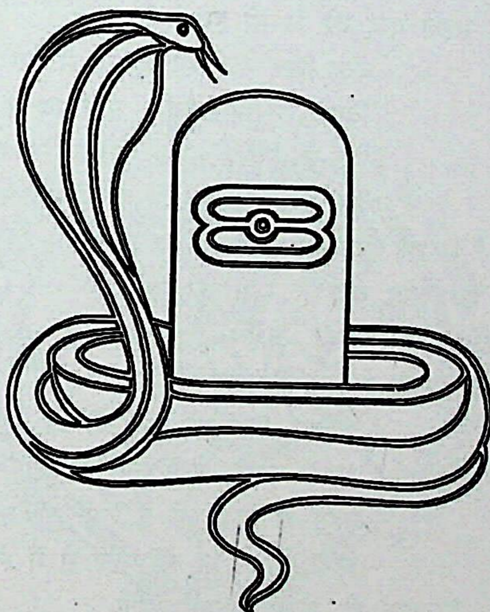
बाँझ कोख भी भर जाती है शिव के नमन-विनय से,
मृत्यु देवता पास न आते कभी-भी शिव के भय से,
एक बढ़कर एक है नारद शिव की अमर कहानी,
बिना चढ़ावे के खुश होते भोले औढरदानी।



जीवन नया मिलता है, शिव पूजन अर्चन से,
भव भय बाधा कभी न आती चिन्तन और भजन से,
जो भी नमः शिवाय बोलकर, जीवन पथ पर जाता,
मंजिल मिल जाती वह अपना है अभीष्ट पा जाता ।

जगते-सोते, चलते-फिरते, जो शिव-शिव कहता है,
गंगा की मानस धारा में प्रेम सहित बहता है,
भवसागर की अतर धार में पार अगर है जाना,
कहकर नमः शिवाय हे नारद अपने पाँव उठाना ।







ॐ नमः शिवाय

शिवरात्रि व्रत का महात्म्य

व्यास शिष्य सूत जी ने महिमा बताई ।
महाशिवरात्रि व्रत की कथा थी सुनाई ।
ब्रह्मा, विष्णु, पार्वती तीनों ने मिलकर,
पूछा हे त्रिपुरारी भोलेनाथ शंकर,
किस व्रत से हो प्रसन्न मुग्ध मगन होते,
भोग, मोक्ष देते प्रभु जब प्रसन्न होते,
ये तो अनेक पथ है आपके भजन के,
विधियाँ अनगिनत हैं अर्चन पूजन के,
सबसे श्रेयस्कर विधि हमको बतायें,
आपकी सहज दया को जिससे हम पायें ।
कहा शिव ने किसी भी व्रत से मेरा नाम लेता जो,
विमल मन भक्ति पूर्वक, प्रीति पथ से काम लेता जो,
मेरा स्वभाव है, कोई भी हो मेरा भक्त बन जाता,
उसी पर रीझ जाता मैं भी उसका भक्त बन जाता ।
प्रमुख दस व्रत हैं जिनको करके जीवन धन्य हो जाता,
वही है भोग का दाता वही है मोक्ष का दाता,
करे एकादशी जो अल्प ही आहार है लेता,
जो हो एकभुक्त शाकाहार हो, उपहार मैं देता,
त्रयोदश तिथि हो कोई भी वह मेरी रात होती है
अगर कृष्ण पक्षी तो अनोखी बात होती है
बहुत ही प्रिय मुझे हैं उसी की करता प्रतीक्षा हूँ,
भक्ति और प्रीति की भक्तों से मैं ले लेता भिक्षा हूँ
जो भी भक्त निराहार हो पूजन किया करता,
उसे मन चाहा वर के साथ अतुलित धन दिया करता,
ये नश्वर लोक है जितना हमें दिखलाई देता है,
एकाक्षर मंत्र ही इस धरती पर सुनाई देता है ।



मंत्र पंचाक्षर से जो हमें कुछ याद करता है,
तुरन्त सुन मैं लिया करता, जो कुछ फरियाद करता है,
सभी व्रत देह को पावन, विमल निश्छल बनाते हैं,
सभी हैं रास्ते जो एक ही मंजिल को जाते हैं,

कृष्ण पक्षी त्रयोदश तिथि मुझे फागुन में मिल जाती,
पुनः बैसाख में मधुमास में, उपवन सी है खिल जाती,
मेरे ज्योतिर्लिंगों पर चढ़ाता है जो गंगाजल,
वह मेरा भक्त पा जाता इसी जीवन में चारो फल,







ॐ नमः शिवाय

शिवरात्रि व्रत का उद्यापन

परम शुभ शिवरात्रि व्रत करे चौदह वर्ष
त्रयोदशी को एकबार लेना आहार है।
करे उपवास चतुर्दशी तिथि को आठ पहर
सात्विक मन-तन दृष्टि व्रत का आधार है।
जायें शिवालय में जहाँ दिव्य मंडल- रचे,
गौरी-तिलक कहता जिसे अपना संसार है।
सर्वतोभद्र चक्र करे सृजित दिव्य मण्डल में,
प्राजापत्य नाम वस्त्र दक्षिणा साकार है।
स्थापित दो स्वर्ण कलश प्रतिमा शिव पार्वती,
रात्रिकाल अर्चन करे मन से शिव शक्ति का।
ऋत्विज आचार्य, योग्य जैसे आदेश देंगे,
वैसे ही कार्य सम्पादित करें भक्ति का।
करें रात्रि जागरण, गीत-संगीत भजन-भाव,
शिव को प्रसन्न करें मन हो अनासक्ति का।
प्रातःकाल हवन करें शिवार्चन पूजन कर,
होता है पूर्ण काम उस व्रती व्यक्ति का।



स्तुती - हे शरणागत वत्सल शिव जी, शरण में मैं हूँ आया।
देव देव हे महादेव शिव, कर दें अपनी छाया।
आप सदाशिव आशुतोष औढरदानी कहलाते,
दीन-दुःखी याचक भक्तों पर अपनी दया दिखाते,
सारे जग के रक्षक पालक आपकी फैली माया ।।1।।
मैं अज्ञानी भूल हुई होगी मुझसे अनजाने,
नहीं शक्ति है, शिव रहस्य को हम जाने पहचाने
त्रिभुवन पति हैं आप आपने हैं संसार बनाया ।।2।।
मैं दुखिया हूँ आधि व्याधि से पीड़ित हूँ अज्ञानी,
याचक बनके शरण में आया आप हैं औढरदानी,
सहज दया हो दीन बन्धु है, अंजन गया रचाया ।।3।।





ॐ नमः शिवाय

व्याध कथा प्रसंग में शिवरात्रिव्रत का महात्म्य

कहता हूँ मन देकर सुनिए बात है बहुत पुरानी
व्याध गुरुमुह नाम भील की सुन ले सत्य कहानी

वीर वली था व्याधा वन में करता सदा शिकार,
पशु वध करना, पथिक लूटना था उसका व्यापार,
मांसाहारी था हिंसक था दया नहीं थी मन में,
जो भी राहगीर मिल जाता लूटा करता वन में।

बस्ती-जंगल गाँव नगर के डरते थे सब प्राणी ।।1।।

यही रोज का काम था उसका खाना पाप कमाना,
धर्म, कर्म का मर्म नहीं था अबतक उसने जाना,
कभी भूलकर भी था उसने नहीं प्रभु का नाम लिया,
जीवन भर वध, हत्या, राहजनी का उसने काम किया,

नहीं दया मन के भीतर थी नहीं आँख में पानी ।।2।।

जैसे आता आ पहुँचा शिव रात्रि दिवस था पावन,
उसे नहीं था ज्ञान पर्व का मन था वधिक भयावन,
घर में भोजन का अभाव था तड़प रहा परिवार,
माता-पिता पत्नी बच्चे थे भूख से अति लाचार।

लेकर तीन कमान उठा जंगल जाने की ठानी ।।3।।

दिन भर दौड़ लगाया कोई पशु जब नजर न आया;
एक सरोवर तट पर जाकर, जल पीकर सुस्ताया,
डूब रहा था सूर्य, रात काली थी आने वाली,
सोच रहा था कैसे लौटूँ अब घर पर मैं खाली,

शाम हुई, आयेगा पीने पानी कोई प्राणी ।।4।।

गर्भवती थी पत्नी उसको देना था कुछ भोजन,
जल लेकर एक बेल वृक्ष पर बना लिया वह आसन,



उसको था विश्वास है निश्चित कोई पशु आएगा,
उसे मारकर लेकर ही वह अपने घर जायेगा,
एकटक ध्यान लगाए बैठा जैसे कोई ध्यानी ।।5।।
दैवयोग से पानी पीने, आई हिरनी प्यासी,
तीर कमान संभाला उसने आशा में जागी,
इसी बीच में जल गिरकर पत्तों से नीचे आया,
ज्योतिर्लिंग जहाँ शंकर का पत्र सहित चढ़ पाया,
उस दिन थी शिवरात्रि वहाँ थे शंकर औढरदानी ।।6।।

तीर ताने शिकारी खड़ा है, प्यासी हिरनी किनारे खड़ी है ।
दोनों लाचार हैं भूखे-प्यासे, दोनों को अपनी-अपनी पड़ी है ।
भय से हिरनी ने आँखें उठाई,
व्याधा ने अपनी पीड़ा सुनाई,
थोड़ा ठहरो, मुझे मार देना,
मेरे तन से यदि होगी भलाई,
मेरे बच्चे अकेले हैं घर में, रात आई अँधेरी खड़ी है ।
उनको जाकर हवाले मैं कर दूँ,
अपनी सच्चाई से अवगत कर दूँ,
शीघ्र ही आ रही हूँ यहाँ मैं,
सत्य ही कहती, मैं तो विवश हूँ ।
सत्य ईश्वर है शाश्वत रहेगा, ये परीक्षा की आई घड़ी है ।

सुनकर अनुनय विनय मृगी का, व्याधा ने विश्वास किया,
जाने का संकेत दे दिया और दीर्घ निश्वास लिया,
हिरनी और हिरन सब बारी-बारी वहाँ पधारे,
तीन पहर तक बार-बार व्याधा ने तीर सम्हारे,
सत्य सिन्धु की लहर लहर कर बनती गई सुहानी ।।
फिर तो परिवार मृगी व्याधा के सम्मुख आई,
परोपकार साकार वहाँ पर व्याधा को बतलाई,

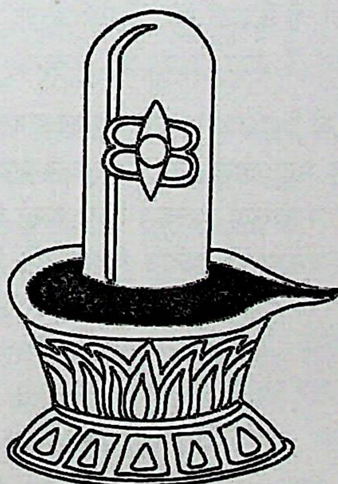


जगा रह गया व्याधा चार पहर तक नींद न आई,
बार-बार जल-पत्र चढ़े, जब प्रत्यञ्चा चढ़ आई,
रात्रि जागरण, जल अर्पण, बेलपत्र भक्ति अनजानी ।।

ऐसा पड़ा प्रभाव सभी पर कृपा हुई शंकर की,
हृदय हुआ परिवर्तित तत्क्षण भक्ति वहाँ पशु-नर की,
इच्छित दे वरदान, लिंग व्याधेश्वर वह कहलाया,
भोग, मोक्ष दोनों का फल अनजाने भक्त ने पाया,
शिव हैं भक्त अधीन, अभयवर देते हैं वरदानी ।।

जो भी व्रत शिवरात्रि काल में यहाँ किया जाता है,
विधिवत् पूजन अर्चन का अनुष्ठान किया जाता है,
आशुतोष शिव सहज भाव से अपनी दया दिखाते,
भक्त बिना माँगे ही शिव से सब कुछ हैं पा जाते,
है त्रिनेत्र की आँखों में यह अंजन एक निशानी ।।







ॐ नमः शिवाय

मुक्ति निरूपण

कहा सूत ने चार मुक्तियों का स्वरूप बतलाता हूँ,
प्रथम मुक्ति सारूप्य, दूसरी है सालोक्य बताता हूँ,
है सान्निध्य तीसरी जिसको शास्त्रों ने बतलाया है,
चौथी है सापुज्य जिसे तत्वज्ञों ने समझाया है,
तुम मुक्तियों के दाता तो सभी देव कहलाते,
चौथी मुक्ति सिर्फ शिव देते, भक्त जिसे हैं पाते,
निर्विकार परब्रह्म प्रकृति से, पर त्रिगुण के ज्ञाता,
वहीं पाँचवी मुक्ति जो है कैवल्य उसी के दाता,
होती है उत्पत्ति और पालन लय जहाँ नियति है,
सबके क़ारण एक मात्र शिव शक्ति रूप प्रकृति हैं,
वे ही हैं यदि ज्ञेय यहाँ तो है अज्ञेय कहाते,
सारे देव महर्षि उपासक कृपा से हैं पा जाते,
परमशक्ति सम्पन्न महेश्वर ही है शिव परमेश्वर,
दृश्यमानयह मात्र स्वप्न है, सभी दृश्य हैं नश्वर,
वे ही बन साकार सृष्टि का यह संसार बनाते,
निराकार हो महाशक्ति से है संसार मिटाते,
भक्ति भाव से जो शिव का नित कभी है ध्यान लगाता,
बड़भागी वह भक्त़ रहस्यों का भेदन कर पाता,
शिव बनकर मंगलकर्ता कल्याण किया करते हैं,
पालकशंकर बनकर वे वरदान दिया करते हैं,
योगी लेकर के समाधि जिनके दर्शन करते हैं,
भक्तराधक भजन मनन गायन कीर्तन करते हैं,
भक्ति मार्ग है सुगम समर्पण तन मन का हो जाता,
एक निष्ठ जो भक्त वही है चारो फल पा जाता,





ॐ नमः शिवाय

ज्ञान निरूपण और शिव-विज्ञान

शिव को कोई जान सके ऐसी सामर्थ्य नहीं है,
सारी लीला गोपनीय है, कुछ ज्ञातव्य नहीं है,
जो जितनी दूरी तक डूबा वह उतना ही पाया,
भेद नहीं पाया रहस्य का ऐसी शिव की माया,

नेति नेति कहकर तत्त्वज्ञों ने जो है समझाया,
और भी आगे, और भी आगे, अन्त नहीं हो पाया,
जब भी इच्छा होती उनकी, वे संसार बनाते,
परम शक्ति के साथ एक क्षण में संहार कराते,

जितने भी इस जीव लोक के पड़ते दृश्य दिखाई,
माया की लीला है जिसने नगरी एक बसाई,
नश्वर तन को स्वप्न सुनहले वही दिखाती आई,
और अहं, मद, लोभ मोह को मिट्टी कभी मिलाई,

सबमें शिव है, सब शिव में है, शिवमय है संसार,
भ्रमवश हम कहते रहते हैं, यह मेरा संसार,

सबको जान रहे शिव, शिव को कोई जान न सकता,
वे हैं ज्ञान स्वरूप, सत्यमय जग पहचान नहीं सकता,
निर्विकार हैं, वे ही हैं निर्लिप्त, यहाँ त्रिभुवन में,
तन में, जीवन में, सबमें हैं, वे ही रहते मन में,

अंशी हैं वे अंश सभी हैं, जग के सारे प्राणी,
पालन-पोषण करती सबका महाशक्ति कल्याणी,
बिना भक्ति के, प्रीति भाव के, नहीं है दर्शन होते,
वहीं-वहीं वे वर्तमान हैं, जहाँ हैं कीर्तन होते,



उनके जो प्रिय पेय और भोजन की परम्परा है,
सबमें है विज्ञान ज्ञान अमृत घड़ा भरा है,
प्रकृति ही भवरोग का नित उपचार किया करते हैं,
जो उसपर निर्भर उसको उपहार दिया करते हैं।

स्थित प्रज्ञ हैं, सुख-दुख दोनों का कोई कभी प्रभाव नहीं,
कोई रोग विराग नहीं हैं कहीं झुके स्वभाव नहीं,
परमहंस है एक भाव से स्थिर सृजन प्रलय में,
सबमें एक रूप है स्थिर हार में और विजय में।







ॐ नमः शिवाय

सनत्कुमार का महापातक वर्णन

पूछा व्यास जी ने ब्रह्म पुत्र सनत्कुमार से -
महापाप नरक के सम्बन्ध में।
जिज्ञासा सत्यगामी थी, समयोचित थी, प्रासंगिक थी,
सनत्कुमार जी ने बतलाया,
पाप के तीन रूपों को समझाया।
मनसा, वाचा, कर्मणा की सीमा में बाँधा,
परधन और परस्त्री को प्राप्त करने की इच्छा,
अपने मन में दूसरे का बुरा सोचना
काम वासना का प्राबल्य तथा अभिनिवेश
ये चार नरक के हैं द्वार
असंगत भाषण, अप्रिय वचन, असत्य कथन,
युगलखोरी - वाचिक पाप के आधार
अभक्ष्य-भक्षण, हिंसा मिथ्याचार,
दूसरे के धन का हंरण, कर्म जन्य पाप साकार,
जो परमात्मा का निंदक गुरुजनों का निरादर करता,
निश्चित रूप से नरकगामी होता है -
वह भी जो गुप्त वासना का स्वामी होता है।
वह भी जो दूसरों की पुस्तकें चुराता है,
जो किसी की आस्था पर चोट पहुँचाता है,
घोर नरक में जाता है
जो कुकर्म करता है, झूठ-झूठ का गाल बजाता है,
दिए हुए दान को पुनः हथियाता है,
निकृष्ट विचार वालों का अन्न खाता है,
अश्लील गीत गाता है, नरक में जाता है,



वह नरक कहीं और नहीं यही है,
इसी शरीर से भोग पाता है,
जो जैसा करता है,
शराबी जो अनाप-शनाप बड़बड़ाता है,
जो उपकार को भूल जाता है,
उपकार करता है,
करनी का फल पाता है।







ॐ नमः शिवाय

विभिन्न पापों का वर्णन

दूसरों का हक लूट के खाना, रोब दिखाना और पचाना,
करना पापाचार,
पाखण्डी बन धोखा देना, अपने को महान् बनलाना,
करना दुर्व्यवहार,
ईर्ष्या करना द्वेष दंभ से जलनहृदय से,
रखना गलत विचार,
माता-पिता, गुरु, गुरुजन का करना तिरस्कार,
सभी नरक के द्वार।
नीच कर्म, नीच योनि गमन करने वाले को
अन्त काल पड़ता है नरक में जाना,
कोई भी हो पाप, रहता सिर पर सवार सदा,
कर्मों का फल पड़ता सबको है पाना,
जो हैं कृतघ्न, धर्म च्यूत पर निन्दक यहाँ,
ढोंगी, पाखण्डी जो रखता है वाना,
होता नरक गामी, है इसमें सन्देह नहीं
सभी धर्मशास्त्री का यही है बताना।
पथ में जो बाधा बन, पथिक को सताते हैं
भक्त और सन्तों को जो हैं सताते,
अहं भाव रखते हैं मद से मदमाते जो -
औरों के आगे जो हैकड़ी दिखाते,
खाने के और, कुछ दिखाने के और,
हाँथी के दाँत जैसे दाँत हैं दिखाते,
आदमी को धोखा देना होता आसान मगर,
ईश्वर सर्वव्यापी को मूर्ख हैं बनाते,
क्या छिपा है ईश्वर से सबकुछ है देख रहा,
खुलेआम या छिपकर, कर्म किया जाता,



भाग कर जाएगा कहाँ काल है सर्वत्र खड़ा,
देखता है जो भी अधर्म किया जाता,
सोचता नहीं है अधम पातकी समाज आज,
करके भी गलत नहीं शर्म किया जाता,
नश्वर तन जीवन है, इसका गुमान कैसा,
जान बूझकर भी न धर्म किया जाता,
लेकर के आया क्या, क्या लेकर जाएगा,
खाली हाथ होगा कभी दुनियाँ से जाना,
लोभ, मोह, काम, क्रोध पर्दा है आँखों पर,
जाते समय पड़ता है सबको पछताना,
मिला है यह दुर्लभ तन, होगा कुछ पुण्य हुआ,
गलत रास्ते पर अब पाँव मत बढ़ाना,
शिवमय है सृष्टिलोक, शिव को भुलाना मत,
रक्षक, प्रतिपालक सदा शिव को बनाना ।
आदि, मध्य, अन्त सभी शिव के अधीन यहाँ,
वे ही संसार को बनाते-मिटाते,
जितने भी जीव यहाँ पड़ते दिखाई हैं -
उन्हीं में से आते हैं, वहीं मिल जाते हैं,
अपना क्या, सब कुछ तो परमात्मा का अंश,
भूल से भ्रमवश जग को अपना बनाते ।
जय शिव, जय शिव बोलो, बोलो नमः शिवाय ।
वे ही दुःखहारी हैं, दुःख सब हटाते,
पाप होता पाप चाहे छोटा बड़ा हो क्या
डरिए और पाप करने से दूर रहिए,
शिव नाम गंगा की पापहारी धारा है -
आठ पहर इसी गंगाधारा में बहिए,
जितने भी साधु-सन्त तापस विरागी हुए -
कह गए हैं भक्ति और प्रीति से निवहिए,
सुख में निर्लिप्त भाव मन को बनाए रखें,
दुःख हो तो कृपामान हँसते हुए सहिए ।





ॐ नमः शिवाय

नरक लोक और यम यातना

जीव मात्र के साथ लगा है यहाँ कर्म का बन्धन,
कर्म भूमि है, योग भूमि है, धर्म क्षेत्र है त्रिभुवन।
जैसा होता कर्म यहाँ पर वैसा ही मिलता फल,
नश्वर तन है गल जाता है, कहीं-कहीं जाता जल।

कुछ ही दिन तो रहना होता, फिर कैसी यह माया,
सबको तो जाना पड़ता है, जो है जग में आया।
मानव तन है दुर्लभ जग में, बहुत पुण्य से मिलता,
जीवन चक्र नियत कालिक है, जाता कहीं निकलता।

यही द्वार है दो दरवाजे, पाप पुण्य के मिलते,
मोक्ष एक है, एक नरक है, पास-पास है खुलते।
अगर हुआ सत्कर्म यहाँ तो, मोक्ष द्वार खुल जाता,
पुण्यों से ही पाप कर्म का ताप यहाँ धुल जाता।

लोभ-मोह का अन्धकार है माया का है मेला,
मेला साथ नहीं देता है, देता छोड़ अकेला।
जैसी जिसकी गठरी होती, ढोना ही पड़ता है,
भारी बोझ थका देता है, रोना ही पड़ता है।

नहीं सूझता सत्पथ कोई, जीव भटक जाता है,
गिरता जाता पतन मार्ग पर, नीच योनि पाता है।
गिरने की गति तेज है होती, गिरता ही जाता है,
नीच से नीच योनि में जाकर रोता पछताता है।

नरक मार्ग में दुसह यातना और कष्ट होते हैं,
वे ही जाते नर तन पाकर कभी भ्रष्ट होते हैं।
जब मानव तन पाया तो उद्धार स्वयं का कर लो,
औरों को भव पार करो, कुल सहित आप भी तर लो।

जीव तत्त्व ईश्वर की रचना, सब हैं यहाँ बराबर,
स्वप्न लोक है, क्षणिक दृश्य है, सारा जग है नश्वर।
उसका कैसा मोह जिसे देना है छोड़ किसी दिन,
वे पन्ने मत पढ़ो जिसे देना है मोड़ किसी दिन।



पढ़ लो यह इतिहास यहाँ का, साफ दिखाई देता,
पीड़ाओं का स्वर है कैसा साफ सुनाई देता।
बड़े-बड़े बलवान शूर जब गये हैं खाली-खाली,
कोई नहीं ठहर पाया, यह दुनियाँ जाने वाली।

जैसा कर्म मिला फल वैसा, यही है देखा जाता,
नहीं देर होती कर्मों का सच्चा फल मिल जाता।
कोई भोगे नरक अन्त में, कोई सुख से जाये,
अपने भले-बुरे कर्मों का फल सारा जग पाये।

पाप, पाप है हो जाता यदि मन से कर्म वचन से,
यहीं भोगना पड़ जाता है, इसी लोक में तन से।
जान बूझकर किसी जीव को कष्ट दिया जाता है,
किसी व्यथित मन के सपनों को नष्ट किया जाता है।

है कोई वह व्यक्ति कि जिसका होता जो निर्णय है,
सही फैसला देती है वह, वह अजेय निर्भय है।
उसे न धोखा दे सकता है, मानव अत्याचारी,
महा पातकी अधम पतित, कामी, कपटी व्यभिचारी।

भोग यहीं पर लेना होता, कर्मी का फल तन से,
करो लोक कल्याण भला कर लो मानव जीवन से।
यही नरक है, यही स्वर्ग है, कर्मों से मिल जाता,
आगे क्या है, बड़ा अगम है, कोई समझ न पाता।

यहाँ बुद्धि भ्रम शून्य विवेकी, मन अथाह सागर में,
भ्रम वश सिमट-सिमट रह जाता, छोटे तन गागर में।
अगर चाहते हो कि नैया, अन्तिम तट तक जाये,
करो याद भवतारक शिव को, शिव ही पार लगाये।

नारकीय यातना व्यथा है, असह, अकथ, भयकारी,
उसे मुक्ति देने वाले हैं, शिव शंकर त्रिपुरारी।
कह लो नमः शिवाय, हृदय को पावन निर्मल कर लो,
शिव-स्वरूप को एकाक्षर के साथ हृदय में भर लो।



ॐ नमः शिवाय

तर्पण, तपस्या और परमार्थ का फल

जल ही जीवन, जल अर्पण का, दान दिया जो करता,
जल देकर इस जीवन का, कल्याण किया जो करता,
जल ही है आधार जगत् का प्यासे मन की वाणी,
जल से शीतल तनमन होता, जीवन पाते प्राणी।

जल है तपन मिटाता ताप मिटाता है जीवन का,
जल ही करता सृजन और पालन करता त्रिभुवन का,
इसीलिए शिव शीर्ष भाग में जल धारण करते हैं,
जल से ही इस जीव जगत् का निस्तारण करते हैं।

तपस्या -

सत्य से बढ़कर और न कोई तप महान कहलाता,
पर ब्रह्म है, परम तत्त्व है, परम शास्त्र बन जाता,
सत्य लोक धारक उद्धारक, सत्य है भव भयत्राता,
यज्ञ, पुण्य, यश ब्रह्मचर्य का ज्ञान सत्य करवाता।

सत्य तीर्थ है सत्य धर्म है, सत्य सिर्फ ईश्वर है,
केवल सत्य चिरस्थिर जग में शेष जगत् नश्वर है,
जो भी मानव दृढ़ प्रतिज्ञ हो, सत्य को टेक निभाता,
आने वाले कल में इस तप से है पूजा जाता।

परमार्थ -

परहित सबसे बड़ा धर्म है, पर पीड़ा है पाप,
जीव मात्र की सेवा से, ईश्वर मिल जाते आप,
जिसने दिया बहुत कुछ तुमको, उसको करे समर्पित,
हर प्राणी में वे ही हैं प्रभु सुख उनको कर अर्पित।



जितना भी हो सके करें हम जीव की यहाँ भलाई,
यही दिया संदेश है जिसने दुनिया, यहाँ बनाई,
अपना जैसा यहाँ न कुछ भी सब है उनकी माया,
हर चेहरे में पड़े दिखाई परमेश्वर की छाया।

सत्यव्रती, परमार्थी जग में वन्दनीय हो जाते,
त्यागी, तपी और दान भी आदरणीय कहाते,
जिनको है संकीर्ण स्वार्थ ने सीमाओं में बाँधा,
वे हिंसक हैं, चोर लूटेरे, मानस रूप में व्याधा।

करते नहीं शिकार गैर का खून पिया करते हैं,
पाप किया करते हैं फिर सन्ताप दिया करते हैं,
है असत्य सा पाप न कोई, सत्य पुण्य का भागी,
इसीलिए सत्पथ पर चलते, साधु-सन्त, वैरागी।







ॐ नमः शिवाय

मनुष्य जन्म की श्रेष्ठता

तप से ताप पाप का कटता, होता जीवन यापन,
तप से ही मानव सोना-सा पा जाता है जीवन,
पाँच विकारों से निर्मित तन जिसमें भरे विकार,
तप के बिना न निर्मल होते बुद्धि विवेक विचार,
निश्छल भक्ति देखकर ही शिव जब प्रसन्न हो जाते,
सहज प्रीति अपने भक्तों पर बार-बार दिखलाते,
हैं असंख्य योनियाँ विश्व में है असंख्य तनधारी,
सबसे उत्तम मानव तन है कहते धर्माचारी,
मानव-तन ही है ऐसा जो ज्ञान बुद्धि का स्वामी,
इसे बनाया सोच समझकर, स्रष्टा अन्तर्यामी,
और जीव का भला करेगा, यह तन सुख पहुँचा कर,
स्वयं मोक्ष का भागी होगा, यह मानव तन पाकर,
अन्धकार का दीपक है यह सदा ज्योति फैलाता,
लोक जीवन को जीने की है सच्ची राह दिखाता,
किन्तु यही दुर्भाग्य है, मानव मोह में फँसा हुआ है,
माया नगरी की सुन्दर छाया में बसा हुआ है,
तृप्ति तुष्टि के लिये भयानक पाप किया करता है,
अपने सुख हित गैरों को सन्ताप दिया करता है,
भूल गया है आत्मज्ञान संकीर्ण स्वार्थ के चलते,
नहीं समझ पाता ये दृश्य है, रहते सभी बदलते,
शिव-स्वरूप हो चला, मंगल जग का कुछ कर लो,
झोली खाली पड़ी पुण्य की शुभ कर्मों से भर लो,
शिव-शिव नमः शिवाय बोलकर अपने डेग उठाओ,
दुःख का हालाहल खुद पी लो गैर को सुधा पिलाओ,
परहित से बढ़ पुण्य न कोई, परहित निज सुख त्यागो,
कब तक सोता रहेगा पगले, मोह निंद से जागो,
देखो समय निकलता जाता, लौट नहीं आएगा,
मानव तन दुर्लभ है कैसे इसे पुनः पायेगा।





ॐ नमः शिवाय

ज्ञान, क्रिया, भक्ति योग

आदि शक्ति जगदम्बा जग जननी अग-जग की माता,
अनगिन नाम गुणों रूपों से है जग में विख्याता,
सबकी माँ है लोक जगत् का सृजन किया करती हैं,
रूप राशि सुख साधन जग को सदा दिया करती है,

शक्ति विना शिव शव हो जाते, शास्त्र यही कहते हैं,
इसीलिए शिव शक्ति हमेशा साथ-साथ रहते हैं,
शक्ति रूप मन में आते ही माँ का रूप झलकता,
ज्योतिपुंज, त्रिभुवन के कण-कण में है कभी चमकता,

आदिरूपिणी, परा पराम्बा प्रकृति सती भवानी,
सृजनकारिणी, पालनकर्ता, मनमानी शुभदानी,
माँ जगदम्बा, शक्तिरूपिणी, सहज वत्सला माता,
जिस पर होती कृपा, वही मुँह माँगा फल है पाता,

माँ की ममता अनुपम है वह पूत-कपूत न जाने,
दयामयी माँ पूत की रक्षा करती है मनमाने।
अनगिन रूपों और गुणों से भरा है माँ का आँचल,
कभी नहीं विस्मृत होती माँ, हर दिन, हर क्षण, हर पल,

कोई भी दिन कोई भी तिथि अगर पक्ष हो कोई,
करें अर्चना, पूजन मन से, माता कभी न सोई,
माँ से बढ़कर कौन है जग में, पूत का भला करे जो,
माता भारत भूमि सुपथ पर कोई चला करे जो,

देव भूमि है, आर्ष भूमि है, शक्ति रूपिणी घर है,
शक्ति नियंत्री के संग हरदम जहाँ भी शिव शंकर है,
दोनों मिलकर एक रूप हैं भव के साथ भवानी,
भक्तों का हित करते रहते, दोनों औढरदानी

जय-जय अम्बे, जय जगदम्बे, दुर्गा शिवा भवानी,
काल रूपिणी जय हे काली, जय हे औढरदानी,
कृपा करो माँ किसी रूप में देकर अपने दर्शन,
गुण विहीन हूँ करूँ मैं कैसे, तेरा पूजन अर्चन,

अर्थहीन हूँ, शब्द नाम कुछ दिया है जगवालों ने,
अपनी शरण मुझे दो मैया, घेर दिया कालों ने,
त्राहिमाम् माँ, त्राहिमाम् माँ, अब मत देर लगाओ,
अगर मानती अपना बेटा, अंजन आज रचाओ,

आगे है भव सिन्धु अगम यह आकर पार लगाओ,
आधि-व्याधि चिन्ता कष्टों को तत्क्षण दूर भगाओ,
आदिशक्ति हो, शक्ति रूपिणी, अपनी शक्ति दिखाओ,
आँखें हैं उदास मेरी माँ, अंजन आज रचाओ।





ॐ नमः शिवाय

ओंकार जिज्ञासा एवं निरूपण

जहाँ नैमिषारण्य क्षेत्र है धरती पर अति मनभावन,
उसे कहा जाता है भारत का स्थल अतिपावन,
देव और ऋषियों ने मिलकर महायज्ञ करवाया,
और व्यास को ध्यान योग से प्रकट रूप में पाया,

ॐकार की जिज्ञासा थी, मन में उथल-पुथल थी,
भारत भर के तत्वज्ञों की भारी चहल-पहल थी,
क्या है यह प्रणव एकाक्षर, कौन है इसका ज्ञाता,
यह सारा संसार कल्प क्रम, बार-बार है आता,

कहा व्यास ने शिव स्वरूप ॐकार है जग का कारण,
हर क्षण तीनों काल निरन्तर होता है उच्चारण,
अनहद नाद इसे कोई कहता, प्रणव कोई बतलाता,
इसका नाश नहीं होता है, जग है आता-जाता,

सब मन्त्रों का मूल यही है, आदि मध्य में लय में,
सदा सर्वदा वर्तमान है, स्थिति महाप्रलय में,
अ, उ, म से तीन रूप में प्रणव मंत्र कहलाता,
इसे निरन्तर जपते रहते, तत्त्व धर्म के ज्ञाता,

शिव ने शक्ति स्वरूपों को भी था रहस्य समझाया,
इसी मंत्र की देकर दीक्षा, जन्म मुक्त करवाया,
मैं ही हूँ ॐकार प्रणव हूँ, मैं संसार बनाता,
तेरे ही सहयोग से अम्बे, यह संसार मिटाता,

मैं त्रिकाल हूँ, आदि अन्त हूँ, उत्पत्ति और प्रलय हूँ,
निर्विकार हूँ, अनासक्त हूँ, निश्छल हूँ, निर्भय हूँ,
इसी एकाक्षर मंत्र में सारी व्याप्ति दिखाई पड़ती,
सारे स्वर-ध्वनियों की दुनिया यहाँ सुनाई पड़ती,



यह सारा संसार क्षणिक है, नाशवान नश्वर है,
ॐकार ही सच मानों तो जग का परमेश्वर है,
इसी प्रणव के चलते बनती, वर्तमान की माया,
इसी प्रणव की पड़ती सबपर सहज स्नेह की छाया,

है अकार ही बीज कि जिससे सृजन हुआ करता है,
इसी तमोगुण से मेरा यह शिव-स्वरूप भरता है,
उ म से पालन लय में वर्तमान मैं शिव हूँ,
और बिन्दु से नाद रूप, संहारक मैं ही शिव हूँ,

मध्य भाग उ कार बड़ा व्यापक है महिमा वाला,
ॐकार का मूल है इसमें ह्रदय को देने वाला,
है अ कार में आठ मूर्तियाँ जो अघोर रूपा हैं,
जिनसे होती सृष्टि जगत् में जो अगत्य रूपा है,

परम् ब्रह्म प्रकृति का द्योतक है ॐकार निराला,
माया ने इस वर्तमान को ही भ्रम में है डाला,
अष्ट चक्र नीचे से ऊपर मेरू से जो हैं चलते,
तीन नाड़ियाँ बनी त्रिपथगा, तेज हैं जहाँ निकलते,

कठिन योग साधन और तप से जो पाया जाता,
होकर समाधिस्थ प्राण को ऊपर जब पहुँचाता,
ब्रह्मरंध्र में सदा प्रवाहित है अमृत की धारा,
कुंडलिनी जाग्रत कर है, साधक ने उसे निहारा,

अधोमुखी जब तक कुंडलिनी तन में सोई रहती,
मानव की यह बुद्धि अधः कर्मों में खोई रहती,
एक मात्र यह प्रणव मंत्र ही, योग मोक्ष देता है,
यह ॐकार अनवरत, अनाहत नाद यहाँ देता है,

गंगा, यमुना, सरस्वती की धारा बहती रहती,
तीन नाड़ियों में ध्वनि ॐकार सदा है रहती,
इडा, पिंगला और सुषुम्ना हर तन में रहती हैं,
जहाँ त्रिधारा ज्ञान रूप में शाश्वत हो बहती है,



बड़ा कठिन है सुनो अम्बिके यह रहस्यमय काया,
इसे पाश में बाँधे रहती है महेश की माया,
कोई-कोई अनाशक्त ही, पार निकल पाता है,
कोई-कोई हुआ आजतक ही रहस्य ज्ञाता है,

मैं शिव रूप एकाक्षर हूँ, हूँ प्रणव मंत्र अधिकारी,
नहीं समझ पाते भ्रमवश, ये जीव जो हैं संसारी,
शम-दम-नियम शरीरी आसन, प्राणायाम हैं साधन,
जिनको करके पा जाता है, मोक्ष यहाँ मानव तन,

जब तक मोह निशा में सोया है, यह लोभ मानव मन,
तब तक तन में लगे हुए हैं, जन्म, मृत्यु के बन्धन,
दिव्य चक्षु तीसरा नयन है, इसे यत्न कर खोलो,
ॐकार के साथ ध्यान धर नमः शिवाय तुम बोलो,







ॐ नमः शिवाय

शिव के प्रमुख आठ नाम

शिव, महेश, रूद्र, विष्णु और हैं पितामह नाम,
संसार वैद्य सर्वज्ञ कहे जाते हैं,
और परमात्मा है अग-जग के संचालक,
आठ नाम गुण ग्राही बन जाते हैं,
प्रथम आठ नाम है जो आत्मा के ज्ञाता ज्ञेय,
शेष तीन सृष्टि क्रम के कारण हो जाते हैं,
सबमें शिव, सब शिव में, सृष्टि पालन और विलय,
लोक है रहस्य भरा जान नहीं पाते हैं।
जाकर जहाँ मन वाणी निवृत्त हो जाते हैं,
केवल एकाक्षर प्रणव मंत्र रह जाता है,
उसी शिव-स्वरूप से है प्रकट होता विश्वरूप,
आत्म ज्योति, आत्मरूप शिव ही कहा जाता है,
सारे तत्त्व ज्ञानी, विज्ञानी, साधु-सन्त-साधक
रमते उसी में ध्यान योगी लगाता है,
एकाक्षर ॐकार साकार-निराकार,
काल क्रम से शिव का स्वरूप कहलाता है।





ॐ नमः शिवाय

नान्दी श्राद्ध ब्रह्म यज्ञादि

ब्रह्मचर्य से ऋषिगण होते तृप्त-तुष्ट त्रिभुवन में,
और यज्ञ से देव वृन्द हो जाते तृप्त हैं मन में,
स्वधा पितर की तृप्ति का कारण यहाँ कही जाती है,
तीन ऋणों से उऋण हुए तो वान प्रस्थिति आती है,

वान प्रस्थ में बने जितेन्द्रिय सुख-दुख के हो त्यागी,
योगाभ्यासी तपः साधना, भक्ति-भाव अनुरागी,
ऋषियों, आचार्यों के संग सुने सदा शुभ वाणी,
भवसागर से पार उतर जाये, इस भव के प्राणी,

गुरु ही शिव है, शिव ही है गुरु ज्ञान मोक्ष के दाता,
नान्दी श्राद्ध करे विधिवत् विधि धर्मशास्त्र विख्याता,
विश्वदेवा और सत्य वसु जिनके हैं अधिकारी,
उनकी कृपा सहज मिल जाये, कटे दूर अँधियारी,

देव श्राद्ध में ब्रह्म, विष्णु शिव याद किये जाते हैं,
ऋषि श्राद्ध में देव, क्षेत्र नर सब पूजे जाते हैं,
देव श्राद्ध में रूद्र बसु आदित्य रहा करते हैं,
श्रद्धा है श्रद्धा भक्ति भाव, सब शास्त्र यही कहते हैं,

मनुज श्राद्ध में सनकादिक को नमन किया जाता है,
भूत श्राद्ध में पंचमहाभूतों का ही नाता है,
जहाँ जटायू अंडज स्वेदन, उद्भिज हैं सहभागी,
पितर श्राद्ध में पिता-पितामह प्रपितामह अनुरागी,

मातृ श्राद्ध में माता, मातामही और परनाना,
विप्र श्रेष्ठ का पदरज लेकर भव से पार है जाना,
आचार्यों से सम्मत विधि का सहज रहे विश्वास भरा,
धरती के देवता महेश्वर का विस्तृत आकाश भरा,



ग्रहण करे शिव-पार्वती जो हैं सामर्थ्य समर्पित,
मेरा क्या है, सभी आपका, आपको करता अर्पित,
पुनः ध्यान में शिव को रखकर श्राद्ध-विधि अपनाकर,
नमो ब्रह्मणे, प्रणव मंत्र से श्रद्धासन में आकर,

सारी विधियाँ गुरु सम्मत हो, मन पावन निर्मल हो,
हव्य-गव्य सब देवोचित हो, साथ में गंगाजल हो,
देकर के आहूति दसचित आसन एक लगाये,
गायत्री जप करे निरन्तर, तन मन शुद्ध बनाये,

स्वाहा अग्नि प्राण साथ में हो अपान की वाणी,
तभी दुःखों से विरत हो सकेगा, यह जग का प्राणी,
पंचक चक्र न जब तक जाने विद्वत् गण अज्ञानी,
ॐ एकाक्षर मंत्र है पावन जप रे मूरख प्राणी,

प्रतिदिन सुवह शाम जप गायन्त्री मंत्र जो करता,
भव बन्धन सब कट जाते हैं; सुख से जीवन भरता,
हो प्रकाण्ड पंडित जो भी इस कर्मकाण्ड का ज्ञाता,
उसके ही निर्देश में सारे श्राद्ध जो कहीं कराता,

त्रुटिहीन हो सारी विधियाँ मन में भक्ति भरी हो,
दिव्य ज्योति मानस के पट पर शिव की ही उभरी हो,
शिव के साथ सदा रहती है, शक्ति रूप महारानी,
करें कृपा जीवन सार्थक हो, भव के साथ भवानी,





ॐ नमः शिवाय

अद्वैत ज्ञान और सृष्टितत्त्व

द्वैत सदा ही नाश वान है, क्षणिक और नश्वर है,
एकमात्र शिव शाश्वत स्थिर जगका परमेश्वर है,
रूप सच्चिदानन्द चिरन्तन शिव का कहलाता है,
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् में जिसका अटूट नाता है।

द्वैत है मिथ्या स्वप्न मात्र है जिसका होता क्षय है,
किन्तु भाव अद्वैत जगत में एक मात्र अक्षय है,
प्रकृति गुण से बुद्धि अहं का सृजन किया करती है,
सत्, रज, तम के त्रिविध रंग से रंग दिया करती है।

अहंकार से गर्म क्रिया का सम्पादन होता है,
वाक्, पाणि, पद वायु आदि से संचालन होता है,
अग्नि, वायु, आकाश, भुवन, जल की उत्पत्ति हुई है,
अ, उ, म, फिर नाद बिन्दु की महिमा कही गई है।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश या फिर कोटि-कोटि के जीवन,
सब पर एक आवरण होता माया का यह बन्धन,
किन्तु वह शिव सबमें स्थित हैं संसार बनाते,
इच्छा होती पालन करते, होकर रूद्र मिटाते।

स्त्री पुरुष रूप में वे शिव-शक्ति स्वरूप दिखाते,
सारी सृष्टि इन्हीं दो रूपों में हैं, वही बनाते,
भिन्न-अभिन्न अगोचर, गोचर सब में शिव की माया,
दृश्य और अदृश्य सभी में व्याप्त है उनकी छाया।

भक्ति के भूखे प्रीति के दाता शिव शंकर कहलाते,
द्वैत भाव में रहकर भी वे हैं अद्वैत कहाते,
मैं तुम वह सब भ्रमवश लगते अपनापन के घेरे,
सभी समाहित हो जाते हैं, लीला रूप में मेरे।



यह संसार बना करता है, बन करके मिट जाता,
देख के भी है समझ न पाता, लोभ, मोह, मदमाता,
जो भी शिव का भक्ति भाव से, करता पूजा अर्चन,
अक्षय सुख वह पा जाता है, कट जाते भव बन्धन ।

यों तो कर्म-प्रधान जगत् में, समय नहीं मिल पाता,
फिर भी समय निकाल भक्त जो, शिव में ध्यान लगाता,
शाश्वत सत्य स्वरूप सदाशिव के दर्शन पा जाता,
भोग, मोक्ष दोनों मिल जाते, जीवन सफल हो जाता ।







ॐ नमः शिवाय

यतियों का महत्त्व, शिष्य-करण विधि, महावाक्य, योग पद वर्णन

गुरु के ज्ञान से अज्ञानता का तिमिर मिट जाता,
गुरु के ज्ञान से भ्रम और है यम फन्द कट जाता,
गुरु साक्षात् शिव है, लोक का कल्याण करता है,
गुरु है शिष्य के हर सुपथ का उत्थान करता है,

गुरु साक्षात् ईश्वर है, चरण वन्दन करो उसका,
जो देता स्नेह का अमृत, सतत् पूजन करो उसका,
गुरु की ही कृपा से अगम भव को पार करना है,
गुलामी मोह-माया से निजी उद्धार करना है,

गुरु वह ज्योति है जो स्वप्न को साकार कर देता,
गुरु पतवार है जो भव से बेड़ा पार कर देता,
किसी भी तत्त्व वेत्ता, सर्वदर्शी की शरण जाना,
सविधि जो आचरण है, उसे व्यवहार में लाना,

अहं, मद, मोह को मन से हमेशा दूर है रखना,
क्रोध आवे नहीं हरदम, ये मन अक्रूर है रखना,
समर्पण हो सदा ही भक्ति की धारा प्रवाहित हो,
ये अपना मन सदा, गुरु के मन में समाहित हो।

एकाक्षर मंत्र रातों-दिन अधर से बोलते जाना,
कि अन्तर मंन रहे पावन, गुरु को ध्यान में लाना,
नहीं है भेद सुत में, शिष्य में कोई न अन्तर है,
गुरु साक्षात् शिव है, सर्वदा शुचिज्ञेय ईश्वर है।





महावाक्य

प्रज्ञान ब्रह्म, अह ब्रह्मास्मि, तत्त्व मसि,
अयमात्मा ब्रह्म, ईशावास्यमिद प्राणोस्मि् ।
प्रज्ञानात्मा, यदेवेह तद्पुत्र अविदितादपि,
एषत् आत्मान्यर्दा स्व मृतः
स याश्चा यम्पुरुषो यश्चा सावादित्ये, स एवः,
अहमास्मि पर ब्रह्म परं पर परात्परं,
वेदशास्त्र गुरुत्वतु स्वयंमानन्द लक्षणम्,
सर्व भूत स्थितं ब्रह्मतरे वाहं न संशयः,
तत्त्वस्य प्राणोहमस्मि, अपां च प्राणोहमस्मि,
सर्वोहं सर्वात्म कोहम् संसारी यद्भूतं,
यच्च भव्यम् यद्वर्तमानंसर्वात्मकत्वादि द्वितीयोऽहम्
सर्व खल्विदं ब्रह्म, सर्वोहं विमुक्तोऽहम्,
योऽसो, सोऽहम् हंस स्सो मास्मि् ।



सब रूपों में भाव बोध से शक्ति शिव दोनों मिलकर,
एक ब्रह्म का द्योतन करते एक अकेला परमेश्वर,
पिण्ड में जो ब्रह्माण्ड में वह है - अंशी अंश कहे जाते,
है अभिन्न सम्बन्ध जहाँ से, जीव मात्र जीवन पाते,
साधक, आराधक, योगी, सन्यासी ध्यान लगाते हैं,
ब्रह्म रंघ में पहुँच शून्य में, समाधिस्थ हो जाते हैं,
नहीं भेद कुछ रह जाता है, होते एकाकार कभी,
निराकार ही काल-क्रम से हो जाते साकार कभी,
वह शिवत्व ही नाना रूपों में दिखलाई पड़ता है,
एकाक्षर ही स्वर शब्दों में यहाँ सुनाई पड़ता है,
मैं ही वह हूँ, वह ही मैं है, भेद नहीं रह जाता है,
द्वैत सिमटकर योग मार्ग से ही अद्वैत कहाता है,



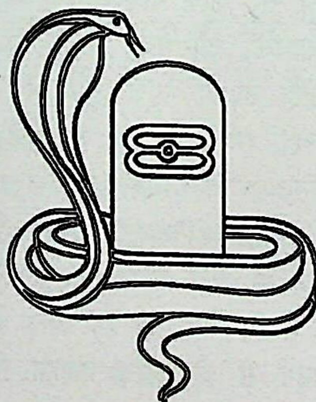
क्या होगा मन दौड़ाने से बुद्धि कहीं थक जाएगी,
नश्वर तन की चाल हार कर, कभी कहीं रूक जायेगी,
वह है कहीं जरूर समर्पण मन का ही करना होगा,
ध्यान गम्य उस महाशक्ति का रूप हृदय धरना होगा,

कण-कण में, क्षण-क्षण में, उसकी आभा निखर रही है,
खोलो मन के द्वार ज्योति की धारा उतर रही है,
छोड़ो सब संकीर्ण भावना, मन के वातायन खोलो,
कह कर नमः शिवाय भक्ति से शिव शिव शिव शिव बोलो,

वह अतीत, यह वर्तमान, वह जो भविष्य आ जाएगा,
वही चिरन्तन शक्ति और शिव का स्वरूप आ पाएगा,
भीतर बाहर वही खड़ा है, मन से उसे पुकारो,
एक बार भी भक्ति भाव से भक्तों उसे निहारो,

बीत गया वह कब लौटेगा, जो है वह जाएगा,
अभी सोच लो जान है तो क्या लेकर के जाएगा,
भक्ति सहारा है भक्तों की शिव की प्रीति मिलेगी,
शिव की होगी कृपा तभी तो यह भवभीति टलेगी,





ॐ नमः शिवाय

हुए लाचार मुनि गण, था नहीं निष्कर्ष मिल पाता,
कहाँ से जीव आता है, फिर कैसे है कहाँ जाता,
दिखाई पड़ रहा है दृश्य जो, संसार कैसा है,
ये सब ब्रह्माण्ड कैसे हैं, ये शून्याकार कैसा है,

यहाँ जो आदि का और अन्त का क्रम है चला आता,
है ऐसा कौन जिससे विश्व का यह मन छला जाता,
बहुत है डूबकर देखा, अँधेरे से भरा पथ है,
है चलता जा रहा आगे, यहाँ जो नियति का रथ है,

पता चलता नहीं, यह तो रहस्यों से भरा जग है,
नियन्ता और स्रष्टा कौन है या क्या मनोरथ है,
जहाँ पर बुद्धि थक जाती, जहाँ पर ज्ञान रूक जाता,
जहाँ तक जाते-जाते विश्व का विज्ञान रूक जाता,

हे ब्रह्मा आप से बढ़कर न कोई उसका ज्ञाता है,
आप हैं सृष्टि के कर्ता आप जीवन के दाता हैं,
कृपा करके रहस्यों को हमें भी आप बतलायें,
सभी ऋषि मुनि हैं यहाँ आए जरा इनको भी समझायें।

वह है एक सर्वेश्वर हमें जिसने बनाया है,
समूचे दृश्य में परिव्याप्त उस ईश्वर की माया है,
वह है निर्लिप्त फिर भी विश्व में परिव्याप्त रहता है,
कि जैसे यह पवन इस रहस्य में दिन रात बहता है,

प्रकृति के रूप में सौन्दर्य का सागर बहाता है।
वह शिव है, शक्तिके सहयोग से दुनिया बसाता है,
ये जो ब्रह्माण्ड है, ग्रह तारे जो दिखलाई पड़ते हैं,
ये स्वर लय, धुन किसी संगीत के सुनाई पड़ते हैं -



सभी कुछ देन है उसकी वही शिव मूल कारक है,
वही संहार करता है, वही जग का सुधारक है,
नहीं दिखलाई पड़ता है वही फिर ध्यान में आता
अगोचर भी वही है और गोचर भी कहा जाता,

उसी को भक्त अपनी भक्ति से साकार करते हैं,
वे शिव हैं भक्त के वश हो सदा उपकार करते हैं,
वे सर्वोपरि हैं, उन्हें तो भक्ति से ही पाया जाता है,
इन मन को एक मन्दिर रूप में बनाया जाता है,

वे हैं भक्तवत्सल सहज ही अवतरित हो जाते,
समूचे मन में तन में शीघ्र ही संचरित हो जाते,
भक्ति से मुक्ति मिलती है, ध्यान से दर्शन हुआ करते,
हमारे शिव सहज ही प्रीति-वश सब धन दिया करते,

न कोई भ्रम, न शंका हो, सदाशिव सत्य के स्वर हैं,
सभी के मूल में स्थित, वही शिव हैं महेश्वर हैं,
उन्हीं की भक्ति में अनुरक्ति हो पूजन करो मन से,
कि जितना हो सके, परहित करो, सच्चे हृदय तन से ।







ॐ नमः शिवाय

पशु, पाश और पति

जो सुख चाहे जीवन क्रम में, शिव की शरण में आए।
भक्ति भाव तन मन अर्पित कर भजन मनन अपनाए।

जब तक मन में अहं भाव है बहुत विकार भरे हैं,
लोभ, मोह, मद, काम, क्रोध के कीट यहाँ पसरे हैं।
अन्धकार में भटक रहा है, स्वार्थ लिये हैं मन में,
तब तक शान्ति न मिल पायेगी, इस नश्वर जीवन में।

गंगाजल से तन-मन धोकर पहले स्वच्छ बनायें। भक्ति भाव......

जन्म हुआ तो देखा माया, नगरी का यह मेला,
सपनों का संसार सामने लगता रहा झमेला।
मोह पाश में फँसता आया, खेल लोभ का खेला,
नहीं सोंच पाया जीवन भर जाता जीव अकेला।

कितने बन्धन कितने साधन, कोई काम न आये। भक्ति भाव......

क्षण-क्षण में परिवर्तन होते, मौसम रहे बदलते,
क्या रहस्य है समझ न पाया, तृप्ति-तुष्टि के चलते।
यह सब भ्रम है, महा जाल है, सब है शिव की माया,
कहाँ है जाना पता नहीं है, जीव कहाँ से आया।

अभी समय है जरा चेतकर, ज्ञान का दीप जलाये। भक्ति भाव......

क्या अपना है, सब सपना है, भ्रम में पड़ा हुआ है,
निराधार इस धरा धाम पर, तन कर खड़ा हुआ है।
डूब के देखो शून्य गुफा में मिलेगा घोर अँधेरा,
पता चलेगा व्यर्थ समझ है, कुछ भी नहीं है मेरा।

शिव ही शिव है उदय-अस्त में, भक्तिमार्ग अपनायेगा। भक्ति भाव......

जीव और यह प्रकृति सब है, पशु स्वरूप कहलाते,
पाश है माया, एक मात्र शिव जो पशुपति कहलाते।
वे ही स्रष्टा, वे ही पालक, वे ही हैं संहारक,
वे ही दुःख में पड़े हुए जीवों के हैं उद्धारक।

ज्ञान की आँखे भक्ति का अंजन प्रीति से आज रचाये। भक्ति भाव......





ॐ नमः शिवाय

कहा जब वायु ने, मुनियों सुनो, यह शिव की माया है,
उसी शिव ने सुनहले रूप में जग को बनाया है।
यही प्रकृति है माया, पुरुष पर जो आवरण करती,
विविध रूपों से रंगों से पुरुष का है वरण करती।

कर्मठी भोग करता है फलाफल कर्म का होता,
सदा क्षय प्रकृति का होता, नहीं क्षय धर्म का होता।
एक शिव सत्य है शाश्वत् उसी की शक्ति माया है,
उसी माया की लीला दृश्य पर उसकी ही छाया है।

कारण है वहीं फिर कार्य को सम्पन्न करती है,
समूची सृष्टि को त्रिकाल में उत्पन्न करती है।
रजोगुण से जनित विषयों की होती है जो अभिलाषा,
यहाँ है रोग जिससे, कर्म फल की होती है आशा।

काल है शक्ति, सारे कर्म उसमें ही समाहित है,
और हम पाँच प्रकृति शक्तियाँ उसमें प्रवाहित हैं।
अगोचर है सभी पर मूलतः गोचर है कहलाते,
पवन, क्षिति, अग्नि जल आकाशके तद्रूप हो जाते।

सत्त्व, रज, तम इन्हीं तीनों में जग बनता बिगड़ता है,
ज्ञान चैतन्य है माया, जनित यह मोह जड़ता है।
तीसरा नेत्र जो शिव का वही उद्धार करता है,
वही खुलता जलाकर काम का तन क्षार करता है।

जो है अव्यक्त वह ही व्यक्त का कारण है कहलाता,
वो शिव है, शक्ति है संसार का धारण है करवाता।
ये सारा विश्व माया का वशी पथ भूल जाता है,
भटक अज्ञान के गह्वर में, गिरकर रोता जाता है।



जो पशु है, पाश है माया जकड़ लेती है जीवन को,
न कोई तोड़ पाता, माया के इस जटिल बन्धन को ।
वही मालिक, वही पति, शिव दुःखों से मुक्त करते हैं,
भक्त ही देख पाते, यों सदा वे गुप्त रहते हैं ।

अगर पाना है शिव को भक्ति का पथ जानना होगा,
छोड़ मद मोह उस शिवत्व को पहचानना होगा ।
ये नश्वर माया नगरी है, इसे तो छोड़ना होगा,
ये नाता शक्ति से शिव से कभी तो जोड़ना होगा ।







ॐ नमः शिवाय

शिव-तत्व

कर्त्ता सिर्फ ईश्वर है, माध्यम है जीव जगत्,
फिर भी जीव-भ्रमवश अपने को मान लेता।
भरा है अज्ञान तिमिर, दृश्यमान् स्वप्न मात्र,
अहं, मोह के चलते सच है जान लेता।
परमेश्वर शिव ही है आदि मध्य और अन्त,
सृजन पालन और प्रलय नित्य कर्म होता।
धारण जो करता है, शिव-तत्त्व अन्तर में,
वही सत्पथ कहलाता, वही धर्म होता।



जब तक है ज्ञान नहीं, भटक रहा जीव लोक,
भक्ति और साधना से होते शिव-दर्शन।
सर्व व्यापी शिव तत्त्व चेतन-अचेतन में,
दृश्य, अदृश्य में भी होता यह लोकन।
यह रहस्य भेद्य नहीं, शीघ्र ज्ञेय होता नहीं,
बिना भक्ति भाव के न मिलता सहज है।
शिवमय यह सारा विश्व सहज बोध गम्य नहीं,
मानस सर निर्मल हो खिलता सहज है।



काल के भी काल, वही पर से भी परे नित्य,
निर्गुण है फिर भी गुणों का अधिष्ठाता।
जानता वही जिस पर, होती है कृपा दृष्टि,
मानता वही है जो है शिवतत्त्व ज्ञाता।
ईश्वरों के ईश्वर महेश्वर सदा शिव हैं,
उन्हीं से प्रकट है विश्व नाम रूप वाला।



वह है अजन्मा, अन्तरात्मा जीव लोकों का,
धर्माध्यक्ष, विश्वात्मा, सृजन करने वाला।



बिना शिव के जाने, अनगिनत रोग दुःख भव के,
दूर नहीं होते, न जीवन चक्र मिटता।
यह है अथाह माया, जनित भवसागर जिसे,
बिना जाने शिव के न भव फन्द कटता।
एक ही रास्ता, उपाय इसका है एक,
भक्ति और निश्छल मन, शिव को कर अर्पण।
करे शिवाराधना, कलि में और नहीं साधन कोई,
सम्यक् जप, दान, सविधि, सविधि करे तर्पण।।







ॐ नमः शिवाय

काल स्वरूप

काल महाकाल का न आदि अन्त कभी होता,
इसकी तो चाल कभी रूकती न जग में,
बँधा हुआ भूत और वर्तमान उससे है,
बँधा हुआ है भविष्य उसके ही पग में,
महातेज शिव का है, वशीभूत सारी सृष्टि,
जन्म जरा मृत्यु के सहारे क्षय करता,
वही दिखलाता है रूपों का महाजाल,
वही सारे दृश्यों को कभी विलय करता।
काल से भी परे कोई है तो महेश्वर है,
काल की गति क्या है न कोई जान पाता,
एक मात्र शिवजी हैं, काल के भी महाकाल,
केवल शिव भक्त ही कहाता है ज्ञाता,
काल के ही गाल में विचरता है सारा विश्व,
काल ही बनाता और काल ही मिटाता,
सुख-दुख और हर्ष शोक सब है अधीन उसके,
वही सुखदाता है, वही दुख दाता,

●

काल है असीम, काल गति भी है ज्ञेय नहीं,
काल से परे न कोई जीव इस जग का,
काल से ही आते हैं; काल में समाते हैं,
काल ही अकाल रूप चलते हुए पग का,
काल की निरन्तर चाल, कल्प-कल्प रूकती नहीं,
शिव की ही शक्ति, काल रूप में कहाती,
करती है सृष्टि वही पालन है करती वही,
इच्छा जब होती संसार को मिटाती,

●



काल के अनेक रूप कारण अनेक होते,
चुपके से आता है चुपके से जाता,
माया लोक सपनों में भरम रहा जान-बूझ,
हर क्षण तो सिर पर है काल मँडराता,
चोटी है उसके हाँथ, साथ-साथ चलता है,
आता है साथ प्रान लिये चला जाता,
शिव की शरण ले ले पूजन अर्चन कर ले,
देर होती जा रही है समय निकल जाता।







ॐ नमः शिवाय

शिव द्वारा जगत् का निर्माण

क्षण-क्षण परिवर्तन होता है, समय निकलता जाता,
दिन, सप्ताह वर्ष की गणना करते युग के ज्ञाता,
तिथियाँ, मास और पक्ष, दोनों ही आते रहते,
मौसम आते-जाते रहते, दिन भी आते रहते,

नहीं एक क्षण भी रूकता यह काल दूत का रथ है,
उसकी मंजिल ज्ञात नहीं है, कैसा उसका पथ है,
युग में भी परिवर्तन होता, काल बदलते रहते,
सृष्टि सृजन, पालन लय के ये क्रम भी चलते रहते,

नश्वर जीवन, नश्वर है संसार, ये शिव की माया,
सभी गये हैं बारी-बारी जो भी जग में आया,

सत्युग, त्रेता, द्वापर कलियुग, कहकर गये पुकारे,
कह गए करके शोध शोधकर्ता तत्वज्ञ हमारे,
कालावधि में बँधा हुआ है, जीवों का यह जीवन,
जीव लोक में सबसे उत्तम कहते हैं मानव तन,
जिसमें है चैतन्य आत्मा, करती युग अवलोकन,
लोभ मोह से मुक्त न होती, कभी नहीं मानव तन,

कल्प बदलते, युग परिवर्तन, होता है मन्वन्तर,
यह क्रम है संसार सृजन का, चलता यहाँ निरन्तर,
कहीं नहीं स्थिर कुछ भी है, जग बनता मिट जाता,
कौन नियन्ता है इस जग का, कौन है युग निर्माता ?

यही प्रश्न उठता रहता है, तन में जड़ चेतन में,
चैन नहीं लेने देती है, नश्वरता इस मन में,
खोज सदा रहती है जारी होता है अन्वेषण,
किसके द्वारा संचालित है, पृथिवी का हर कण-कण ।



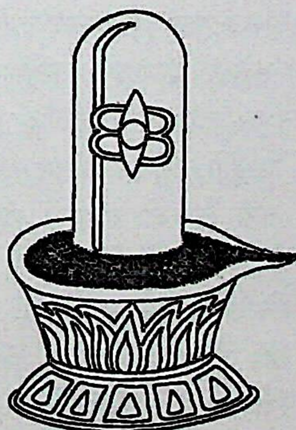
सन्तों और साधकों ने जो सत्य है अब तक पाया,
आने वाले कल के हित है, भेद खोल समझाया,
नहीं मार्ग अल्पज्ञ बुद्धि से, आते बढ़ते जाते,
उसी रास्ते से होकर हम, सत्य केन्द्र तक जाते,

ये अणु, ये परमाणु एक हो, जब जीवन पाते हैं,
रूप, नाम, गुण कर्म सभी से आवृत्त हो जाते हैं,
यही सत्य है, यही महेश्वर, आदि अन्त के कारण,
उनकी इच्छा से ही होता लोक-दृष्टि निर्धारण ।

वह अव्यक्ति, शक्ति, व्यक्त का सृजन किया करती है,
वह है शिव की प्रकृति विश्व को रूपों से भरती है,
होती जब तक कृपा न शिव की, आँख नहीं खुल पाती,
मोह, निशा घेरे रहती है, मुक्ति नहीं मिल पाती ।

करो अर्चना पूर्ण हृदय से शिव-स्वरूप हो जाओ,
भक्ति भाव से, पावन मन से, शिव-शिव हाँक लगाओ,
औढरदानी विश्वनाथ जी सहज कृपा करते हैं,
भक्तों के वे सभी मनोरथ शिव पूरा करते हैं ।







ॐ नमः शिवाय

ब्रह्माण्ड स्वरूप

ब्रह्मा, विष्णु, शिव तीन हैं, सृष्टि लोक निर्माता,
सृजन और पालन लय कर्ता त्रिविध विद्या के ज्ञाता,
ब्रह्म रूप को विश्व सृजन का मूल कहा जाता है,
विष्णु रूप पालन कर्ता इस जग का कहलाता है,
रूद्र रूप से परमेश्वर संहार किया करते हैं,
वे ही शिव है, वही महेश्वर, प्यार किया करते हैं,
नाम, रूप, गुण से पूरित आकार दिया करते हैं,
जीव मात्र को जीवन का उपहार दिया करते हैं,
पृथ्वी तो एक छोटा ग्रह है, यह ब्रह्माण्ड बड़ा है,
अनगिन तारों से नभ मण्डल कबसे भरा पड़ा है,
सूर्य हमारा ही है तारा, शून्य लोक का भागी,
इसका जो परिवार साथ है, आपस में अनुरागी,
अपना यह विज्ञान जहाँ तक, तन की दौड़ लगाता,
इस अनन्त की थाह नहीं है, जहाँ पहुँच वह पाता,
मन की भी गति छू न सकेगी, किसकी है यह माया,
कौन नियंता नभ मण्डल का, कौन कहाँ से आया,
संख्याओं में बँध न सकेगी, शून्य लोक की सीमा,
इस रहस्य को जान न पाती, मानव की जिज्ञासा,
और भी ग्रह तारे तो होंगे, जिनपर जीवन होता,
कोई केन्द्र जरूर कहीं है, जो संचालन होता,
बुद्धि न पाती थाह, भक्ति का, पथ है सहज निराला,
सबको पार लगाता भव से, प्रभु है खेने वाला,
छोड़ दो अपनी विवश नाव को अब मत जोर लगाओ,
एक महेश्वर परमेश्वर को, मन में कभी बुलाओ,



वही शून्य का निर्माता है, जिसमें रत्न भरे हैं,
ये तारे नक्षत्र गगन में, उससे ही उभरे हैं,
वही एक संसार बनाता, फिर है वही मिटाता,
मानव तो नश्वर पुतला है, नहीं थाह है पाता,

नाम रूप गुण तो शरीर के साथ विलय हो जाते,
कैसे आये प्रश्न जटिल है, कहाँ चले हम जाते,
फिर कैसा व्यामोह जीव तो स्वप्न लोक का राही,
पड़ जाता है सभी जीवों को, आखिर में मिटना ही,

हर क्षण, हर कण है शिव मय ज्ञान चक्षु अब खोलो,
मिल जाएगा अन्तर मन में जाओ और टटोलो,
सर्वेश्वर अव्यक्त शक्ति है, बहती पावन धारा,
वही मूर्त बन जाता शिव है, जब भी गया पुकारा,

थक जाओगे, नहीं पाओगे, मन को मत दौड़ाओ,
पाना हो तो भक्ति मार्ग से, आगे बढ़ते जाओ,
वह तो है सर्वत्र व्याप्त, उसी में अपना स्वत्व मिलाओ,
स्वयं को करके अर्पित प्यारे, शिव को तुम पा जाओ,

ॐकार यह प्रणव मंत्र है, शिव स्वरूप दिखलाओ,ता
सृजन और पालन लय तीनों गतियों का निर्माता,
बोलो नमः शिवाय तर्क को कर दो कहीं किनारे,
पार करो इस भवसागर को शिव के लिये सहारे,

यह शरीर मानव का हमने बड़े भाग्य से पाया,
सिर्फ अहं, मद, मोह के चलते, इसे है व्यर्थ गवाँया,
दो दिन के हैं अतिथि धर्मशाला में ठहर गए हैं,
जाना ही है छोड़ किसी दिन, यात्री सभी गए हैं,



ब्रह्माण्डों का अन्त नहीं है, ये असंख्य तारे हैं,
किसी केन्द्र के इर्द-गिर्द ही नाँच रहे सारे हैं,
आत्म और परमात्म भाव दोनों को एक बनाओ,
शिव के चरणों में सविजय यह अपना स्वत्व चढ़ाओ,

काल चक्र चल रहा निरन्तर अहं भाव को त्यागो,
मोह-निशा में पड़े हुए हो, नींद त्याग दो जागो,
देखो वह शिव तेज आ गया है, तेरे सिरहाने,
स्वागत करो, खोल वातायन, दिव्य किरण दो आने,







ॐ नमः शिवाय

पाशुपत्र व्रत और भस्म लेपन

अगर ज्ञात हो जाय, कि मैं हूँ कौन यहाँ,
सारे तर्क कुतर्क हो जायें मौन यहाँ,
यह मैं ही तो भटकाता है इस मन को,
यह नहीं ढील देने देता बन्धन को,
इस माया वन में सुपथ नहीं मिल पाता,
कंटकित झाड़ियों में मन फँसता जाता,
फिर जन्म मृत्यु का चक्र चला करता है,
यह मन अपने को आप छला करता है,
जो लोभ मोह का भाव भरा जीवन में,
वह और जकड़ता जाता है बन्धन में,
हो अगर पाशुपत व्रत, भस्मों का लेपन,
यह मेरा है, विश्वास कटेगा बन्धन,
आचार्य श्रेष्ठ के निर्देशों का पालन,
करके जो करता है निजत्व का अर्पण,
पशुता मिटती, देवत्व भाव आ जाता,
यह व्रत महान् शास्त्रों में है कहलाता,
आचार्य गुरु को शिव-स्वरूप ही जानो,
फिर अपने को शिवत्व भाव पहचानो,
शिव-शिवा, शक्ति-शिव मन में रूप निहारो,
ॐनमः शिवाय का स्वर दिन रात उचारो,
निश्चित है सारे भव बन्धन कट जाये,
जीवन में अँधियारे के घन छँट जाये।
पशुता ही मानव मन को भटकाती है,
जब तक न हो शिव कृपा न कर पाती है,
इस मोह पाश से मुक्ति नहीं मिल पाती,
जबतक मन में शिवभक्ति नहीं आ जाती।





ॐ नमः शिवाय

पाशुपत ज्ञान की सर्वश्रेष्ठता

सबसे पहले देव महेश्वर ने था ज्ञान बताया,
मन्द गिरि पर देवों को था यह रहस्य समझाया,
उपमन्यु ने यही कृष्ण को था उपदेश सुनाया,
वायुदेव ने ऋषि मुनियों को यह संदेश सुनाया,

ब्रह्म आदि जड़ चेतन प्राणी पशु श्रेणी में आते,
शिव ही जिनके स्वामी होकर पशुपति हैं कहलाते,
मल माया से पशुपति उनको रखते हैं बन्धन में,
इसी पाश में बँधा हुआ है, जीव-जगत् जीवन में,

प्रकृति बुद्धि की जननी है, है अहं भाव उपजाती,
इन्द्रिय, मन, स्पर्श शब्द, रस, गंध से इसे सजाती,
सभी देह धारी ब्रह्मा तक इसमें बँधे हुए हैं,
काम, क्रोध, मद, मोह, जाल में सबहीं फसें हुए हैं।

शब्द व्यक्त इन्द्रियाँ कर्म में हैं सक्रियता दिखाते,
सवर्ग, आसमान नाम प्राणों को हैं अपनाते,
शिव की आज्ञा से ही पावन पवन हैं धारण करते,
अग्नि और जल जगत जीवन का है संधारण करते,

धर्मराज भी दण्ड विधा से संचालन करते हैं,
प्रकृति के सब दूत देव बनकर शासन करते हैं,
जीव जगत् को सृजन और पालन लय में ही करते,
प्रकृतिक्रम से विलय और महाप्रलय है करते,

काल है शासक, काल विनाशक, सभी काल के कर में,
घर के भीतर वही छिपा है, बैठा है बाहर में,
वही बनाता, वही मिटाता है संसार बनाता,
वही काल आने पर अपना जौहर है दिखलाता,



जो कुछ पड़ता यहाँ दिखाई शिव की ही माया है,
सबको जाना पड़ता आखिर जो जग में आया है,
तिनका भी शिव कृपा से अपौरुषेय बन जाता,
सभी पराक्रम अस्त्र-शक्ति को है निस्तेज बनाता,

वही यक्ष बन रक्त महेश्वर, करतब दिखलाता है,
शिव है वही, शक्ति भी वह है, वह जग निर्माता है,
उसे भजो मन भक्ति भाव से, वही चराचर शिव है,
गुणातीत वह परा से परे, वही परात्पर शिव है ।

भ्रम छोड़ो आलस्य त्यागकर, मन का करो समर्पण,
कल्मष धो लो, पावन हो लो, करो शिवार्चन पूजन,
जय शिव शंकर, जय प्रलयंकर, जय अभयंकर बोलो,
उस पशुपति की जय बोलो, जय जय शिवशंकर बोलो,







ॐ नमः शिवाय

समस्त जगत् शिवमय है

सबमें शिव है, सब शिव में है, जग है शिव की माया,
गोचर और अगोचर में भी, व्याप्त है शिव की छाया,
अतल सिन्धु में, नाद विन्दु में, नदी झील घाटी में,
देव-दनुज में, जड़ चेतन में, युग की परिपाटी में,
अग्नि पवन में, धरा गगन में, स्वर में शब्द निलय में,
सृजन और पालन में, फिर दृश्यों के महाप्रलय में,
हो जाता है स्वयं समर्पित, जो-जो जग में आया ।।1।।
जीव लोक में, हर्ष शोक में, अभिवर्द्धन में, क्षय में,
निर्मम मन में, कामी तन में, करुणा भरे हृदय में,
मूर्ति वृन्द में, सिन्धु बिन्दु में है वह शक्ति निराली,
स्वयं हलाहल पायी दे औरों को अमृत प्याली,
सूक्ष्म और स्थूल सभी में शिव सर्वत्र समाया ।।2।।
क्षिति में, जल में, अग्नि पावन में, और अद्भुत गगन में,
जीव तत्त्व में, दृश्य लोक में, वन प्रांतर निर्जन में,
राज महल में, श्मशान में, जड़ में, जन चेतन में,
हैं सर्वत्र महेश्वर शिव हो, क्षण-क्षण परिवर्तन में,
अहं लोभ वश, काम क्रोध वश, हमने उसे बुलाया ।।3।।
मंगल कामी, अग-जग स्वामी, वे हैं अन्तर्यामी,
प्रकृति की संतति, शिव संतति, तत्पर है शुभकामी,
सत्य निरन्तर, शाश्वत सत्वर, वर्तमान के स्वामी,
सुन्दर मति है, शुभ कर गति है, सदा सुपथ पथगामी,
पाया वह जो भक्ति भाव से शिव का ध्यान लगाया ।।4।।
वही सूर्य है, वही चन्द्र है, जो प्रकाश का दाता,
जिनकी पावन किरणें पाकर, अन्धकार मिट जाता,
मूर्त, अमूर्त सभी कुछ वह है, निराकार साकारी,
जिसकी जैसी रही भावना, मिली सफलता प्यारी,
तीन आँख वाले शिव ने ही अंजन कभी रचाया ।।5।।





ॐ नमः शिवाय

जीव पशु और शिव जगत्पति

यह लोक चराचर शिवमय है, हर विग्रह में शिव रूप बसा,
ऊपर ब्रह्म है, परम ब्रह्म है, व्यक्त और अव्यक्त सदा।
वह विद्या और अविद्या है, सत् और असत् कहलाता है,
यह मोह पाश में बँधा जगत् सच नहीं जान यह पाता है।

वह क्षर, अक्षर दोनों है, वह क्षराक्षर कहलाता है,
करता है प्रवर्तन और निवर्तन कालजयी बन जाता है।
वह है स्वतंत्र परतंत्र है वह, ज्ञाता है अज्ञाता है,
है वही पिता भ्राता सबका, प्रकृति रूपा वह माता है।

है कालचक्र में बँधा हुआ, संसार वही संचालक है,
स्रष्टा है सारे जग का वह, इस जग का प्रतिपालक है।
चल-अचल, दृश्य-अदृश्य वह, वह सृजन और पालन लय है,
क्षय हो जाता यह दृश्य लोक, फिर एक भाव शिव अक्षय है।

प्रकृति पदत्त यह जीव लोक, पशु की श्रेणी में आता है,
वह शिव ही सबका कारक है, पशुपति शाश्वत कहलाता है।
जब भक्त निजत्व समर्पित कर, शिव भजन भाव अपनाता है,
तब शिव की होती कृपा और वह शिव के दर्शन पाता है।

जब तक मन भ्रम वश अहं भाव में, रहता सोया-सोया,
इसलिए जीव ने सत्यज्ञान, अन्तर मन में है खोया।
जो लोग तर्क से इस शिव का, करते रहते खण्डन,
शंकाओं के चलते ही पाते कभी नहीं शिव-दर्शन।

जाती है जहाँ तक दृष्टि वहाँ हर ओर दिखाई देते शिव,
एकाक्षर, पंचाक्षर के स्वर, हर ओर सुनाई पड़ते शिव।





ॐ नमः शिवाय

युगों में शिव के योगावतार

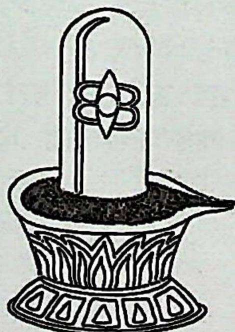
जब तक होते कल्पान्तर हैं : युग में होते हैं परिवर्तन।
यह धरा नई बन जाती है, नूतन लगता है यह नील गगन।
होती है नूतन सृष्टि और संसार नया बन जाता है।
फिर रूप रंग का नया-नया, प्रतिबिम्ब रूप छा जाता है।

हर युग में शिव के अंश नये, नाना रूपों में आते हैं।
कुछ नए नाम, आकार, रंग, शिव के अपनाये जाते हैं।
यह क्रम है कबसे लगा हुआ, है अन्त कहाँ कुछ ज्ञात नहीं।
कोई भी युग हो कल्प कोई, वह शिव मेरा अज्ञात नहीं।

जो होते शिव के आराधक, साधक ही शिव को पाते हैं।
जीवों को करते भला सदा, जीवन को सफल बनाते हैं।
शिवमय हो जाते भक्त तपी, शिवमय होता संसार यहाँ।
हर दृश्य रूप में शिव ही हैं शिव का स्वरूप साकार यहाँ।

शिव महाशक्ति है, महाकाल, शिव ही संसार बनाते।
युग-युग से लेकर नाम कई, वे कल्प-कल्प में आते हैं।







ॐ नमः शिवाय

ब्राह्मण वर्ण और कर्त्तव्य

ब्राह्मण कहते हैं उसे ज्ञान का पक्ष जो सदा दिखाता है,
आचरण और शुभ कर्मों से, जो जग में पूजा जाता है,
जो जीव मात्र का भला करे, जो धरती का कल्याण करे,
जो दीपक बनकर जन मानस का, अन्धकार अज्ञान हरे,

वह उपदेशक है मार्गप्रदर्शक सत्पथ को दिखलाता है,
जीवन हो जाये सकल सुखी, ऐसे उपाय बतलाता है,
है कर्म, ज्ञान, आधार जहाँ जिसका चरित्र पावन निर्मल,
वह है ब्राह्मण वन्दनीय, जिसका जीवनपथ हो उज्जवल,

जो लोभी, कामी, कुटिल, छली, करता हो नित मधुपान जहाँ,
परधन, परदारा में रत हो, लेता जबरन हो दान यहाँ,
वह और भोले कुछ हो जायें, ब्राह्मण कहलाने योग्य नहीं,
वह शाकाहारी, मितभाषी उसका, अभक्ष्य है भोग्य नहीं,

वह दिव्य तेज का अधिकारी, वह स्वाभीमान का रक्षक है,
वह नैतिकता का पोषक है, धर्मों का वह प्रतिरक्षक है,
ब्राह्मण न किसी का दास कभी हो सकता कभी गुलाम नहीं,
वह महाकाल है शिव स्वरूप, करता है गलत वह काम नहीं,

वह होता कभी न पिछलग्गू, वह अपनी राह बनाता है,
वह चाटुकार है नहीं, न कोई झूठी बात बनाता है,
वह महातेज है जब अनर्थ की आँधी चलने लगती है,
उसकी वाणी में महाप्रलय की, ज्वाला जलने लगती है,

वह कर्म पुण्यमय करता है, धर्मों का वह प्रतिपालक है,
सच पूछो तो ब्राह्मण केवल सत्कर्मों का संचालक है,
ब्राह्मण है ज्योति स्तम्भ और आदर्शों का दिग्दर्शक है,
वह मानव जीवन की सुचारुता का पावन पथ दर्शक है,



वह शासक नहीं बनाने वाला, शासक ही कहलाता है,
वह सत्य सचेतक जग का है, जो सही राह दिखलाता है,
वह नहीं जाति है, कर्मों से होती उसकी पहचान यहाँ,
वह जीवन हरण नहीं करता, देता हैं जीवन दान यहाँ,

ब्राह्मण ब्रह्मा है लोकधर्म का, सृजन किया करता है,
वह विष्णु रूप है धरती का पोषण किया करता है,
वह शिव ही है जो मंगलमय, अपना स्वरूप दिखलाता है,
वह ब्राह्मण कभी न हो सकता, जो नीचे गिर जाता है।







ॐ नमः शिवय

पञ्चाक्षर मंत्र

नदी, समुद्र, किसी का तट हो, पूजा घर देवालय,
हो पवित्र कोई भी स्थल, गोशाला शिवालय,
देह शुद्ध कर निर्मल मन हो, कोई हो न विकार,
पञ्चाक्षर का जप करना है, पहला स्वर ॐकार,

एकाक्षर ॐकार सभी, मंत्रों को शुद्ध बनाता,
पञ्चाक्षर है मंत्र महानिधि चारो फल का दाता,
कहकर नमः शिवाय ध्यान में शिव का रूप उतारे,
सर्व सिद्धि दाता शिव शंकर, बिगड़ी सभी संवारे,

नश्वर तन है नश्वर जग है, नश्वर जग व्यापार,
इसलिए उच्चारण करते रहें सदा ॐकार,

क्षण-क्षण बनता मिटता जाता, सृजन प्रलय होता है,
रूप, नाम, गुण, कर्म आदि का प्रतिक्षण क्षय होता है,
व्यर्थ अहं के वशीभूत हो, यहाँ दिखावा होता है,
माया जाल बिछा है जग में, आत्म छलावा होता,

नाशवान है, स्वप्न मात्र है, यहाँ कर्म व्यवहार,
इसीलिए पञ्चाक्षर जप कर सदा-सदा ॐकार,

किसी दिशा में मुँह हो मन में, श्रद्धा भक्ति भरी हो,
शिव की रूपावली अन्तर में, दिव्य ज्योति उतरी हो,
सभी दिशाएँ शिव मय होती, शिव से भिन्न न कोई,
सिर्फ अहं मद मोह के चलते, बुद्धि है रहती सोई,

निराकार भी शिव है रहता, शिव होता साकार,
इसीलिए जप आठ पहर तुम शिव-शिव जप ॐकार,



जप होगा सौ बार, हजारों बार, या लाखों बार,
जितना ज्यादा होगा, होंगे मन से दूर विकार,
ज्ञान नहीं जप विधि हो तो मन का करें समर्पण।
वह तो अपना है अपने का शिव के प्रति हो अर्पण,

अहं छोड़ दो, मद को त्यागो, करो शुद्ध व्यवहार,
होगा सार्थक तभी मंत्र जप, पञ्चाक्षर ॐकार।







ॐ नमः शिवाय

शिष्य, दीक्षा और गुरु माहात्म्य

करे षट् मार्ग का शोधन तभी विज्ञान आता है,
पाप का बन्धन होते ज्ञान ही हो दूर जाता है।
गुरु का काम होता, ज्ञान का दीपक जलाना ही,
अँधेरे को हटाना ही, सुपथ पर तो बढ़ाना ही।

गुरु का तेज जब हो सूक्ष्म बन मन में समा जाता,
गुरु की दिव्य आभा से सभी परिवेश भर जाता।
दिखाई पड़ने लगता है, सुपथ संसार का सारा,
यही आभास होता, शिवमयी बहती कोई धारा।

गुरु शिव है, समूचे लोक का कल्याण करता है,
मिटाता ताप है निर्जीव में भी प्राण भरता है।
गुरु सान्निध्य में उद्विग्न मन में शान्ति आती है,
गुरु की ही कृपा से क्लान्त तन में कांति आती है।

शिष्य को अहं से बाहर जो लाता वह गुरु होता,
सफल यह जन्म करता है, वह सच्चा गुरु होता।
गुरु निज ताप से लोहा को जब तप में तपाता है,
वही कल्मष हटाकर, लोहा को सोना बनाता है।

गुरु निन्दा, गुरु अपमान से है पाप बढ़ जाता,
सुखी जीवन में जैसे ताप का संताप चढ़ जाता।
उसी से नाश हो जाता है शिष्यों का अतुल वैभव,
उसी से प्राप्त होता है, नरक का रूप वह रौरव।

गुरु पूजन, गुरु सेवा सभी शिव के ही अर्चन हैं,
अगर हो भक्ति श्रद्धा तो, सभी शिव के ही चिन्तन हैं।
गुरु हो आचरण वाला, गुरु सर्वांश पावन हो,
वही शिव है कहाता, दिव्यता से पूर्ण तन-मन हो।



न कोई विधि अगर हो ज्ञात तो शिव ध्यान में रखकर,
करे पूजन, करे अर्चन, करे शिव रूप को धारण।
वे हैं सर्वज्ञ, शिष्यों के सभी भय दूर करते हैं,
वे ज्येति-स्वरूप शिव हैं, सारे संशय दूर करते हैं।

उन्हें तो चाहिए ही भक्ति की पावन लहर गंगा,
हृदय मंदाकिनी बहती, जहाँ पर मन मिले चंगा।
गुरु सच्चा हृदय के तिमिर की अज्ञानता हरता,
गुरु ही दुःख भरे जीवन में, सच्चा सुख रतन भरता।







ॐ नमः शिवाय

शास्त्र-सम्मत विहित कर्मों में नित दिन ध्यान में रहकर,
सूर्य पूजा करें फिर पंच-यज्ञों से बने शुचिकर।
करें शिव ध्यान मन से, शक्ति का चिन्तन मनन कर ले,
हृदय में शुद्ध भावों का समर्पण, भक्ति का भर ले।

करें नित होम तर्पण, भजन शिव का हो के जो तन्मय,
वही करता है जीवन में, समूचे पाप का नित क्षय।
बहुत ही विघ्न आते हैं, सुपथ में कष्ट होता है,
मगर जप-तप से इस भव लोक का अघ नष्ट होता है।

जरूरत है कि चंचल मन जो बाँधा जा नहीं सकता,
बिना तप होम तर्पण के, वह साधा जा नहीं सकता।
शरीरी जीव को पावन बनाना चाहिए पहले,
भजन में, भक्ति में मन को लगाना चाहिए पहले।

मनुज तन तो बड़े ही भाग्य से हमने जो पाया है,
सृष्टिकर्ता ने कुछ उद्देश्य से इसको बनाया है।
ये अनुपम कृति है प्रकृति ने यह मन से सँवारा है,
सुखद उपहार इस जग में, यहाँ मन से उतारा है।

ये सारे दृश्य नश्वर हैं, क्षणिक संसार है अपना,
ये मिथ्या भ्रान्ति सारा जग, ये सब संसार है सपना।
अगर कुछ सत्य है तो शिव हमारे लोक निर्माता,
अगर कुछ भक्ति हो तो, भक्त ही उनकी कृपा पाता।

अहं मद मोह में फँसकर गँवाते हम रतन अपने,
नहीं कुछ भान हो पाता, लुटाते सत्य धन अपने।
अरे इस दृश्य को घेरे हुए है पाश में माया,
निकलना है बहुत मुश्किल जो इसके लोभ में आया।



कहूँ क्या बुद्धि मेरी हो गई विचलित भटकती है,
बड़ी ही चंचलता से सत्य पर किंचित न टिकती है।
कृपा अब कीजिए भवनाथ शिव, आया शरण में हूँ,
थका हूँ हो गया रोगी, अभी अन्तिम चरण में हूँ।

निरक्षर मैं अज्ञानी, सहारा आप दे देना,
न डूबूँ अतल में शिव जी किनारा आप दे देना।
जो हूँ सब आपही का है, कृपा करना मेरे शिवजी,
दया का पात्र हूँ अब तो, दया करना मेरे शिव जी।







ॐ नमः शिवाय

शास्त्र कहते हैं सुन लेते मन की कही,
मैं हूँ आया शरण शिव, कृपा कीजिए।
भूल होती गई जिन्दगी भर यहाँ,
आखिरी है समय शिव, दया कीजिए।
ये जो संसार है महाजाल है,
जो भी फँस जाता फँसकर निकलता नहीं,
दिल है पत्थर का यहाँ मेरे शिव,
भूलकर भी कभी भी पिघलता नहीं,
जितने अपराध, अघ पाप होते गये,
आप अपना समझकर, क्षमा कीजिए।
रूप है, रंग है, गंध मंद से भरी,
लोभ से मोहवश मैं भटकता गया,
सत्य से हो न पाया मैं परिचित कभी,
भूख थी, प्यास थी, मैं अटकता गया,
नाव अनथाह मजधार में आ गई,
औढरदानी किनारा लगा दीजिए।
रहने वाला नहीं कोई जाते हैं सब,
काल ले हथकड़ी सामने है खड़ा,
काल बलवान है उसके हाथ में हम,
कोई भी वीर जग का न उससे बड़ा,
ये है माया का बन्धन पड़ा पाँव में,
आप ही मोक्षदाता, छुड़ा लीजिए।
ये तो मतलब का नाता है संसार से,
देख पाया है दुनियाँ में चलते हुए,
काम की आग जिसमें धुँआ है नहीं,
मैने अनुभव किया हरदम जलते हुए,
आँख नम हो गई देखकर दुर्दशा,
शिवजी अब भी तो अंजन रचा दीजिए।





ॐ नमः शिवाय

जीवन दाता, भव-भय त्राता, कृपा सिन्धु त्रिपुरारी ।
कृपा करो हे नाथ दया निधि, रख लो लाज हमारी ।।

मैं अज्ञानी भक्ति हीन हूँ, लोभ, मोह अथकामी,
दिशाहीन हूँ, दीनहीन हूँ और कुपथ पथगामी,
मंत्र न जानूँ, तन्त्र न जानूँ, जप, तप, ज्ञान न जानूँ,
एक भरोसा तदपि आप पर, केवल नाम बखानूँ,

तन निर्बल है, शक्तिहीन है, रोग, शोक बीमारी ।। कृपा करो.......

जो भी आया गाल बजाया, पाया है मन चाहा,
भक्त, अभक्त भले कोई हो, आपने नेह निवाहा,
देव-दनुज हो, नर हो, पशु हो, आप हैं सबके स्वामी,
है सर्वज्ञ दयालु दीन पर है शिव अन्तर्यामी,

सबको तारा, पार उतारा, अब है मेरी बारी ।। कृपा करो.......

मेरे जैसा पतित अधम खल और कहाँ कब होगा,
आपके जैसा पतित उद्धारक, और कौन कब होगा,
आप पतित पावन कहलाते, रीझ भक्त पर जाते,
घोर दुःखों से, पाप, ताप से, भक्त को मुक्त कराते,

हे शिव शंकर, हे जगदीश्वर, परमेश्वर असुरारी ।। कृपा करो.......

यह जो जग है नाशवान् है, आपकी सब है माया,
माया ने ही सुघर रूप दे, मोह में इसे फँसाया,
कैसे निकलूँ, किधर चलूँ मैं, पथ कंटक मय सारे,
कौन सुनेगा सब बहरे हैं, किसको किधर पुकारें,

अब तो अंजन रच दो भोले, आँखे हैं दुःखयारी ।। कृपा करो.......





ॐ नमः शिवाय

यह है माया नगर,
है ये सपनों का घर,
भक्त वत्सल है शिव जी, भजन कीजिए ।
शिवमय तन कीजिए, शिव मय मन कीजिए ।
वे हैं सर्वेश, देवेश, करते सृजन,
उनकी है ये धरा, उनका सारा गगन,
वे हैं सर्वज्ञ मन की समझ लेते हैं,
दुःख को हर लेते हैं सुख से भर देते हैं,
जो भी करता भजन,
करके अर्पित तन-मन,
उनके चरणों में श्रद्धा सुमन दीजिये । शिवमय.....
वे हैं त्रिपुरारी, करते असुर दल दमन,
औढरदानी है भर देते सुवरन-रतन,
वे जगन्नाथ है जग का करते भला,
भक्ति भावों से जो उनके पथ पर चला,
आता जो भी शरण,
करते पूरा हैं प्रण,
त्यागिए मोह जग का, शरण लीजिए ।।2।।
वे बनाते, मिटाते यें संसार हैं,
पाप तापों करते ये संहार हैं,
करो जप-तप अगर, शिव कृपा चाहिए,
घोर संकट में गिर शिवा, दया चाहिए,
चाहते हैं न धन,
दीजिये शुद्ध मन,
मन समर्पित कर पूजन, मनन कीजिये ।।3।।



वे हैं अविनाशी युग ये बदल देते हैं,
अपनी माया से लीला सब दिखलाते हैं,
हे कृपा सिन्धु अब तो कृपा कीजिए।
हे दया सिन्धु अब तो दया दीजिये।

नाथ असहाय हूँ,
नाथ निरूपाय हूँ,
आर्त नयनों में अंजन रचा दीजिये ।।4।।







ॐ नमः शिवाय

कैसे गीत सुनाऊँ मैं...

मैं अनाथ, हे नाथ दया निधि, कौन-सी भेंट चढ़ाऊँ मैं ।
तन मन में पीड़ा अथाह है, कैसे गीत सुनाऊँ मैं ।

विश्वनाथ हैं आप सृष्टि हैं, आपकी सारी माया,
स्वयं आपकी शिक्षा ने सारा संसार बनाया,
आप बनाते, आप मिटाते, करते हैं प्रतिपालन,
सृष्टि लोक का, स्वप्न दृश्य का करते हैं संचालन,

बुद्धिहीन मैं शून्य विवेकी, कैसे थाह लगाऊँ मैं ।।1।।

शून्य सिन्धु में छोड़ दिया है, यह जीवन की नैया,
पाल और पतवार नहीं है, कोई नहीं खेवइया,
सिर्फ आपका एक भरोसा, सिर्फ आपका आशा,
शब्दों में कैसे बाँधू मैं, आपकी वह परिभाषा,

मुझे शरण दे हे शिवशंकर, और कहाँ जाऊँ मैं ।।2।।

क्या रहस्य इस सृष्टि लोक का अब तक समझ न पाया,
अहं मोह वश और लोभ में जीवन व्यर्थ गँवाया,
संध्या काल निकट आया है, सोच के हूँ घबराया,
हार गया बाजी जीवन की, थककर द्वार हूँ आया,

कितने कष्टों से आहत क्या, चीर के हृदय दिखाऊँ मैं ।।3।।

हे विश्वेश्वर, हे महेश, हे आशुतोष वरदानी,
सहज प्रीति से कृपा दिखाएँ, भोले औढरदानी,
अपनी गंगा की धारा में मुझको भी नहवा दें,
जितने पाप दाग है तन में कृपा करें दहवा दें,

है असहाय नयन ये मेरे, अंजन कहाँ रचाऊँ मैं ।।4।।





ॐ नमः शिवाय

अगर काम से मुक्ति चाहिए,
तो करनी शिव भक्ति चाहिए,
सहज प्रीति मिलती है शिव की, वे हैं कृपा निधान।
भेद न करते ऊँच-नीच का आशुतोष भगवान्।

वे दीनों के दीनानाथ,
लम्बे, चौड़े उनके हाथ।
पढ़ लेते हैं मन की भाषा,
पूरी कर देते हैं आशा,
उनके उस दरबार में, प्यार सब हैं एक समान ।।1।।

जितने सन्त साधु सन्यासी,
पाते कृपा हैं काशी वासी,
हैं सर्वत्र व्यप्त शिव भोले,
हर-हर महादेव जो बोले,
बेल पत्र, अक्षत गंगाजल, जो करता है दान ।।2।।

जितने भी इस जग के प्राणी,
जिनकी होती शिवमय वाणी,
शिव मय तो यह सारा जग है,
शिव से लगता जग जगमग है,
मेरे शिव जी नित्य निरंतर करते हैं कल्याणं ।।3।।

करें समर्पण तन का मन का,
करें समर्पण इस जीवन का,
शिव-शिव नमः शिवाय सुनाओ,
शिव की कृपा तुरत पा जाओ,
वे ही अंजन बन आँखों में, हो जाते छविमान ।।4।।





ॐ नमः शिवाय

एकादश रूद्र

प्रथम शंभु नाम, सुर असुर के हैं निर्माता,
शिव काँची स्थित एकाग्रनाथ ज्ञात हैं,
लेपन चमेली तेल होता शिवलिंग पर,
जल नहीं चढ़ता ज्योतिपुंज विख्यात हैं,
दूसरा पिनाकी रूप, श्री रंगम त्रिचना पल्ली,
तीसरा स्थाणु काल हस्तीश्वर ज्ञात हैं,
चौथा भर्ग भयनाशक चन्द्रधारी कहलाते,
चिदम्बरम् कावेरी तट पूजित दिन-रात हैं,
पाँचवाँ गिरीश, अरुणाचल गिरीश नाथ,
छठा सदाशिव पंचमुख दस भुजाधारी,
काशी विश्वनाथ, काशी रखते त्रिशूल पर,
अविनाशी काशी के रक्षक त्रिपुरारी,
सातवें हैं शिव गुजरात सोमनाथ स्थित,
हरनाम पशुपति नाथ हैं मंगलकारी,
साक्षात् परमेश्वर पूजित नेपाल बीच,
आठवाँ है रूप हर सदा सुखकारी,
नौवाँ है सर्प नाम डरते यमराज जिससे,
दसवाँ कपाली, दक्ष यज्ञ के विनाशक,
ग्यारहवाँ भव नाम योग, शास्त्र प्रवर्तक,
जिन्हें प्राप्त करता है साधक उपासक,
यो तो अनेक रूप नाम हैं महेश्वर के,
सभी नाम भक्तों के ज्ञान के प्रकाशक,
शिव ही सर्वेश्वर हैं, अगजग के निर्माता,
शासक है विश्व के और शिव ही प्रशासक ।





जीवन वृत्त

1. नाम - राधामोहन चौवे, "अंजन" (अंजन जी)
2. पिता - स्व॰ श्रीकृष्ण चतुर्वेदी
3. माता - स्व॰ महारानी देवी
4. जन्म-स्थान - शाहपुर डिघवा - भोरे, गोपालगंज, बिहार
5. स्थाई निवास - अमही बाँके, कटेया, गोपालगंज, बिहार (841437)
6. जन्मतिथि - अगहन शुक्ल द्वादशी, रविवार, सम्वत् 1995, 4 दिसम्बर, 1938 ई0 ।
7. शिक्षा - मैट्रिक-I श्रेणी 1957, आई.ए. द्वितीय श्रेणी-1961, बी.ए ऑनर्स-1964, एम.ए. (हिन्दी) द्वितीय वर्ग, द्वितीय- 1967, सभी बिहार विश्वविद्यालय, शिक्षक प्रशिक्षण, बिहार में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान ।
8. सेवा-काल - सरकारी-19/08/59 से जनवरी 1998 तक
   शिक्षक से प्राचार्य तक 30.5 वर्ष
   निरीक्षी शाखा में प्र0 शिक्षा पदा. से क्षेत्र शिक्षा पदाधिकारी (सम्वर्ग 2) तक 8.5 वर्ष ।
9. काव्य क्षेत्र में-आकाशवाणी पटना से 30 जून 1962 से हिन्दी भोजपुरी कवि रूप में सम्बद्ध ।
   फिल्मी गीतकार, भोजपुरी कैसेट गीतकार, दूरदर्शन गीतकार ।
10. कुल प्रकाशन - 26 (छब्बीस)
11. परिवार - पत्नी श्रीमती प्रभावती देवी ।
    पुत्रियाँ - गीता, प्रतिभा ।
    बहन - सुभद्रा (सगी), रामावती (चचेरी) ।
    पुत्र - देवेन्द्र कुमार देवेश, विज्ञान-शिक्षक, हाई स्कूल ।
    भावेश B.Sc., B.Ed., M.A. (Eco.)
    भूपेश M.A. B.Ed.
    पौत्र - मयंक कुमार चतुर्वेदी, Comp. Sc.
    बजरंग कुमार चतुर्वेदी, आचार्य
    निर्भय कुमार, अभय कुमार, अभिजित कुमार, अर्पित कुमार
    पौत्रियाँ - सुचित्रा, सुमेधा, अनुसा, सुनन्दा ।
    पौत्र वधू - रंजना चतुर्वेदी M.A.
    प्रपौत्र - चक्रेश जी "चारू"



देश में प्राप्त सम्मान

1. 1980 में जम्मू काश्मीर के वजीरे आला मरहम जनाव शेख अब्दुल्ला साहब और विड़ला समूह के तत्कालीन महा प्रबंधक श्री जे.एन. त्रिपाठी जी द्वारा श्री नगर में सम्मान।
2. 1982 में पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद् (प.बं.) में सम्मान।
3. 1992 में प.बं. भोजपुरी परिषद् कोलकाता द्वारा महाजाति सदन हावड़ा में सम्मान।
4. मार्च 1999 में राजेश कुमार पाण्डेय, भाजपा अध्यक्ष विजयपुर, सुभाष पाण्डेय व्यास और आचाय डॉ0 अनील चौबे के संयुक्त तत्वावधान में तत्कालीन माननीय समता सांसद श्री रघुनाथ झा एवं तत्कालीन माननीय विधायक श्री विश्वनाथ वैठा द्वारा मुसेहरी बाजार (विजयपुर) में सम्मान।
5. 24 मार्च 2001 को मुम्बई दूरदर्शन केन्द्र द्वारा सम्मान।
6. 1999 में प्रा. शिक्षक संघ कटेया द्वारा सम्मान।
7. नवम्बर 2000 में टी-सीरीज सुपर कैसेट के मालिक श्री दर्शन सिंह जी द्वारा नोएडा में सम्मान।
8. 2003 के मार्च में श्री केशव बाबा, बाबा सदन भोरे के नायकत्व में सर्वोदय मण्डल एवं मुखिया संघ भोरे द्वारा सम्मान।
9. 05.01.2005 को साधु वेला, उदासीन आश्रम, भदैनी, वाराणसी में महंथ बाबा स्वामी गौरीशंकर दास जी महाराज द्वारा सम्मान।
10. 10.01.2005 को साधुवेला में ही आचार्य डॉ0 पंकज शुक्ला के संयोजकत्व में संकट मोचन, हनुमान मन्दिर के स्वनामधन्य महंथ बाबा वीरभद्र मिश्र जी द्वारा तीन रचनाओं का लोकार्पण, स्नेह और आशीर्वाद सम्मान।
11. 03.02.2005 को मुमुक्षु भवन वाराणसी में काशी विश्वनाथ मन्दिर (बी.एच.यू.) के महन्थ बाबा आचार्य डॉ0 विश्वनाथ पाण्डेय जी द्वारा सम्मान।
12. 06.02.2005 को बी.एच.यू. के यूनिवर्सिटी क्लब में महंथ बाबा आचार्य डॉ0 विश्वनाथ पाण्डेय द्वारा सम्मान।
13. 04.04.2007 को जन कल्याण समिति, भोरे (गोपालगंज) द्वारा सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार यज्ञ में आयोजक शंभु शरण द्विवेदी एवं समिति द्वारा समारोह पूर्वक प्रदत्त सम्मान (बैशाख कृष्ण द्वितीया को)।
14. 30.11.2008 को रा0म0वि0 बैकुण्ठपुर के परिसर में पं0 रमाशंकर तिवारी (मुखिया), बैकुण्ठपुर पंचायत (कटेया) द्वारा आयोजित भव्य-समारोह में सम्मानित।
15. दिनांक 04.12.2009 को पूर्वांचल उत्तर प्रदेश में कुशीनगर जनपद के टँडवागढ़ (सलेमगढ़) में नवनीत-प्रतिभा के परिणय के उपलक्ष्य में आयोजित आशीर्वाद गोष्ठी में बाबू टी.एन. राय (बैंक मैनेजर; ग्रा. रसौती) आर.टी.ओ. साहब, लखनऊ, बाबू महेन्द्र ठाकुर, टंडवागढ़ एवं बाबू टन्नू राय (सुनील राय, कोरया) द्वारा राजकीय सम्मान।
16. 08 मई, 2010 को पूर्वाञ्चल के जोगिया नबूजी नगर (फाजिल नगर, कुशीनगर) में भव्य समारोह में सम्मानित किया गया)।



गीता के कुछ श्लोक

1. वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ।।
(गीता 2/221)

2. नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहतिपावकः ।
न चैवं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ।। (2/23)

3. जातस्य ही ध्रुवो मृत्यु, ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
तस्माद् परिहार्येऽर्थे नत्वं शेचितु मर्हसि ।। (2/27)

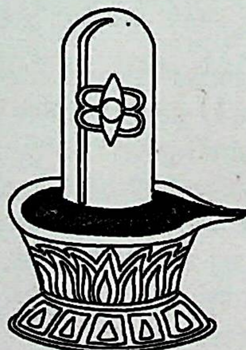
4. कर्मण्ये बाधकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफल हेतुर्भूर्मान्ते संगोऽस्त्व कर्मणि ।। (2/47)

5. अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न सम्भवः ।
यज्ञादभवन्ति पर्जन्यो, यज्ञः कर्मसमुद्भव ।। (3/14)

6. कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षर समुद्भवम् ।
तस्मात् सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ।। (3/15)

7. विद्या विनय सम्पन्ने, ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैवश्वपाके च पण्डिता समदर्शिनः ।। (5/18)







ॐ नमः शिवय

काशी-खण्ड

ॐ देवेन्द्र मौलिमन्दार मकरन्द कणारुणाः ।
विघ्नं हरन्तु हेरम्ब चरणाम्बुजरेणवः ।।

●

नमः शिवाय शान्ताय कारण त्रय हेतवे ।
निवेदयामि चात्मानं त्वं गतिः परमेश्वर ।।

●

तमीश्वराणां परमं महेश्वरं,
तं देवतानाम् परमं च दैवतं ।
पतिं पतीनां परमं परस्ताद,
चिदां देवं भुवनेश मीड्यम् ।।

यस्मिन्नदं यतश्चेदं य इदं स्वयम् ।
यास्मात्पर स्माञ्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम् ।।

तमीशानं वरदं देव मीड्यम् ।
निचाय्ये मां शान्ति मत्यन्त मेति ।।

वे ईश्वरों के भी परम महेश्वर, देवताओं के भी परम देवता, पतियों के भी परम पति, परात्पर, परम पूज्य और भुवनेश हैं । जिनमें यह विश्व है, जिनसे यह विश्व है । जिनके द्वारा यह विश्व है, जो स्वयं यह विश्व है, जो इस विश्व के परे से परे हैं । उन स्वयंभू भगवान् की शरण मैं लेता हूँ । उन्हीं ईशान और वरदाता पूज्य देव को जानने से जीव आत्यन्तिकी शान्ति का अधिकारी हो जाता है । हे विश्वेश्वर महादेव जी ! विश्वनाथ जी अपनी कृपा दीजिए जिससे जन्म-जन्मांतरों से मेरी काशी-प्रियता का अवलोकन हो सके ।





ॐ नमः शिवाय

जय विश्वेश्वर महादेव जय विश्वनाथ अविनाशी।
त्रिविध ताप हर, मोक्षदायिनी, जय गंगे जय काशी।।
जय गणेश, शुभ मंगल दाता,
पिता महेश्वर, गौरी माता,
विद्या, बुद्धि, विवेक हमें दो,
हरो विघ्न हे भव-भय त्राता,
जय-जय भैरव, योगी साधक, साधु-सन्त सन्यासी।।1।।
आदिशक्ति अन्नपूर्णा माता,
महिषासुर मर्दिनि विख्याता,
जो काशी की शरण में आता,
मन चाहा चारो फल पाता,
सबको सुख पहुँचाते भोले, हरते घोर उदासी।।2।।
युग-युग कल्प बदलते जाते,
समय-चक्र है चलते जाते,
काशी है त्रिशूल पर स्थिर,
पाप-ताप सब जलते जाते,
आशुतोष की कृपा है पाते, आये काशी वासी।।3।।
यह रहस्य मय पावन काशी,
धर्म केन्द्र मन भावन काशी,
ऋषि-मुनियों की तपस्थली यह,
हरती व्यथा भयावन काशी,
यही मुक्ति जीवन में पाती, इच्छा भूखी-प्यासी।।4।।
शक्ति और शिव रूप बदलकर,
सुधि लेते काशी में चलकर,
तारक मंत्र सभी पा जाते,
जीवित रहकर, चिता में जलकर,
ज्ञान चक्षु दो खोल सदाशिव, अंजन है प्रत्याशी।।5।।





ॐ नमः शिवाय

समर्पण-गीत

समर्पित कर रहा हूँ स्वयं को शिव की शरण में मैं।
व्यथित हूँ, मैं घिरा हूँ मोह के तम-आवरण में मैं।।
आप ही शक्ति हैं, शिव आप ही हैं यह जानता हूँ मैं,
समूची सृष्टि में हैं आप ही, यह पहचानता हूँ मैं,
मेरे मय ने मुझे भटका दिया है सत्य के पथ से,
ये नश्वर लोक है, सब स्वप्न है, यह मानता हूँ मैं,
निरन्तर हो रहा हूँ विसर्जित स्वर क्षरण में मैं।
ये सारे दृश्य हैं जाते बदलते, शून्य गह्वर में,
अहं की तुष्टि में लिपटा हुआ मन विकल हर स्वर में,
आप की सृष्टि है, फिर आप ही संहार करते हैं,
जो होता भक्त उससे आप बेहद प्यार करते हैं,
मैं लिपटा मोह में, उलझा हूँ माया के चरण में मैं।
किनारे आ गया हूँ नाथ! मुझको पार कर देना,
अधम हूँ, पतित हूँ, करके कृपा उद्धार कर देना,
कई जन्मों से काशी में सदा आता रहा हूँ मैं,
अहैतुक स्नेह भोलेनाथ से पाता रहा हूँ मैं,
अधम तन है मगर शिव को रखा अन्तःकरण में मैं।
नहीं कुछ ज्ञान है सत्कर्म से भी दूर रहता हूँ,
विवशता है, अज्ञान वश मजबूर रहता हूँ,
चलूँ इस लोकसे तो शिव मुझे काशी बुला लेना,
हुई जो भूले हो, हे नाथ! उस सबको भुला देना,
रचूँ अंजन नयन में; भक्ति के अन्तिम चरण में मैं।





ॐ नमः शिवाय

शिव और मन्त्र

परम पुरुष शिव और शक्ति के मिलन से स्पन्दन होता ।
स्पन्दन से सृष्टि, सृष्टि से पालन फिर विलयन होता ।।

कहता है विज्ञान जहाँ आधेय (Electrons) पुरुष कहलाता है ।
वहीं एक आधार (Protons) प्रकृतिका रूप साथ मिल जाता है ।
होता है संघर्ष और स्पन्दन (Encireling Motion) की गति होती है ।
अणुओं की उत्पत्ति से आकृति की मति होती है ।

होकर के आनन्दमग्न शिव ताण्डव दिखाते हैं ।
माँ आनन्दमयी के संग में एक रूप हो जाते हैं ।
बज उठता है डमरू जिससे अनहद नाद निकलता है ।
परा बैखरी पश्यन्ती के रूप में स्वर जब चलता है ।

अक्षर बनते अतुल शक्ति के पुंज दिखाई पड़ते हैं,
लोक सृष्टि प्रणव रूप में सदा सुनाई पड़ते हैं ।

बम-बम मूल है प्रणव मंत्र का प्रबल शक्ति का नायक है ।
ॐकार ही हर अक्षर का दाता है परिचायक है ।
ज्ञान चक्षु है नेत्र तीसरा, जो त्रिकाल का द्रष्टा है ।
शिव ही गुरु है आदि देवता, दृश्य सृष्टि का स्रष्टा है ।





ॐ नमः शिवाय

आध्यात्मिक काशी

चित्तवृत्ति हो शुद्ध, शान्त निःस्वार्थ, प्रकाशित मन हो,
काम, क्रोध, मद, लोभ रहित, यह दिव्य लोक जीवन हो,
इसी अवस्था को काशी की प्राप्ति कहा जाता है,
प्रज्ञा का निवास होता है मन सुसुप्ति पाता है,
काशी है आनन्द युक्त वन, दुःख का जहाँ न भय है,
शिव का है आवास जहाँ भव-भय नहीं कहीं संशय है,
महाश्मशान में सदा सदाशिव पाप-ताप हरते हैं,
अहंकार का दहन, मोक्ष मय तारक पथ करते हैं,
देती गौरी दिव्य ज्योति है, बोध शक्ति मिल जाती,
खुल जाता है नेत्र तीसरा, सर्व सिद्धि हो जाती,
मणिकर्णिका प्रणवकर्णिका है, मुक्ति द्वार दिखलाती,
तारक मंत्र तभी देते शिव, जब शूद्धि पूर्ण हो जाती।
जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति-पार कर जब तुरीय मिल जाता,
त्रिविध ताप हरता त्रिशूल है, साधक है पा जाता,
अर्द्धचन्द्र है आधी मात्रा प्रणव मंत्र का पालक,
पंच महाभूतों तन्मात्रा पाँच का है संहारक,
अध्यात्मिक गंगा हरि पद से निकल धरा पर आती,
शिव के जटा-जूट में आकर धरा को सुखी बनाती,
शिव के पाँचो मुख ईशान हैं और अघोर कहाते,
वामदेव तत्पुरुष रूप में, सद्योजात सुहाते,
निर्विकार करते अग-जग को ब्रह्मा, विष्णु महेश,
यही त्र्यम्बक रूप है वर्णित रूप विशेष,
जिसकी होती भक्ति प्रबल वह सहज प्रीति पा जाता,
काशी सद्गति मोक्ष मार्ग है, चारो फल का दाता,
एक दिवस भी जो काशी में अपना कभी बिताता,
कोटि-कोटि जन्मों के पापों से वह पार है जाता,
धन्य है वे जो सदा सेवते दिव्य लोक यह काशी,
तर जाते हैं पूर्वज तरते, धन्य हैं काशी वासी।





ॐ नमः शिवाय

काशी माहात्म्य

कलि का कराल काल, भव भय का महाव्याल,
काशी का नाम सुनते तुरत भाग जाता,
महादेव विश्वनाथ विश्वेश्वर जगन्नाथ,
शिव शंकर भोले नाथ, भव-भय के त्राता,
शिव के त्रिशूल पर, यह काशी बसी है प्यारे,
अडिग-स्थिर, कल्प-कल्प महाप्रलय आता,
अरे अधम तन धारी कुटिल कुविचारी मन,
लोभ, मोह, छोड़ क्यों न काशीधाम जाता।



बाबा विश्वनाथ सदा अलख जगाते जहाँ,
संकट मोचन हनुमान संकट मिटाते,
महाकाल भैरव जो रक्षा करे आठ पहर,
माता अन्नपूर्णा के गीत भक्त गाते,
माता विशालाक्षी, महिषासुर मर्दिनी माँ,
सारे देव-देवी शिव-दर्शन को आते,
गंगा की धार में, देशी-विदेशी सभी-
चारों फल पाने हेतु रोज हैं नहाते।



काशी प्रवास पाप-ताप का विनाश करे,
शिव-स्वरूप पंडित, आचार्य सन्यासी,
आत्मा शरीरी, अशरीरी, सिद्ध साधक सभी
भोगी, योगी, त्यागी, रागी, उदासी,
सबको मन चाहा फल देते हैं भोलेनाथ,
स्वयं हैं अयाची भोले नाथ अविनाशी,

सबसे निराली है, अमृत की प्याली है,
शंकर की काशी यह शीर्ष तीर्थ काशी,



धर्म, जाति, मजहब के रूप रंग अलग-अलग,
सबको समेटे स्नेह देती है काशी,
कहीं शंखनाद कहीं होता अजान यहीं,
फिर भी दिल एक भाव रखती है काशी,
भोले की नगरी यह धर्मों की पगड़ी है,
युग-युग से मुक्ति-भुक्ति देती है काशी,
बार-बार प्रणाम करता शिव काशी को,
जय काशी अविनाशी, शिव काशी को।

जय काशी अविनाशी, शिव काशी वासी।







ॐ नमः शिवाय

मुक्तिधाम काशी

(शिवाङ्क आठवें वर्ष के विशेषांक गीता प्रेस, गोरखपुर से साभार संकलित)

सन्तों, सिद्धों और साधकों से है सुनी कहानी।
भव भय से है मोक्ष दिलाता जब गंगा का पानी।
कहा वृहस्पति ने सुनिए मुनि याज्ञवल्क्य युग चेता,
काशी है अविमुक्त धाम, धर्मों का सजग प्रणेता,
जो मरता है यहाँ मोक्ष का, हो जाता अधिकारी,
तारक मंत्र सदा शिव देते, हरते दुःख त्रिपुरारी,
भव बन्धन में कभी न फँसता, काशी वासी प्राणी ।।1।।
शक्ति और शिव एक हैं दोनों नहीं द्वैत भ्रम हो,
करते हैं कल्याण विश्व का भले रूप का क्रम हो,
कहा कबीरा ने काशी में "राम से कौन निहोरा",
तुलसी ने काशी में ही अपना नश्वर तन छोड़ा,
नहीं समझ पाते रहस्य धन के लोभी अज्ञानी ।।2।।
यह रहस्य पारसी शिक्षक श्रीउनवाला कहते,
मरूँ तो काशी में, वे आए काशी में ही रहते,
स्वामी श्री तैलङ्ग भास्कराचार्य, धर्म के ज्ञाता,
कहते काशी में जो मरता, मोक्ष सदा पा जाता,
शंभु स्वयं विश्वनाथ शिव, दाता औढरदानी ।।3।।
काशी में ही शक्ति है ऐसी या शंकर की माया,
सूक्ष्म उर्ध्वगामी हो जाता, शिव की पाकर छाया,
लिंग शरीर दहन हो जाता, ज्ञान-द्वार खुल जाते,
तारक मंत्र यहाँ शंकर के जीवों को मिल जाते,
ज्ञान तीर्थ काशी कण-कण में दिव्य-ज्योति कल्याणी ।।4।।
तर्क बुद्धि से परे हैं काशी, भक्ति ज्ञान का संगम,
बाह्य जगत् का मुख्य द्वार है, काशी का तप, शम, दम,
मैं अज्ञानी समझ न पाता, कैसे पता लगाऊँ,
अधम देह में कैसे भोले द्वार आपके आऊँ,
ध्यान, साधना, जप तप की है कठिन राह अनजानी ।।5।।





ॐ नमः शिवाय

(श्री राम कृष्ण-लीलामृत (बंगला), गुरुभाव, उत्तरार्द्ध पृष्ठ 126-28, चतुर्थ संस्करण में वर्णित। श्री शारदानन्द जी द्वारा लिखित श्री श्री रामकृष्ण लीला प्रसंग नामक पुस्तक में श्री रामकृष्ण परमहंस का एक अनुभव)।

वाराणसी के मणिकर्णिकादि पंचतीर्थों के दर्शन करने
नाव पर सवार होकर गंगा में, लोग जाते हैं,
एक दिन रानी रासमणि के दामाद मथुरा बाबू भी,
ठाकुर (श्री रामकृष्ण परमहंसदेव) के साथ गए थे।
मणिकर्णिका के बगल में ही महाशमशान है-
जैसे ही नाव मणिकर्णिका घाट के निकट पहुँची-
देखा श्मशान चिताओं के धुँए से भरा है।
मूर्दे जल रहे हैं - ज्ञान वैराग्य का वितान तना है,
भगवान ठाकुर (श्री रामकृष्ण परमहंस देव) देखते-देखते,
आनन्द विभोर हो उठे-दौड़कर, बाहर निकलकर।
नाव के किनारे खड़े हो गये, समाधिस्थ हो गए।
मथुरा बाबू के पण्डे और मल्लाहों ने समझा,
"यह आदमी जल में गिरकर बह जायेगा"
ठाकुर को पकड़ने दौड़े, मगर यह क्या ?
ठाकुर तो धीर स्थिर भाव से चुप-चाप ध्यानमग्न खड़े हैं।
और एक अद्भुत ज्योति और हास्य की छटा,
उनके मुखमण्डल से प्रस्फुटित हो रही है जिससे
वह सारा क्षेत्र ज्योतिर्मय बन गया है।
मथुरा बाबू और ठाकुर के भानजे हृदय बाबू
सावधानी पूर्वक खड़े रहे। मल्लाह भी आश्चर्य से
देख रहा था। कुछ देर बाद सभी घाट पर उतरे,
स्नानादि के बाद वे आगे बढ़ चले।
ठाकुर ने बताया - "मैंने देखा पिंगल वर्ण की



जटाओं वाले एक लम्बे श्वेतकाय पुरुष गम्भीरता से
चलते हुए श्मशान की प्रत्येक चिता के पास आते हैं।
प्रत्येक देह को उठाकर उसके कान में ब्रह्म मंत्र प्रदान करते हैं,
सर्व शक्तिमयी श्री श्री जगदम्बा भी स्वयं महाकाली रूप में
जीव के दूसरी तरफ उसी चिता पर बैठकर उसके स्थूल
सूक्ष्म और कारण आदि सब प्रकार के संस्कार-बन्धनों
को खोंल रही है और निर्वाण का मार्ग उन्मुक्त कर
अखण्ड धाम में भेज रही है। इस प्रकार
श्री विश्वनाथ अनेक कल्पों के योग तप से,
प्राप्त होने वाला अद्वैतानुभव रूप भूमानन्द जीवों को-
दया पूर्वक प्रदान कर उन्हें कृतार्थ कर रहे हैं।



रोमां रोलां ने काशी के परम हंस देव के अनुभव के बारे में लिखा है -

He visited Benares, it seemed to him not built of stones but condensed mass of spirituality : This has also been the experience of other yogis who have visite a Kashi.

(Life of Ram Krishna by Romain Rolland)

"अर्थात् स्वामी राम कृष्ण परमहंस ने काशी को पत्थरों से निर्मित नहीं देखा। उन्होंने देखा कि यह "दिव्य चेतन का समूह है। जिन अन्यान्ययोगियों ने इस पवित्र काशी के दर्शन किए हैं- उन्हें भी ऐसा ही अनुभव हुआ है।





खालिसपुरा की माँ और बिल्ली

धर्म सत्य है, सत्य धर्म है, सारा जग नश्वर है।
सभी जीव में एक भाव से रहता परमेश्वर है।
लोभ, मोह, मद, काम, क्रोध है जभी भगाया जाता,
मन मन्दिर में ज्ञान का दीपक जभी जलाया जाता,
आ जाते प्रभु दिव्य ज्योति से, जीवन सुफल बनाते,
जब तक रहता अहं कभी भी प्रभु की कृपा न पाते,
काशी के कण-कण में दीपित शिव की ज्योति प्रखर है ।।1।।
युगों-युगों से शिव की काशी, काशी के शिव शंकर,
करते हैं कल्याण विश्व का अनगिन रूप बदलकर,
योगी, साधक, सिद्ध उपासक, साधु, सन्त सन्यासी,
सशरीर, अशरीरी दोनों सेवन करते काशी,
पाप-ताप भव क्लेश यहीं पर मिट जाता जलकर है ।।2।।
गंगा त्रिविध ताप हरती है, माँ गंगा, हर गंगा,
आस्था-श्रद्धा पूर्ण चाहिए, पावन मन हो चंगा,
यह भोगी रस लोभी जग माया में पड़ा हुआ है,
महानाश के पथ पर अब भी तनकर खड़ा हुआ है,
डोल न पाता अडिग हठी मन जैसे जड़ पत्थर है ।।3।।
खालिसपुरा की माँ का तो मात्र धर्म सम्बल है,
सात्विक फल आहार पेय केवल गंगा का जल है,
पति जीवित थे उसी समय की पावन एक कथा है,
सन्त, साधु जानते जीव की जीवित कहाँ व्यथा है,
कहीं से बूढ़ी बिल्ली आई, समझी अपना घर है ।।4।।
कहीं न जाती, शाकाहारी भोजन ही करती थी,
एकादशी व्रत करती हरदम, सेवन व्रत करती थी,
सामिष से थी दूर, शरण में माता की थी आई,
उसकी भी तो मौत एक दिन चुपके-चुपके आई,
पास सड़क पर लाश फेंक दी गई देह नश्वर है ।।5।।



आएगा कोई डोम उठाकर के शव ले जाएगा,
कहीं फेंक देगा नाला में, कर्म निभा जाएगा,
सोचा साध्वी माँ ने यदि गंगा प्रवाह हो जाए,
इसके तन धारण की सद्गति काशी में हो जाए,
पति से बोली इसे प्रवाहित करें जो गंग लहर है ।।6।।

बात मानकर पति देव ने गंगा में दहवाया,
तर गई बिल्ली जन्म मरण से ऐसा अवसर आया,
हफ्ते भर के बाद लाल साड़ी सुहाग की पहने,
आई युवती एक पहन कर दीप्त वर्ण के गहने,
लगा कि डोली से आई यह वधू सुरम्य उतर कर है ।।7।।

कौन हो तुम रमणी, अपना कुछ पता मुझे बतलाओ,
कैसे आना हुआ यहाँ, अपना मकसद समझाओ,
बोली युवती माँ जी, मैं वही आपकी बिल्ली,
पूर्व जन्म के पाप के चलते हो गई थी मैं बिल्ली,
दिया आपने शरण, अभी वह छूटा तन नश्वर है ।।8।।

गंगा के प्रवाह देने से मुझे मुक्ति मिल पाई,
स्वर्ग गमन करने से पहले आप से मिलने आई,
ये सारे देवता पास में खड़े इन्हें दर्शन दें,
कहकर अन्तर्धान हो गई, अपने सत्य कथन दें,
यह काशी गंगा की महिमा गाते सुर सस्वर है ।।9।।

कब तक जन्म-मृत्यु का बन्धन, लगा रहेगा फेरा,
सपनों की माया-नगरी में बना रहेगा डेरा,
लोभ मोह को छोड़ अधम रे, चलो अभी भी काशी,
देखो शिव-विश्वेश्वर बाबा विश्वनाथ अविनाशी,
औढरदानी करते हैं कल्याण सदा तत्पर हैं ।।10।।





ॐ नमः शिवाय

आस्था के आयाम

काशी और गंगा

यूँ तो काशी विश्वनाथ, संकटमोचन, काल भैरव और माता अन्नपूर्णा और माता गंगा जैसी अलौकिक दिव्यशक्तियों की रहस्यमयी लीलाओं की थाह पाना मेरे जैसे अल्पज्ञ के वश की बात नहीं, लेकिन जीवन के व्यतीत कालखण्ड में जो प्रत्यक्ष अनुभव हुए वह काशी और गंगा की महत्ता बताने के लिए पर्याप्त हैं। कुछ घटनाओं का उल्लेख करना चाहता हूँ :

(1)

बात सन् 1974-75 की है। अपने दो छोटे पुत्रों मुन्नू-चुन्नू (भावेश, भूपेश : उम्र 6 एवं 4) का मुण्डन कराने के लिए भटनी से वाराणसी जाने के क्रम में मौरवा स्टेशन के प्लेटफार्म पर बैठा। ट्रेन की प्रतिक्षा कर रहा था। मुण्डन लोकार्क कुण्ड पर कराना था। मेरे बगल में एक सज्जन बैठे थे। समय था इसलिए कुछ न कुछ तो बात करनी थी। चर्चा के क्रम में मैंने अपने पिता जी द्वारा लगाए आम (सफेदा मालदह) के फल के पकने के साथ सड़ने की भी बात बताई। उस सज्जन ने कहा - "क्यों न गंगा जी को पाँच आम दान कर देते हैं ?" बात मन में बैठ गई। अगले साल एक कवि सम्मेलन में भाग लेने इलाहाबाद जा रहा था। आम के कच्चे फल लिए चला। गंगा स्नान के बाद विश्वनाथ जी को जल चढ़ाकर पाँचो आम गंगा जी को दे दिया और मात्र इतना ही कहा - "आपकी कृपा चाहिए।" क्या चमत्कार हुआ, तब से आज तक एक भी आम नहीं सड़ा।

(2)

1991 की बात है। मैं गोपालगंज (गृह जिला) के गृह अंचल कटेया में ही प्रखण्ड शिक्षा के पद पर पदस्थापित था। नियमानुसार किसी भी पदाधिकारी को गृह जिला में पदस्थापित नहीं किया जाता है। मगर मेरी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति को देखते हुए तत्कालीन शिक्षा निदेशक ने सम्मान स्वरूप मुझे गृह अंचल में पदस्थापित किया था।

चुनाव का समय था। रातोदिन कार्यालय की व्यस्तता थी। इसी बीच मेरी दाहिनी भुजा में असह्य पीड़ा शुरू हुई। स्थानीय चिकित्सों की दवा काम

नहीं कर रही थी। कार्यालय का कार्य सुबह से शाम तक चलता था। देवरिया, गोरखपुर तक जाँच कराया, दवा लिया, मगर कोई सुधार नहीं हुआ। निराश होकर भागा-भागा वाराणसी में शरणागत हुआ। मेरे साथ योगेन्द्र मिश्र जी अधैला वाले मेरी मदद के लिए साथ थे। विश्वनाथ जी को जल चढ़ाने के बाद बी.एच.यू. में जाँच कराई गई। वह दर्द ऐसा था जिसे शब्दों में व्यक्त कर पाना कठिन था। दवा खरीदने के बाद एक शाम उदास भाव से अस्सी घाट पर बैठा गंगा-मैया की लहरों का अवलोकन कर रहा था। उस समय अकेला था। एक सज्जन मेरे पास आकर बैठे और मेरे उदासी का कारण पूछ बैठा। मैं सारी कहानी कह गया। उस अजनबी सज्जन ने सारी दवाएँ गंगा जी को दे देने के लिए बोले। मैंने तुरन्त सारी दबाओं को गंगा की धार में प्रवाहित कर दिया। चमत्कार हुआ - आज तक वह दर्द फिर कभी नहीं हुआ।

(3)

1988 का 28 अगस्त। मुहर्रम का आखिरी दिन। 27 अगस्त की रात में मेरे बड़े पुत्र का सर्प दंश हो गया। वह उस समय रोहतास जिले के बीसी कला उच्च विद्यालय में पदस्थापित था। उस समय घर आया था। स्थानीय सर्प विष उतारने वाले ओझा गुनियों ने यह कहकर भ्रमित कर दिया कि सर्प दंश नहीं है। फिर डाक्टरों का इलाज शुरू हुआ, लेकिन स्थिति बिगड़ती गई। बोली बन्द हो गई। मुँह से गाज निकलने लगी।

देहाती क्षेत्र है। सवारी की सुविधा नहीं थी। भादो का महीना था। रास्ता बीहड़। फिर भी जो भी बन पड़ा खाट पर लादकर स्थानीय बगल के गाँव सोहनरिया तक मेरे साथ कुछ मददगार गाँव के लोग गए। वहाँ से प्रखण्ड प्रमुख स्व0 दीनानाथ पाठक की जीप से हम लोग भोरे रेफरल अस्पताल पहुँचे।

हिन्दू, मुसलमान, गरीब-अमीर सभी तरह के लोगों की हजारों की भीड़ अस्पताल परिसर में उस भादो की अँधेरी बरसाती रात में जमा हो गई। जीवन-मृत्यु के संघर्ष की मर्मान्तक स्थिति थी। आबाल, वृद्ध, नर-नारी सभी प्रार्थना करते थे। शरीर स्पन्दनहीन हो गया। डॉ0 जे.एन. चौधरी, डॉ0 प्रबोध झा, डॉ0 मधुवाला, डॉ0 अशोक कुमार, डॉ0 नरेन्द्र सिंह जैसे तमाम डॉक्टरों, अस्पताल कर्मियों, स्थानीय निवासियों की मन्नतों, दुआओं ने मृत्यु के मुँह से बेटे के प्राण वापस ले लिया। बाबा सदन के केशव बाबा ने महाभारत के

सारथी कृष्ण की भूमिका निभाई । अस्पताल की बगल के मन्दिर में यह भजन सुबह-शाम बजता था ।

"पवन सुत बिनती बारम्बार" इस भजन से भोरे के एक सप्ताह का प्रवास प्रेरणा, शक्ति और आशा कासंचार करता था । यह दैवी घटना थी जो आज भी ईश्वरीय आस्था के प्रति प्रेरित करती रहती है ।

(4)

2000ई0 के दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में मेरे शरीर में भयंकर फोड़े होने शुरू हुए । जनवरी 2001 का अन्त आते-आते मैंने बिछावन पकड़ लिया । पखाना, पेशाव भी दूर जाकर करने की शक्ति नहीं रह गई । मैं भी अब जीवन की अन्तिम साँसे गिन रहा था । एक सुप्त ज्ञान जाग्रत हुआ । सोंचा कि तुलसी बाबा ने जब हनुमान चालीसा और हनुमान बाहक की रचना की । शरीरी पीड़ा से मुक्ति मिल गई तो मैंने भी संकटमोचन हनुमान लला की मन ही मन प्रार्थना की, कि अगर रोग पीड़ा से मुक्ति मिल गई तो भोजपुरी काव्य में आपकी लीलाओं को लिखूँगा ।

संकटमोचन हनुमान जी की कृपा हुई और संकल्पानुसार "संकट मोचन जय बजरंग" नामक खण्ड काव्य की रचना भोजपुरी में की ।

(5)

2004 में मोतिया बिन्द् का ऑपरेशन कराने काशी गया । अस्सी पर निःशुल्क ऑपरेशन का शिविर लगा था । पैसे नहीं थे । गया, लेकिन दूसरे दिन वह कैम्प कैंसिल हो गया । मैं मधुमेह का रोगी था । डॉ0 के.के. त्रिपाठी का (बी.एच.यू.) इलाज चल रहा था । हार्ड से हार्ड दवा और इन्सुलिन का प्रयोग हो रहा था । सुगर कम होने की बजाय बढ़ता जा रहा था । मेरा द्वितीय पौत्र बजरंग परेशान हो रहा था । घर लौट आया और कुछ दिन बाद पुनः गया । आचार्यों ने बताया की जब तक कालभैरव की पूजा नहीं होगी, वे काशी में किसी को टिकने नहीं देते ।

पूजा हुई और दूसरे दिन सुगर नार्मल हो गया, ऑपरेशन हो गया । यह है काशी और काशी-स्थित दिव्य-ज्योतियों का चमत्कार ।

जय काशी ! जय विश्वनाथ अविनाशी !! जय काशी वासी !!!

ॐ नमः शिवाय





अंजन जी की कृतियाँ (1969 से 2006 तक)

भोजपुरी :

1. कजरौटा (भोजपुरी काव्य) 1969
2. फुहार (भोजपुरी काव्य) 1970
3. ओहार (भो० + हि़न्दी) 1973
4. सँझवत (भोजपुरी काव्य) 1974
5. पनका (भोजपुरी काव्य) 1975
6. सनेश (भोजपुरी काव्य) 1976
7. कनखी (भोजपुरी काव्य) 1977
8. नवचा-नेह (भोजपुरी काव्य) 1979
9. अंजुरी (भोजपुरी काव्य) 1983
10. अंजन के लोकप्रिय गीत (भोजपुरी) 1983
11. अनमोल मिलन (भोजपुरी खण्ड काव्य) 1990
12. आपन बोली, आपन गीत (भोजपुरी) 1990
13. मनसायन (भोजपुरी काव्य) 1993
14. पोटली (भोजपुरी संग्रह) 1999
15. रउए-खातिर (भोजपुरी काव्य) 2002
16. संकट मोचन जय बजरंग (भोजपुरी खण्ड काव्य) 2004
17. हिलोर (भोजपुरी काव्य) 2004
18. दियरी बाती (भोजपुरी कहानियाँ) 2005 (प्रेस में)
19. अतवरिया (भोजपुरी उपन्यास) 2005 (प्रेस में)
20. खोंता (भोजपुरी प्रबन्ध) 2005 (प्रेस में)
21. चोख-चटकार (भोजपुरी) 2006
22. भक्ति गंगा (भोजपुरी) अप्रकाशित

हिन्दी :

23. गुच्छे अंगूर के (हिन्दी गीत) 1991
24. धुँध छा गई (हिन्दी गीत) 2004
25. देवी महाभागवत (हिन्दी-पद्यों में संक्षिप्त भावानुवाद) प्रेस में
26. आहत क्षण (हिन्दी काव्य) प्रेस में
27. शिवोऽहम् (हिन्दी पद्य, संक्षिप्त भावानुवाद)

सम्पादक मण्डल



आचार्य बजरंग कुमार चतुर्वेदी



निर्भय कुमार चतुर्वेदी



अभय कुमार चतुर्वेदी

C/o रविकान्त उपाध्याय

सभापति भवन, नरिया, (बी.एच.यू.)

वाराणसी (उ.प्र.)



कवि

श्री राधामोहन चौबे 'अंजन जी'